कैप्टन हमीद

कैप्टन हमीद

ओमीलाल इलाहाबादी

राष्ट्र भाषा प्रचारक
इलाहाबाद—३

• स्वत्वाधिकारी : श्रीमीलाल इलाहाबादी
• प्रकाशक : राष्ट्रभाषा प्रचारक
७२ बी. जीरोरोड इलाहाबाद—३
• मुद्रक : कैलाशगिरि, गायत्री प्रेस दारागंज प्रयाग
• संस्करण : प्रथम दिसम्बर १९६५

मूल्य : तीन रुपया पचास पैसा

एक

कच्छ के रन का इलाका भारत के एक राज्य गुजरात का भाग है जो पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त की सीमा को छूता है। यहाँ पर हर ओर रेत ही रेत है, या दलदल; न यहाँ कोई पैदावार हो सकती है और न यहाँ किसी प्रकार का उद्योग-धन्धा ही चलता है। परन्तु कुछ वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया कि इस इलाके में तेल का भण्डार हो सकता है; अर्थात् धरती को खोदा जाय तो उसके नीचे तेल निकल सकता है, जो आज के संसार में बड़ी ही महत्वपूर्ण वस्तु है।

अपनी आँखों देखी बात है, कि अरब में कुवैत का छोटा सा देश बिल्कुल रेगिस्तानी और बंजर था। वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि वहाँ तेल का बड़ा भारी भण्डार मौजूद है। चुनाँचे अमरीका ने अपना सहयोग दिया और देखते ही देखते वहाँ कुयें खुद गये, तेल निकालने और साफ करने के कारखाने लग गये और तेल बड़ी भारी मात्रा में निकलने लगा। कुवैत सरकार का भी इस तेल के मुनाफे में काफी भाग था, जो उसे फौरन ही मिलने लगा। पिछले चन्द वर्षों में इस देश ने बड़ी उन्नति की, बड़ी-बड़ी बिल्डिगें खड़ी हो गईं और इस देश के हाथ इतना धन लगा कि आज सारे संसार में यहाँ के लोगों की आमदनी सबसे अधिक, यानी जितनी आमदनी यहाँ के एक मनुष्य

को एक वर्ष में प्राप्त होती है, उतनी किसी भी देश के आदमी को नहीं होती। अमरीका जैसे धनी देश की प्रतिशत आमदनी कुवैत की आमदनी की बराबरी नहीं कर सकती।

यह सब बहुत अच्छा है, बहुत ठीक है, किसी को इस पर आपत्ति नहीं हो सकती। यह तो कुवैत वालों का सौभाग्य था कि उनके अपने देश में इतनी बड़ी मात्रा में तेल निकल आया, जिसके बारे में वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अभी और सौ वर्षों तक वहाँ से तेल भारी मात्रा में निकाला जा सकेगा। परन्तु प्रश्न यह है कि यदि यह तेल कुवैत वालों के अपने देश में न होकर उनकी सीमा के बाहर उनके पड़ोस वाले देश में होता तो क्या उनको इस बात का अधिकार था कि वे आगे बढ़ कर उस पर अपना अधिकार जमा लेते ? परन्तु जब पड़ोसी देश पाकिस्तान जैसा हो तो जो कुछ भी हो जाये सो कम है।

तेल के बारे में अभी पूरे निश्चय से तो कुछ भी नहीं कहा जा सकता लेकिन एक लोभी पड़ोसी को तो अन्धेरे में तीर चलाने में भी कुछ संकोच नहीं होता। जो तीर निशाने पर जा लगे तो ठीक, वरना तुक्का तो है ही।

इसीलिए एक रोज कच्छ के रन में पाकिस्तान की सेना ने धोखे से हमला कर दिया और भारत की शान्ति-नीति का फायदा उठाना चाहा।

इस इलाके की जो दशा है वह ऊपर बताई जा चुकी है। हमारी सरकार की दृष्टि में इस स्थान का कोई महत्व नहीं था, जिसका नतीजा यह निकला कि यहाँ हमारी कोई सेना भी नहीं थी। केवल डेढ़ सौ सिपाही थे जिन पर पाकिस्तान के पाँच ब्रिग्रेडों ने हमला बोल दिया। हमारे सिपाहियों पर अचानक ही यह मुसीबत आई। पाकिस्तान की

सेना के साथ-साथ काफी बड़ी संख्या में अमरीका के बने हुए पैटन टैंक भी थे और पाकिस्तानी सेना की संख्या भी साढ़े तीन हजार के लगभग थी। धोखेबाजी से किये गये इस आक्रमण के आगे डेढ़ सौ सिपाही कब तक टिक सकते थे ? फिर भी भारतीय सिपाहियों ने डटकर मुकाबला किया और वे फौजी नियमों के अनुसार लड़ते-लड़ते कदम पीछे हटाते गये, क्योंकि इतनी बड़ी सेना के आगे जमे रहने का अर्थ तो केवल यही था कि उन सिपाहियों को बिल्कुल ही बेकार मौत के मुँह में ढकेल दिया जाये, जिसका कुछ भी लाभ नहीं था।

इसीलिए भारतीय सेना पीछे हटती हुई सुरक्षित मोर्चों तक पहुँच गई। सारे देश में एक हलचल सी मच गई और जनता ने माँग की कि पाकिस्तानी सेना को हिन्दुस्तानी इलाके से फौरन ही निकाल बाहर किया जाय। चुनाँचे फौजों को आज्ञा दे दी गई कि वे मोर्चे सम्भाल तो लें परन्तु जवाबी हमला न करें, क्योंकि आपस में समझौते की बातचीत चलने लगी थी।

दो

पूना में उन दिनों भारतीय सेना के कुछ अफसर छुट्टी मनाने के लिए गये हुए थे। इनके नाम थे कैप्टन मेहरा, कैप्टन सिद्धू और कैप्टन हमीद। इनमें पहला हिन्दू, दूसरा सिख और तीसरा मुसलमान था। इन सबका प्रोग्राम केवल सैर करने का था। वे लोग पूना पहले पहुँच गये, परन्तु उनका एक मित्र कैप्टन जॉन, जो ईसाई था, पीछे बड़ौदा में रह गया था। वे चारों उन दिनों बड़ौदा में ही थे। उन चारों ने इकट्ठे ही छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र दिया था। बाकी सबको तो छुट्टी मिल गई, परन्तु कैप्टन जॉन को तीन दिन के लिए रुकना पड़ा, क्योंकि उसके जिम्मे एक जरूरी काम था जिसको निबटाने के लिए तीन दिन रुकना जरूरी था। चुनाँचे उसके तीनों मित्रों ने कहा कि हम पहले चले जाते हैं और वह काम को निबटाने के बाद पूना शहर में उनसे आ मिले। उनका प्रोग्राम मोटर-साइकिल से यात्रा करने का था। इनमें केवल कैप्टन मेहरा के पास मोटर-साइकिल नहीं थी, इसलिए जॉन ने अपनी मोटर-साइकिल उन्हें देकर कहा—'तुम लोग घूमते-घामते पूना पहुँचो और मैं बाद में रेलगाड़ी से वहाँ आ जाऊँगा।'

वे तीनों फौजी दोस्त मोटर-साइकिलों पर जरूरी सामान लाद कर

अपनी यात्रा के लिए चल दिये। रास्ते में वे कई जगहों पर उतर पड़ते, कभी आराम कर लेते, कभी रात गुजार लेते। इस तरह मौज मारते हुए वे पूना पहुँच गये। एक तरह से देखा जाय तो उनका असली प्रोग्राम पूना से ही शुरू होने वाला था। उनका इरादा था कि विजय-नगर के खण्डहर देखते हुए केरल और मैसूर की यात्रा करें। और इसी तरह कुछ और स्थानों की यात्रा करते हुए एक महीने के अन्दर-अन्दर बड़ौदा पहुँच जाँय। पूना के एक अच्छे से होटल में वे तीनों टिके हुए थे। उन्होंने जॉन को पहले से ही बता रखा था कि वे इसी होटल में ठहरेंगे। अब दूसरे ही दिन उसके वहाँ पहुँच जाने की सम्भावना थी।

अभी उनके पास बिताने के लिए चौबीस घण्टे थे। कोई काम उन्हें था नहीं, इसलिए कभी सिनेमा में घुस जाते, कभी किसी अच्छे होटल में जाकर डान्स-वान्स करते, और कुछ खा-पी लेते।

दूसरे दिन दो बजे के लगभग जॉन भी वहाँ आ पहुँचा। उसे देखते ही सबों ने खूब प्रसन्नता से उसका स्वागत किया।

फिर कैप्टन मेहरा बोले—'भाई जॉन हम तो डर रहे थे कि कहीं तुम किसी और कारण वहीं फँसे न रह जाओ।'

जॉन—'नहीं, फँसे रहने की तो कोई बात ही नहीं थी। मैंने फुर्सत पाई और सीधा इधर को भागा। वह तो कर्नल साहब ने मुझे विश्वास दिला दिया था कि इन तीन दिनों के काम के अलावा और कोई काम नहीं सौंपा जायगा।'

सिद्धू ने उसकी पीठ पर थपकी देते हुए कहा—'जाओ उस्ताद, कपड़े बदल डालो, आज तुम्हारे आने की खुशी में हमने एक जश्न मनाने का निश्चय कर रखा है। बीयर की ठण्डी बोतलें तैयार हैं।

बस तुम मैदान में ग्राम्रो तो बीयर का प्रोग्राम शुरू किया जाय।'

वे सभी जवान थे, अभी कुँवारे थे और फिर फौज के अफसर थे इसलिए उनका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा था और मन में बिल्कुल बेफिकरी थी।

जॉन कपड़े बदलने के लिए परदे की ओट में चला गया। कपड़े बदलते समय एकाएक चिल्ला कर बोला—'अरे हमीद।'

'हाँ भई'—हमीद ने उत्तर दिया।

'तुम्हारे चले आने के बाद तुम्हारे नाम की एक चिट्ठी आई थी जो मैं अपने साथ लेता आया हूँ'—जॉन ने कहा।

इतना कहकर जॉन ने अपनी जेब में से हल्के गुलाबी रंग का एक लिफाफा निकाला और उसे स्क्रीन के ऊपर से ही फेंक दिया। हमीद ने लिफाफा उठाया तो लिखावट से ही पहचान गया कि यह चिट्ठी शकीला की थी। शकीला उसके मामू की लड़की थी। वे दोनों बचपन में एक साथ ही रहे, इकट्ठे ही बड़े हुए और जब सैनिक शिक्षा पाने के लिए उसे अलीगढ़ छोड़ना पड़ा तो शकीला बहुत रोई थी। जब तक वे दोनों इकट्ठे रहे तो उन्हें कुछ पता नहीं चला, परन्तु जब एक दूसरे से बिछुड़ना पड़ा तो उन्हें महसूस हुआ कि वे एक दूसरे को कितना चाहते थे। एक बार बाहर जा कर कुछ महीनों के बाद जब हमीद अलीगढ़ लौटा तो उसे अलीगढ़ की केवल एक ही बात याद थी और वह थी शकीला। जब वे दोनों मिले थे तो उन दोनों ने महसूस किया कि जीवन-साथी बने बिना उनका गुजारा नहीं हो सकता। हमीद ने महसूस किया कि वह शकीला के सिवा किसी और लड़की को अपने दिल में स्थान देने के लिए तैयार नहीं था। इसी तरह शकीला ने महसूस किया कि यदि हमीद के सिवा उसकी किसी और से शादी की बात

चली तो वह आत्महत्या कर लेगी। उस समय उन दोनों ने यही तय किया कि अभी चुप रहना ही ठीक है, और फिर किसी उचित मौके पर हमीद अपनी बहन या माँ से इसका जिकर करेगा। फौज में होने के कारण हमीद चौबीस वर्ष पूरा करने से पहले शादी नहीं कर सकता था। यह बहुत भारी अड़चन थी, परन्तु इसके साथ ही हमीद को इस बात का भी विश्वास था कि उनकी शादी में और कोई अड़चन पैदा नहीं हो सकती थी, क्योंकि उसके घर के लोग शकीला को बहुत चाहते थे, और उसके मामू और मामी उसे पसन्द करते थे। इसलिए उसे विश्वास था कि जब यह बात चलेगी तो उनका काम बन जायेगा। इसीलिए उसके मन में ज्यादा घबराहट नहीं थी।

हमीद ने लिफाफा खोला और पत्र निकाल कर उसे पढ़ने के लिए बड़ी खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। पत्र में लिखा था—

'मेरे सरताज,

मुझे आपके घर से पता चला था कि आप जल्दी ही छुट्टी ले रहे हैं। बाद में यह पता चला कि आप इन छुट्टियों में अलीगढ़ नहीं आ रहे हैं, बल्कि अपने दोस्तों के साथ कहीं सैर-सपाटे के लिए जा रहे हैं। मुझे इस बात की आपसे उम्मीद नहीं थी। मेरा ख्याल था कि जिस तरह मैं आपके बगैर तड़पती रहती हूँ, उसी तरह आपको भी मुझसे दूर रहकर बेचैनी रहती होगी। परन्तु मेरा यह ख्याल गलत निकला। यदि गलत न होता तो आप कहीं बाहर जाने की न सोचते। आप छुट्टियों में भागे-भागे सीधे मेरे पास पहुँचते।

खैर छोड़िये इन बातों को, मर्दों से वफा की उम्मीद रखना ही बेकार है। पहले तो दूसरों से सुना था कि मर्द बेवफा होते हैं परन्तु आज अपनी आँखों से देख लिया। शायद आप सोचें कि मैंने इतनी सी

शिकायत करने के लिए आपको यह चिट्ठी लिखी। जी नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। मैं भी नहीं चाहती थी कि आपको चिट्ठी लिखकर आपके रंग में भंग डालूं, क्योंकि जो मजा आपको अपने दोस्तों के साथ रहकर आता होगा, वह मेरे साथ रहकर कैसे आ सकता है। लेकिन न चाहते हुए भी मुझे यह चिट्ठी लिखनी पड़ रही है। सोचा तो यह था कि जब आप ही को हमारी कोई फिक्र नहीं तो फिर हम कहाँ तक आपके आगे अपनी नाक रगड़ते रहें, लेकिन खुदा को यही मंजूर था कि आपके आगे नाक घिसूँ। इसीलिए आपको यह चिट्ठी लिखने बैठी हूँ।

अभी तक मैं बेफिक्र थी कि हम दोनों के रास्ते में कोई अड़चन पैदा नहीं होगी। लेकिन मुझे एक रोज पता चला कि हमारे रास्ते में भी काँटे हैं। मैंने अब्बा को अम्मी से बातें करते हुए सुन लिया जिससे मैंने अन्दाजा लगाया कि काफी बड़ी मुसीबत हम दोनों पर आ सकती है। हमारा मामला इतना सीधा नहीं जितना कि हम दोनों समझते रहे हैं। बल्कि अब्बा की बातें सुनकर मुझे एक बार तो ऐसा लगा कि हमारे लिए सिवा निराशा के और कोई चारा नहीं है।

अब्बा की क्या बातें मैंने सुनीं जिनसे मेरे दिल में इतना डर और नाउम्मीदी पैदा हुई; यह सब बातें चिट्ठी में लिखना ठीक नहीं। आप मेरे पास आयें तो मैं सब बातें आपको बताऊँ। सिर्फ चिट्ठी लिख देने से तो आप न जाने क्या जवाब दें। ज्यादा से ज्यादा आप मुझे तसल्ली देने की कोशिश करेंगे। लेकिन उससे मेरी तसल्ली नहीं होगी। आपको यह बात भी अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि यह मामला ऐसा नहीं जिसको इतनी आसानी से टाला जा सके। यह तो हम दोनों की जिन्दगी का सवाल है इसलिए मैं चाहती हूँ कि आप छुट्टियों में यहीं चले आयें ताकि जो अड़चन हमारे सामने खड़ी हो गई है उसका आप

कोई न कोई ठीक इन्तजाम कर सकें। अगर आपने टाल-मटोल करने की कोशिश की तो मैं यह समझने पर मजबूर हो जाऊँगी कि आपको मुझसे बिल्कुल कोई मोहब्बत नहीं, बल्कि अब तक आप मुझसे खिलवाड़ ही करते रहे हैं।

बातें तो बहुत सी लिखना चाहती थी लेकिन चिट्ठी पहले ही काफी लम्बी हो गई है इसलिए बाकी बातें मिलने पर ही हो सकेंगी। इस वक्त तो आपसे बार-बार यही ताकीद है कि आप जल्द से जल्द यहाँ पहुँचने की कोशिश करें, वरना कहीं ऐसा न हो कि आप उम्र भर के लिए अपनी शकीला को खो दें, और आपकी यह बेचारी शकीला सारी उम्र खून के आँसू रोती रहे।

हमेशा आपकी,

शकीला'

कैप्टन हमीद ने पत्र को दूसरी बार बड़े ध्यान से पढ़ा और फिर अपने जेब में डाल लिया।

कैप्टन जॉन गुसलखाने में घुसा नहाता रहा और अपनी बेढंगी आवाज में किसी अंग्रेजी गीत का बोल गाता रहा। बाकी मित्र उसका स्वर सुन-सुन कर हँसते रहे। कैप्टन सिद्धू ने कहा—'बियर की दो बोतलें तो निकालकर रखो। जॉन को प्यास लगी होगी और वह बिना बियर के बुझ नहीं सकती।'

सब ने कहकहा लगाया और मेहरा बोले—'ठीक कहते हो।'

फिर सब चिल्ला-चिल्ला कर जॉन से कहने लगे कि वह जल्दी से बाहर निकल आये, और गाना-बजाना फिर भी होता रहेगा।

थोड़ी ही देर में सब दोस्त हँसी-खुशी बातें करते हुए अपनी यात्रा का प्रोग्राम बनाते रहे। उन्होंने सड़कों वाला नक्शा फैला कर सामने

रखा और अपना रास्ता निश्चित करने लगे कि किस स्थान के लिए किस सड़क से जाना होगा। मोटर-साइकिलें तीन थीं इसलिए तय हुआ कि दो मित्र एक ही मोटर-साइकिल पर बैठ जायँ, और दूसरी दो मोटर-साइकिलों के पीछे आवश्यक सामान लाद दिया जाय।

यह सब प्रोग्राम बन गया तो एकाएक मेहरा ने हमीद की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—'क्या बात है यार, तुम कुछ कटे-कटे से नजर आते हो ?'

हमीद ने चौंक कर सब की ओर देखा और फिर अपने बालों पर हाथ फेरते हुए बोला—'नहीं तो, कोई खास बात तो नहीं।'

अब सिद्धू बोल उठा—'मेहरा ठीक कहता है। जब से तुमने वह चिट्ठी पढ़ी है तभी से न जाने किस गम में डूबे हुए हो ?'

जॉन ने भी मित्रों की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा—'देखो, दिल की बात दिल में नहीं रखा करते, मुमकिन है कि तुम्हारी समस्या ऐसी हो जिसमें हम भी कुछ सहायता कर सकते हों।'

हमीद ने भी यह बात अपने मित्रों से छिपानी उचित नहीं समझी। उसने सारी बात कह सुनाई। सिद्धू ने उसकी पीठ पर थपकी देते हुए कहा—'ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं। हो सकता है कि शकीला ने तुमसे मिलने का यह बहाना बनाया हो ?'

हमीद बोला—'नहीं सिद्धू, शकीला ऐसी लड़की नहीं है। अगर कोई खास बात न होती तो वह इस तरह चिट्ठी न लिखती।'

कैप्टन जॉन बोला—'तो भई इतना परेशान क्यों होते हो ? तुम उसे चिट्ठी लिख दो कि मैं छुट्टियों का अन्तिम सप्ताह अलीगढ़ में ही बिताऊँगा। मेरी भी एक महीने की छुट्टी तो मंजूर नहीं हुई, केवल तीन हफ्ते की हुई है। फिर मुझे वापस ड्यूटी पर जाना होगा।'

सिद्धू बोला—'चलो यह प्रोग्राम भी ठीक है, तुम ड्यूटी पर चले जाओगे, हमीद अलीगढ़। रह गये मेहरा और मैं; वे भी अपने-अपने घर का चक्कर लगा आयेंगे। घर वालों की भी तो शिकायत रहती है कि छुट्टियाँ घर पर क्यों नहीं गुजारते।'

सिद्धू का यह सुझाव सबने स्वीकार कर लिया, क्योंकि इसमें फायदा यह था कि सैर की सैर भी हो जायगी और घर वालों की शिकायत भी दूर हो सकेगी।

चारों अफसर ड्यूटी से आ रहे थे। सेना का जीवन तो बिल्कुल भिन्न होता है। समय पर सोना, निश्चित समय पर जागना, निश्चित समय पर दफ्तर का काम करना और निश्चित समय पर ही खाना-पीना और आराम करना। अब वे बिल्कुल स्वतन्त्र थे, कोई पाबन्दी नहीं थी, इसलिए यह जीवन बड़ा अजीब सा लग रहा था। उनकी समझ में नहीं आता था कि वे क्या करें और क्या न करें। इस समय वे बिल्कुल स्कूल के विद्यार्थियों की तरह उछल रहे थे। किसी एक को कोई बात सूझती तो सभी वही करने लगते और कभी कोई दूसरा सुझाव मिलता तो वे वही कुछ करने लगते।

दूसरे दिन उन्हें अपनी यात्रा पर चल देना था, इसलिए शाम को चाय-नाश्ता कर लेने के बाद उन्होंने प्रोग्राम पक्का करने की ठानी। पूना में उन्हें कुछ वस्तुएँ भी खरीदनी थीं जिनकी उन्हें जरूरत पड़ सकती थी।

हमीद ने कहा—'अच्छा भई तुम लोग प्रोग्राम बनाओ, मैं शकीला को चिट्ठी लिख दूँ।'

सबने उसकी हाँ में हाँ मिलाते हुए उसे पत्र लिखने की अनुमति दे दी।

हमीद खिड़की के पास रखी हुई मेज के निकट पहुँचा और राइटिंग पैड सामने रखकर कुर्सी पर बैठ गया। दो मिनट तक कुछ सोचता रहा, फिर उसने पत्र लिखना शुरू किया—

'डियर शकीला,

तुम्हारी चिट्ठी का जवाब तुम्हें कुछ देर से मिलेगा, उसकी वजह यह है कि जब तुम्हारी चिट्ठी पहुँची तो मैं बड़ौदा में नहीं था। मेरे एक मित्र जो बाद में हमें यहाँ पूना में आकर मिले हैं वह चिट्ठी लेते आये, और अब उसे पढ़ने के बाद मैं तुम्हें उसका जवाब दे रहा हूँ।

मुझे तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर काफी परेशानी हुई। मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर ऐसी क्या बात हो गई कि तुम इस तरह घबरा उठीं। मैं तुम पर कोई दोष नहीं मढ़ना चाहता, क्योंकि मैं समझता हूँ कि कुछ कारण तो जरूर होगा, जिससे तुम्हें परेशानी हो रही है।

तुमने कोई ऐसा इशारा भी नहीं दिया कि जिससे मुझे पता चल जाता कि आखिर किस तरह की रुकावट पैदा हो गई है। तुमने लिखा है कि वह बात चिट्ठी में लिखनी ठीक नहीं। तो भी कुछ इशारा ही कर देती।

मुझे मालूम तो होता कि क्या नई अड़चन आने वाली है तो मैं आगे घूमने का प्रोग्राम न बनाता। घूमने का प्रोग्राम भी मुझ अकेले का नहीं है वरना मैं फौरन ही अलीगढ़ पहुँच जाता। चूँकि हम सब का प्रोग्राम बन चुका था और हम लोग पूना तक पहुँच भी चुके हैं इस लिए अब मेरा अपने दोस्तों को छोड़ देना अच्छा नहीं लगता।

साथ ही तुम यह भी न समझना कि मैं तुम्हें टालने की कोशिश कर रहा हूँ। मैंने अपने दोस्तों से इस बात का जिक्र कर दिया है कि घर में कुछ ऐसी परिस्थिति हो गई है जिसके कारण मेरा वहाँ जाना

आवश्यक है। इसीलिए हम सब ने अपना प्रोग्राम बदल लिया है। वह यह कि पहले तीन सप्ताह तो हम घूमेंगे, लेकिन आखिरी हफ्ता अपने-अपने घर में बितायेंगे। इसलिए माफ करना कि मैं एकदम तुम्हारे पास नहीं पहुँच सकूँगा, लेकिन अगले तीन हफ्तों के अन्दर-अन्दर अलीगढ़ जरूर पहुँच जाऊँगा।

हो सके तो मुझे एक पत्र लिखना। मैं अगले स्थान का पता लिख दूँगा, तुम उसी पते पर खत भेजना। मुझे इतनी उम्मीद है कि जिस अड़चन की तरफ तुमने इशारा किया है वह केवल अड़चन ही है। मुझे इतना जरूर लिख देना कि किसी से तुम्हारे रिश्ते की बात तो पक्की नहीं होने जा रही है। वैसे मुझे उम्मीद है कि इतनी जल्दी तुम्हारी शादी का कोई प्रोग्राम बन नहीं सकता, फिर भी तुम लिख दोगी तो मेरी तसल्ली हो जायगी।

लो जल्दी में, तुम्हारी पहली शिकायत का जवाब देना ही भूल गया। तुमने मर्दों के विरूद्ध ऐसी बातें लिखी हैं जो कम से कम मेरे मन में नहीं हैं। यह बात ठीक है कि मैंने दोस्तों के साथ घूमने का प्रोग्राम बनाया, लेकिन यह किसी मजबूरी के कारण था। तुमको इससे यह नहीं समझना चाहिए कि मेरे मन में तुम्हारे लिए प्रेम नहीं है। ऐसा तो तुम्हें स्वप्न में भी नहीं सोचना चाहिए।

तुम्हारी चिट्ठी के इन्तजार में।

केवल तुम्हारा,

हमीद'

पत्र समाप्त करके हमीद ने कमरे में लगी घण्टी का बटन दबा दिया और थोड़ी देर बाद जब नौकर आया तो उसने वह लिफाफा लेटर बाक्स में डालने के लिए दे दिया।

उस शाम चारो दोस्त पूना के बाजारों में घूम-फिर कर जरूरत की चीजें खरीदते रहे। रात को जल्दी सो गये और दूसरे दिन सूर्य निकलने से पहले मोटर-साइकिलों पर सवार हो कर चल दिये।

तीन

उनकी यात्रा बड़ी सफल रही । सारे दिन हँसी-खुशी में व्यतीत हो गये, परन्तु हमीद के मन की गहराई में हल्की सी उलझन रही कि न जाने शकीला और उसके भविष्य को खराब करने वाली कौन सी मुसीबत खड़ी हो गई है । उसे शकीला का दूसरा पत्र भी मिला जिसमें उसने लिखा था कि जहाँ तक वह जानती थी, उसके रिश्ते की बात अभी किसी से नहीं चल रही थी ।

यदि शकीला का यह पत्र न आता तो हमीद को और ज्यादा उलझन रहती । फिर भी उसने यह तो महसूस कर ही लिया था कि समस्या गम्भीर थी ।

आखिर वह दिन भी आ गया जब वह अलीगढ़ जाने वाली गाड़ी पर सवार हुआ तो उसकी बेचैनी और बढ़ी, क्योंकि अन्तिम पत्र के बाद शकीला ने दस दिन से कोई पत्र नहीं भेजा था । वह चाहती भी तो ऐसा नहीं कर सकती थी, क्योंकि हमीद ने उसे लिख दिया था कि अब वे न जाने कहाँ टिके या न टिके इसलिए उसका पत्र लिखना बेकार होगा ।

गाड़ी में बैठे-बैठे हमीद यही महसूस करता था कि काश गाड़ी

श्रौर भी श्रधिक गति से चल सकती, ताकि वह जल्दी से जल्दी शकीला के पास पहुँच जाता।

जब गाड़ी श्रलीगढ़ के स्टेशन पर रुकी तो शाम हो चुकी थी। श्रौर श्रंधेरा छा गया था। उसने घर वालों को श्रपने यहाँ श्राने की सूचना तो दी थी। लेकिन यह नहीं लिखा था कि वह किस दिन किस गाड़ी से श्रायेगा। चुनाँचे स्टेशन पर स्वागत करने के लिए कोई नहीं श्राया था। बिस्तर सहित उसने श्रपना श्रधिक सामान जॉन के हाथ बड़ौदा भेज दिया था। इस समय उसके पास एक हल्का सा सूटकेश था जिसमें उसके पहनने के थोड़े-बहुत कपड़े श्रौर दूसरा छोटा-मोटा जरूरी सामान था।

उसका सूटकेश कुली ने उठा लिया श्रौर वह श्रपनी छड़ी घुमाता हुश्रा स्टेशन से बाहर निकला एक बार तो उसका जी चाहा कि सीधा मामू के घर पहुँच जाय, श्राखिर मामू के घर जाने में हर्ज भी क्या था। परन्तु दूसरे ही क्षण उसने श्रपने मन से यह बात निकाल दी। क्योंकि इस तरह यह बड़ा श्रजीब सा लगता कि वह सीधा घर जाने के बजाय मामू के पास क्यों पहुँच गया? श्रौर फिर यह भी तो श्रसम्भव था कि जाते ही उसे शकीला से बातचीत करने का मौका मिल जाय।

जब वह श्रपने घर पर पहुँचा तो पता चला कि सिवा उसकी बहन जुबेदा के घर में श्रौर कोई नहीं था। जुबेदा उसे देखकर बहुत खुश हुई श्रौर बोली—'हमीद, श्रच्छा ही हुश्रा जो तुम श्रा गये।'

हमीद ने चारपाई पर बैठ कर बूटों के तश्में खोलते हुए पूछा—'लेकिन श्रापा, घर के सब लोग कहाँ गये हैं?'

'दावत खाने ।'

'अरे तो आप क्यों नहीं गईं ?'

'मुझे मालूम था कि तुम आने वाले हो। इसलिए घर पर ही रही।'

जुबेदा यह कह कर मुस्कराने लगी। वह बड़ी बहन थी इसलिए भाई का नाम लेकर बुलाती थी और हमीद उसे आपा कहता था। हमीद बोला—'मुझे चकमा मत दीजिये आपा। जो सच बात हो सो बताइये।'

'मेरा हाजमा ठीक नहीं था। मैंने सोचा कि दावत में और भी बदहजमी हो जायगी इसलिए मैं नहीं गई। कहो तुम अच्छे रहे? भई यह क्या हरकत है कि छुट्टियों में तुम घर आने के बजाय इधर-उधर भाग जाते हो ?'

'क्या कहूँ, आपा, बस समझ लो कि मैं फँस गया था।'

जुबेदा ने शरारत से कहा—'क्या कोई लड़की का मामला तो नहीं ? मैं जानती हूँ कि तुम लोग बड़े नॉटी होते हो।'

हमीद हँसा—'आपा तुम तो जानती ही हो कि जिस लड़की का मामला है वह यहीं मौजूद है।'

'शकीला की बात कर रहे हो ?'

इतना सुनकर हमीद ने बहन की ओर नजर उठाकर देखा कि उसके चेहरे से कोई खास बात तो जाहिर नहीं होती। लेकिन जुबेदा के चेहरे पर सचमुच ही कोई खास बात नहीं थी। उसने बहन के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि उसने महसूस किया कि उत्तर देने की कोई खास जरूरत भी नहीं थी, वह सभी कुछ तो जानती

थी । उसने मन में अनुमान लगाया कि लगता है कि शकीला ने जुबेदा से कुछ नहीं कहा, वरना उसकी बहन आते ही उसे यह बात बताती ।

हमीद ने सोचा कि जब शकीला ने ही कुछ नहीं बताया तो फिर उसे भी कुछ कहने की जरूरत नहीं । हाँ शकीला से मुलाकात हो जाने के बाद अगर उचित हुआ तो आपा से बात करूँगा ।

जुबेदा ने उठते हुए कहा —'बोलो पहले चाय पियोगे या खाना खाओगे ?'

'चाय पी के आया हूँ, मेरा मतलब है गाड़ी में ही चाय पी ली थी, थोड़ा नाश्ता भी कर लिया था लेकिन एक कप चाय और मिल जाय तो इसमें हर्ज ही क्या है ?'

'हाँ वह तो मैं जानती ही हूँ, तुम चाय के बड़े शौकीन हो ।'

हमीद हँसा, फिर एकाएक बोला—'आपा तुम खास मेरे लिए खाना पकाओगी, इसकी क्या जरूरत है ?'

'नहीं नहीं, मैं भी तो खाऊँगी ।'

'पर आपा ! तुम तो कहती थीं कि मेरे पेट में गड़बड़ है ।'

'बस इतनी ही गड़बड़ थी कि मैं दावत से बचना चाहती थी, तुम तो जानते ही हो कि दावत में कुछ ज्यादा ही खाना पड़ जाता है । हाँ, अगर मैं अकेली होती तो बिना खाना खाये सो जाती । इसीलिए तो नौकर को भी छुट्टी दे दी । अब तो हम-तुम दोनों बैठकर खाना खायेंगे । खाने के साथ तुम्हारी बातें भी सुनूँगी—कहाँ-कहाँ गये, किस-किस से मिले, क्या-क्या शरारतें कीं ? सबसे बड़ी बात तो यह कि तुम्हें एकाएक घर लौटने का ख्याल कैसे आ गया ?'

'आपा की मुहब्बत खींच लाई ।'

'अरे छोड़ो, आपा को कौन पूछता है ? मैं जानती हूँ कि तुम्हें किसकी मुहब्बत खींच लाई है ।'

हमीद मुस्करा दिया, और फिर एकदम बहन की ओर बढ़कर उसका हाथ थामते हुए बोला—'इधर आओ आपा, मुझे तुमसे कुछ बातें कहनी है ।'

'भई ! अभी बातें करने बैठ गई तो खाना बनाने का काम धरा रह जायगा । मैं जानती हूँ कि मुहब्बत करने वालों की बातें बड़ी गन्दी होती है ।'

हमीद ने कहकहा लगाकर हाथ छोड़ दिया और बोला—'बात तो ठीक कहती हो । अच्छा खाना पका ही लो क्योंकि जब इतने दिन बिना किसी से बात किये गुजर गये तो अब थोड़ा सा वक्त गुजारना क्या मुश्किल है ?'

रसोईघर की ओर जाते-जाते जुबेदा क्षण भर को रुकी और घूम कर भाई की ओर देखते हुई बोली—'अरे हाँ, मैं यह बताना तो भूल गई कि तुम्हारी कुछ चिट्ठियाँ आई पड़ी हैं ।'

'जरूर आई होंगी । मैंने काफी दिनों से सबको घर ही का पता दे रक्खा था ।'

जुबेदा ने एक कोने में रखी अखरोट की लकड़ी की छोटी सी आलमारी खोली और कुछ चिट्ठियाँ निकालकर भाई की ओर बढ़ाई और खुद रसोई घर की ओर चली गई ।

हमीद सिर के नीचे दो तकिये रखकर लेट गया, और लिफाफे में अंगुलियाँ डाल-डाल कर उन्हें फाड़ने लगा । सब चिट्ठियाँ यूं ही जानकारों की थीं वह उन्हें सरसरी नजर से पढ़ता रहा और फिर सब को तकिये के नीचे दबा कर छत की ओर टकटकी बाँधकर देखने लगा ।

दस मिनट में चाय का प्याला आ गया। जुबेदा खाना तैयार करने के लिए चली गई और हमीद चाय के छोटे-छोटे घूँट भरते हुए शकीला के बारे में सोचने लगा।

जब वे दोनों, भाई-बहन, खाना खाने बैठे तो हमीद ने कहा—'क्यों आपा, अब तो मैं तुमसे कुछ-न-कुछ बात कर सकता हूँ।'

'हाँ भइया जरूर कहो। मैं जानती हूँ कि इतनी देर से तुम कितने बेचैन हो रहे हो। हाँ, तो क्या जानना चाहते हो शकीला के बारे में ?'

'बस आप भी तो हद कर देती हैं।'

जुबेदा पुचकार कर बोली—'नहीं-नहीं; शरमाया नहीं करते भइया; जिसने की शरम उसके फूटे करम !'

'अच्छा, अब तो बड़ी बहन का कहना मानना ही पड़ेगा।'

'हाँ हाँ बरखुरदार भाई तुम्हारी तरह ही तो होते हैं।'

दोनों ने कहकहा लगाया। हमीद बोला—'तो सुनो आपा, मैं शकीला की चिट्ठी पा कर ही यहाँ आया हूँ।'

'तुमने यह बताने की तकलीफ ख्वामख्वाह की। हम सब कुछ जानते हैं बच्चा। अच्छा, अब आगे बोलो।'

अब हमीद सोचने लगा कि अच्छा यही होगा कि वह आपा को सब कुछ बता दे, एक तो इसलिए कि वह उसे बहुत चाहती थी, दूसरे इसलिए कि आगे शायद उनकी मदद की जरूरत पड़े। यदि उन्हें पहले ही से सब कुछ मालूम होगा, तो वह हर प्रकार की राय भी दे सकेंगी और सहायता भी कर सकेंगी। यह तय करके वह फिर बोला—'आपा मैं परेशान हूँ।'

'वजह ?'

'बात यह है कि मैं शकीला से शादी करना चाहता हूँ। शायद

आप समझती थीं कि हम दोनों का सम्बन्ध केवल बचपन का लगाव है, लेकिन आप यह ख्याल दिल से निकाल दें। मैं सचमुच ही शकीला के साथ ब्याह करना चाहता हूँ।'

जुबेदा ने गम्भीर स्वर में कहा—'यह सुनकर मुझे हैरानी तो नहीं हुई। लेकिन.........!'

'लेकिन क्या ?'

'हमीद, तुम खुद पढ़े-लिखे और समझदार हो, शादी-ब्याह तुम्हारा निजी मामला है, मैं इसमें टाँग अड़ाना नहीं चाहती, क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम अपनी जिन्दगी की इस समस्या को अच्छी तरह हल कर पाओगे हाँ, मैं इतनी सी राय जरूर देना चाहती हूँ कि जिससे बचपन में प्यार हो जाता है, यह जरूरी नहीं कि बड़े होकर वह तुम्हारी सारी जरूरतें पूरी कर सके। मेरे कहने का मतलब यह है कि अब तुम फौज में एक अफसर हो, और तुम्हें ऐसी ही बीबी चाहिए जो तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी जरूरतें पूरी कर सके। तुम शकीला को पहले तो अच्छी तरह जाँच-पड़ताल लो कि वह उस सोसाइटी में रहने के काबिल है भी या नहीं।'

'आपा, आपने बात बड़ी समझदारी की कही है, मैं इसे मानता हूँ। यह ठीक है कि हमें एक खास प्रकार की बीबी चाहिए जो ऊँची सोसाइटी में घूम-फिर सके। पहली नज़र से देखें तो शकीला इस काबिल मालूम नहीं होती। लेकिन इसकी यह वजह नहीं है कि मूल-रूप में उसमें कोई खराबी है। उसकी शकल अच्छी है, कद अच्छा है, कपड़े पहनती है तो उसे सज जाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उसमें अक्ल की भी कमी नहीं है। इसीलिए मुझे यकीन है कि शकीला को मैं बहुत कुछ सिखा सकता हूँ। भले घर की लड़कियाँ कुम्हार की ढीली

और गुंधी हुई मिट्टी की तरह होती हैं। उनमें अहंकार नहीं होता, और उनके अन्दर अपने शौहर के ख्यालों के मुताबिक अपने आपको ढालने की एक तीव्र इच्छा होती है। यही स्त्री की महानता है कि वह अपने आपको ढालकर अपने जीवन-साथी के व्यक्तित्व को पूरा कर देती है। अपने मर्द को अधूरे से पूरा करने में ही औरत को सच्चे और बहुत ही गहरे आनन्द का अनुभव होता है। खुदा ने उसे यही काम करने के लिए संसार में भेजा है। जब औरत यह काम नहीं कर पाती तो उसका जीवन उजड़ा-उजड़ा रहता है। इसीलिए हम देखते हैं कि औरतें अपने मर्दों का गुस्सा सहती हैं, उनसे मार खाती हैं, लेकिन उनका साथ नहीं छोड़तीं। इसमें औरत की कमजोरी या हार नहीं होती, बल्कि इसी तरह तो वह विजय प्राप्त करती हैं। ऐसी ही औरतें देवियाँ कहलाती हैं और मुझे पूरा यकीन है कि शकीला ऐसी ही एक देवी है।'

जब तक हमीद बात करता रहा, आपा उसे बड़ी गहरी नजर से देखती रहीं। जब वह बात समाप्त कर चुका तो वह धीरे से बोलीं—'हमीद भाई क्या बातें कही हैं तुमने। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि तुम इतनी गहरी बातें कहोगे, अगर तुम्हारे शकीला के बारे में यह ख्याल हैं तो फिर मैं मना नहीं करूँगी।'

'लेकिन इसके अलावा कुछ और बात भी तो होती है। देखिये न आपा, मैं मर्दों की इस आदत को भी बुरा समझता हूँ कि वह भोली-भाली लड़कियों से झूठा प्यार जताकर उनसे अपने सम्बन्ध को सीमा से भी आगे बढ़ा लेते हैं और बाद में धोखा दे जाते हैं। मेरे सम्बन्ध भी बहुत दूर तक जा चुके हैं, अब मेरा पीछे कदम हटाना बड़ी ही कमीनगी की बात होगी। मैं शकीला को कभी धोखा नहीं दूँगा।'

'अब मैं क्या कह सकती हूँ, सिवा इसके कि तुम्हारे जैसा भाई

पाकर मैं अपना सिर बहुत ऊँचा समझती हूँ। अब तो मेरा कहना सिर्फ यही है कि तुम बेशक शकीला को ही अपनाओ और मेरी दुआ भी यही है कि खुदा तुम दोनों को सदा खुश रखे।'

हमीद मुस्करा कर बोला—'आपा तुमने जो यह दुआ दी है, मैं इसके लिए तुम्हारा सच्चे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ, लेकिन अभी तो हमारी गाड़ी दलदल में फँस गई है।'

'दलदल में कैसे फँसी है? मैं तो नहीं समझती कि इसकी कोई वजह हो सकती है। जहाँ तक हमारे अब्बा और अम्मी का सवाल है, वह तो इस मामले में कुछ भी नहीं बोलेंगे। जो लड़की तुम पसन्द कर लोगे वह उसी से तुम्हारी शादी कर देंगे। रहे लड़की वाले। तो मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें तुमसे अच्छा लड़का कौन सा मिल सकता है। मेरे ख्याल में अगर वह तुम्हारे सिवा किसी और अफसर को अपना दामाद बनाना भी चाहें तो उन्हें कामयाबी नहीं मिल सकती। तुम्हारी बात और है क्योंकि तुम लड़की को जानते हो और तुम्हें इस बात का विश्वास है कि तुम उसकी खामियों को दूर कर सकोगे।'

हमीद ने गहरी सोच में डूबे-डूबे एक सिगरेट निकाल कर मुँह में दाबा और उसे जला कर धुआँ उड़ाना शुरू कर दिया। फिर बोला—'अड़चन क्या है इसका मुझे खुद भी पता नहीं शकीला ने सिर्फ यह लिखा था कि वह बात ऐसी नहीं है कि जिसका चिट्ठी में ज़िकर किया जा सके, वह बात तो जबानी बताने की ही है।'

'तो ठीक है, तुम उससे मिलकर बातें कर लो।'

'आपा, आपको मेरी कुछ मदद करनी पड़ेगी।'

'क्या?'

'कल शकीला को बुला लीजिये।'

'अरे तो यह क्या मुश्किल है। मैं सुबह ही किसी को भेजकर उसे चाय पर बुला लूंगी।'

'जाने को तो मैं खुद भी चला जाता लेकिन वहाँ शकीला से बात-चीत करने का मौका नहीं मिल सकेगा।'

'तुम ठीक कहते हो।'

यह जरूरी बातचीत हो चुकी, तो वे दोनों भाई-बहन इधर-उधर की बातें करते रहे। इतने में ही घर के दूसरे लोग भी दावत से लौट आये और हमीद को एकाएक वहाँ पाकर बड़े खुश हुए। अक्सर ऐसा होता है कि जब कुछ दोस्तों या रिश्तेदारों का बहुत दिनों बाद मिलाप होता है तो खूब बातें चलती हैं। इसी का नतीजा था कि एक बजे तक घर का कोई भी आदमी सोया नहीं।

जब हमीद सोया तो उसे बहुत ही गहरी नींद आयी। परन्तु अनायास ही उसने महसूस किया कि उसे कोई जगा रहा था। सुबह के पाँच बजे थे लेकिन हमीद को ऐसा लग रहा था जैसे उसे एक ही घण्टे में उठा दिया गया हो। उसकी माँ उस पर झुकी हुई उसे जगाने की कोशिश कर रही थी। हमीद ने एकदम आँखें खोलकर पूछा—'क्या है अम्मी ?'

'तुम्हारा तार आया है बेटा।'

यह कहते-कहते अम्मी ने तार का लिफाफा उसकी ओर बढ़ा दिया। हमीद ने अधलेटे होकर अपने सिरहाने के निकट तिपाई पर रखे हुए टेबिल लैम्प को जलाया और लिफाफा फाड़कर तार पढ़ने लगा।

अचानक तार आने की खबर पाकर घर के दूसरे लोग भी वहाँ आ गये। वे सब जानना चाहते थे कि वह तार कहाँ से आया था और उसमें क्या लिखा था।

तार पढ़कर हमीद ने कहा—'हमारी छुट्टी कैन्सिल हो गई है, इसलिए मुझे फौरन वापस जाना होगा।'

यह सुनकर घर के लोग कुछ उदास हो गये, लेकिन इतना तो वे भी समझते थे कि फौजी अफसर का जीवन ऐसा ही होता है। अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही एक फौजी का धर्म है।

हमीद ने उठकर अपने सूटकेस में से रेलवे का टाइम-टेबिल निकाला तो पता चला कि दोपहर के ढाई बजे से पहले कोई गाड़ी नहीं जाती थी। चुनाँचे उसने घर वालों को बता दिया कि वह ढाई बजे की गाड़ी पर सवार हो जायगा।

अकेले में उसने अपनी बहन जुबेदा से कहा—'आपा, अब शकीला को बुलाने में देर न करना, मेरे पास वक्त बहुत कम है, कहीं ऐसा न हो कि हमारी मुलाकात ही न हो पाये, क्योंकि इस तरह जब शकीला को पता चलेगा कि मैं आया था परन्तु मुलाकात नहीं हो पाई तो उसे बहुत ज्यादा दुःख होगा, और मैं अलग परेशान रहूँगा।'

'मैं अभी इत्तला भिजवाये देती हूँ।'

थोड़ी देर बाद सूचना भेजी गई तो शकीला ने जवाब भेजा कि वह आठ बजे चाय के समय तक पहुँच जायेगी।

घर के और सब लोग तो खाने के कमरे में चाय पीने बैठे, लेकिन जुबेदा ने कह दिया कि वह चाय अपने कमरे में ही पियेगी क्योंकि उसने शकीला को बुला रखा था।

शकीला के आने की खबर सुनकर हमीद के कान खड़े हो गये। वह जल्द से जल्द वहाँ से खिसक जाना चाहता था, परन्तु अभी उसके अब्बा इधर-उधर की बातें कर रहे थे, उनकी बातों को अधूरा छोड़कर चले जाना बदतमीज़ी समझी जा सकती थी, इसीलिए हमीद वहाँ बैठा

रहा। अब्बा ने कहा—'अजीब बात है, अचानक ही तुम्हें बुलावा क्यों आ गया ?'

'मैं कुछ ठीक कह नहीं सकता, अब्बा जान !'

'आज कल कच्छ के रन में पाकिस्तान से कुछ झड़पें हो रही हैं, शायद इसीलिए बुलावा आया है।'

हमीद एक जिम्मेदार फौजी अफसर था, इसलिए फौजी समस्याओं के बारे में वह सदा गोल-माल बात किया करता था। अब भी उसने यही उत्तर दिया—'तार में तो कुछ भी नहीं लिखा है। न जाने क्या बात है जिसकी वजह से बुलाया गया है।'

अब्बा फिर बोले—'मेरा तो यही ख्याल था कि वहाँ मामूली झड़प हुई है, लेकिन तुम्हारे बुलाये जाने से तो यही लगता है कि समस्या कुछ ज्यादा ही गम्भीर है।'

हमीद ने फिर बात को टालते हुए कहा—'मुमकिन है ऐसा हो, परन्तु जरूरी भी तो नहीं। हो सकता है कि अपना कोई दफ्तरी काम ही ऐसा हो जिसकी वजह से हमें बुलाया जा रहा हो। मेरे एक मित्र कैप्टन जॉन को तो तीन ही हफ्ते की छुट्टी मिली थी। इसीलिए उसे और जल्दी लौटना पड़ा।'

उसके अब्बा यूँ ही बातचीत को लम्बा किये जा रहे थे, पर हमीद यह सोच रहा था कि किस बहाने से वह वहाँ से खिसक जाये। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था, परन्तु एकाएक ही जुबेदा ने दरवाजे में से झाँक कर कहा—'हमीद, क्या हमारे साथ चाय नहीं पिओगे ?'

हमीद यह सुनकर मन ही मन बहुत खुश हुआ, परन्तु ऊपर से बात बनाने को बोला—'यहाँ जो पी रहा हूँ आपा !'

'तो क्या हुआ; कुछ वहाँ चाय पी है, और कुछ हमारे साथ पी लो !'

अब उनके अब्बा भी बोल उठे—'जाओ हमीद, आखिर बहन का भी दिल तो चाहता है, कि तुम उसके साथ बैठो। तुम रुक भी तो नहीं सकते, आज ही तुम्हें वापस लौटना पड़ रहा है।'

हमीद तो पहले से ही यही चाहता था। अब्बा की बात सुनकर उठ खड़ा हुआ और बहन के साथ चल दिया।

उसके चले जाने के बाद उसके अब्बा ने अपनी बेगम की ओर मुस्कराकर देखा। वह भी मुस्करा दीं। वे दोनों समझते थे कि शकीला और हमीद एक दूसरे के काफी निकट हो चुके हैं, परन्तु उन्होंने भी निश्चय कर रखा था कि वे बेटे के इस मामले में कोई अड़चन नहीं डालेंगे।

जब हमीद बहन के कमरे में पहुँचा तो शकीला ने उठ कर आदाब-अर्ज की।

'तस्लीम' इतना कहकर वे दोनों एक दूसरे की ओर बढ़े परन्तु एक दूसरे को छू भी नहीं सके, क्योंकि वहाँ जुबेदा जो खड़ी थी।

जुबेदा उनके मन की बात समझ गई, लेकिन वह एकदम ही तो उनको अकेले नहीं छोड़ सकती थी, इसलिए हँसकर बोली—'भई अभी तो दिल पर पत्थर रखकर पहले तुम दोनों चाय पी लो फिर तुमको और बातों का मौका भी मिलेगा।'

उन दोनों ने कहकहा लगाया और चाय पीने के लिए बैठ गये।

तीनों पर मौन-सा छाया हुआ था। हमीद और शकीला के लिए तो यह स्वाभाविक ही था, परन्तु जुबेदा को भी कुछ सूझ नहीं रहा था। फौज में रहकर हमीद ने बात-चीत करने का ढंग सीख लिया था और वैसे भी उसे स्त्रियों से बात-चीत करने में पहले की सी झिझक नहीं थी, क्योंकि उन्हें अक्सर ही स्त्रियों के साथ उठने-बैठने का मौका

मिलता रहता था। लेकिन इस समय उसे यही ख्याल सता रहा था कि न जाने वह समस्या क्या है जिसकी ओर शकीला ने अपने पत्र में इशारा किया था। शकीला जुबेदा के कारण कुछ न बोल पाई, शायद अकेली होती तो कुछ कहती। अब बात-चीत को चलाने की जिम्मेदारी जुबेदा पर आ पड़ी थी। उसने प्यालों में चाय डालते हुए शकीला से कहा—'शकीला, अच्छा हुआ जो तुम चली आई।'

शकीला ने आश्चर्य में आकर अपनी मोटी-मोटी आँखों से जुबेदा की ओर देखा और बोली—'कोई खास बात है आपा।'

'भई खास बात यही है कि तुम्हारे हमीद साहब दो बजे की गाड़ी से वापस जा रहे हैं।'

यह सुनकर शकीला एकबारगी चौंक उठी, उसका चेहरा भी शर्म के मारे लाल हो गया, क्योंकि जुबेदा ने 'तुम्हारे हमीद साहब' का प्रयोग किया था। शकीला यही समझती थी कि अभी तक जुबेदा को उन दोनों के प्रेम का कुछ पता नहीं था। वह कुछ हिचकिचा कर बोली—'क्यों, इतनी जल्दी ?'

'आये तो थे एक हफ्ता रुकने के लिए, मगर आज सुबह ही तार आ गया जिसके कारण फौरन ही जाना पड़ रहा है।'

यह सुन कर शकीला ने हमीद की ओर देखा और हमीद ने दोनों कन्धे हिलाकर अपनी मजबूरी जाहिर की।

चाय के साथ-साथ इधर-उधर की छोटी-मोटी बातें होती रहीं। हमीद और शकीला तो एक दूसरे से अपने दिल की बात कहने के लिए बेताब हो रहे थे, परन्तु जुबेदा भी यही सोच रही थी कि वह जल्दी से जल्दी चाय का प्याला पीकर वहाँ से खिसक जाय।

आखिर जुबेदा बहाना लेकर वहाँ से चल दी। उसके जाते ही

हमीद ने जल्दी से शकीला के हाथ को थाम लिया और कहने लगा—'शकीला, मैं तुम्हें कैसे बताऊँ कि इतने दिन कितनी परेशानी में गुजरे? तुमने कुछ भी तो इशारा नहीं दिया ताकि मैं कुछ तो समझ सकता कि हमारी अड़चन क्या है और मैं उस पर कुछ सोच भी सकता।'

शकीला ने हाथ पीछे खींच कर माथे पर बल डालते हुए कहा—'पहले यह तो बताइये कि आखिर यह क्या मजाक है?'

'मजाक!······कैसा मजाक?'

'कल ही रात आये और आज जाने की तैयारी।'

'ओह! क्या करूँ शकीला? नौकरी का मामला है और फिर फौज की नौकरी।'

'जाइये-जाइये, ऐसी झूठी तसल्लियों से मेरा मन बहलाने की कोशिश न कीजिये।'

'मैं तुम्हारा मन बहलाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम मेरी बात समझने की कोशिश करो। शकीला तुम यह मत भूलो कि तुम एक फौजी अफसर की बीबी बनने जा रही हो। फौजियों के जीवन में तो अक्सर ही ऐसी घटना होती रहती है।'

इस बार फिर बीबी बनने की बात सुनकर शकीला शर्मा गई।

हमीद ने फिर कहा—'देखो अब वक्त खराब मत करो। हमें बात-चीत करने का ज्यादा मौका नहीं है। हो सकता है कि अभी घर का कोई और आदमी आ टपके तो सारा मामला ही खटाई में पड़ जायगा। पहले जल्दी से काम की बातें कर लें, बाकी बातें तो होती ही रहेंगी।'

पल भर को मौन छाया रहा, फिर शकीला ने झुकी-झुकी आँखों से अपनी अँगुलियों के नाखूनों को ताकते हुए कहा—'अब्बा! मेरा रिश्ता पाकिस्तान में करना चाहते हैं।'

हमीद को ऐसे लगा जैसे किसी ने उसकी छाती पर हथौड़ा मार दिया हो। वह आश्चर्य में टप से बोल पड़ा—'पाकिस्तान में?'

'जी।'

'क्या कोई लड़का तलाश कर लिया है?'

'अभी नहीं।'

'पर कितनी अजीब बात है। आखिर वह तुम्हारा रिश्ता पाकिस्तान में क्यों करना चाहते हैं? तुमको कहीं धोखा तो नही हुआ?'

'जीं नहीं, मैंने अब्बा और अम्मी को बातें करते सुना था, जभी तो मैंने आपको चिट्ठी लिखी थी।'

'लेकिन सवाल तो यह है कि वह तुम्हें पाकिस्तान क्यों भेजना चाहते हैं?'

उनका ख्याल है कि यहाँ मेरा भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता।'

'इसका मतलब तो यह है कि उन्हें मैं भी पसन्द नहीं। मैंने माना कि अभी हमारे तुम्हारे रिश्ते की कोई बात नहीं चली लेकिन यह तो हरगिज नहीं हो सकता कि तुम्हारे रिश्ते के सिलसिले में उन्होंने मेरे बारे में कुछ भी न सोचा हो—आखिर उनको मुझमें क्या खराबी नजर आई? मैं उन्हें क्यों पसन्द नहीं आया शकीला? मैं तुम्हारे दिल को दुःख नहीं देना चाहता लेकिन मैं तुम्हें इतना जरूर बता देना चाहता हूँ कि मेरे लिए बहुत अच्छे-अच्छे खानदानों से रिश्ते आ रहे हैं, परन्तु मैंने भी पक्का इरादा कर रखा है कि मैं तुम्हीं से शादी करूँगा लेकिन लगता है कि मामू जान को मैं पसन्द ही नहीं।'

'नहीं, यह बात तो नहीं है। इतना तो मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि उन्हें आप बहुत पसन्द हैं।'

'तो फिर?'

'न जाने क्यों उनका भारत में दिल ही नहीं लगता।'

'अजीब बात है। यहाँ पर उनका इतना फैला हुआ कारोबार है, अच्छा कमाते हैं, अच्छा खाते और पहनते हैं। फिर भी उन्हें अपने देश भारत से लगाव नहीं है।'

'पाकिस्तान से जो मिलने वाले आते हैं वह भी तो उनके कान भरते रहते हैं।'

यह सुन कर हमीद बिल्कुल सकते में आ गया क्योंकि उसका दिमाग इस ढंग से सोचने का आदी नहीं था। वैसे तो उसका खानदान ही देशभक्त था, परन्तु इतना पढ़-लिख कर और भारतीय सेना में रह-कर उसके विचार और निखर गये थे। वह धीरे से बोला—'शकीला, मैं तुम्हारा मतलब समझ गया हूँ। और यह टेढ़ी अड़चन भी समझ में आ गई है।'

'लेकिन सवाल तो यह है कि इसका इलाज क्या हो ?'

'तुम कहती हो कि अभी उन्होंने कहीं रिश्ता तय नहीं किया है।'

'जी हाँ, मेरा ख्याल है कि अभी उनकी नजर में कोई रिश्ता है भी नहीं। अभी तो वे सिर्फ इस बात का इतना पक्का इरादा किये हुए हैं कि मुझे डर लगता है कि पाकिस्तान के सिवा कहीं और रिश्ता करने को बिल्कुल तैयार न होंगे। इसीलिए तो मैं चाहती हूँ कि अभी से इसका कुछ न कुछ इन्तजाम होना चाहिए, वरना कहीं बातचीत शुरू हो गई तो फिर हमारी मुश्किल और बढ़ जायगी।'

'तुम ठीक तो कहती हो लेकिन शकीला, मुझे भी तुमसे एक बात कहनी है।'

'क्या ?'

,मैंने तुम्हारी चिट्ठी के बारे में आपा को बता दिया है।'

'उई अल्लाह !' शकीला ने एकदम ही हड़बड़ा कर कहा ।

'अब उई अल्लाह मत कहो । जरा हिम्मत से काम लो । अगर तुम्हारा यह ख्याल है कि किसी को कानोंकान खबर भी न हो और हम दोनों की शादी भी हो जाय और फिर तुम चुपके से मेरी बीबी बनकर मेरे घर पहुँच जाओ, तो तुम्हारा यह ख्याल गलत है । तुम्हे मालूम होना चाहिए कि हमारा प्रेम भी बिल्कुल छिपा नहीं रह सकता । एक न एक दिन तो भेद खुल ही जाता । हाँ, तो मेरा ख्याल यह है कि आपा को अपना भेदिया बना लिया जाय और इस तरह हमें बड़ी मदद मिल जायेगी । क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

'जो आपका ख्याल सो मेरा ख्याल । सच, मैं तो बहुत परेशान हूँ ।'

'परेशान होने से कुछ नहीं होगा । तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हम फौजी परेशान होना नहीं जानते, बल्कि फौरन ही उसका इलाज करते हैं ।'

'अभी तो आप कह रहे थे कि मैं बहुत परेशान रहा ।'

'अरे भई वह तो मैं तुम्हारी परेशानी की वजह से परेशान रहा और फिर मुझे यह भी तो मालूम नहीं था कि अड़चन क्या है ।'

शकीला चुप रही और हमीद कुर्सी से उठते हुए बोला—'अच्छा, तो मैं आपा को बुला लाता हूँ ।'

इतना कह कर हमीद उठा और दरवाजे से बाहर निकल गया । थोड़ी ही देर में वह आपा को लेकर आ गया और एक बार फिर तीनों बैठकर बातचीत करने लगे ।

हमीद ने बहन से कहा—'आपा, शकीला ने जो मुझे चिट्ठी लिखी थी उसके बारे में तो मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ । अब मैंने शकीला को

समझाया कि हमारी बात ऐसी नहीं है जिसे ज्यादा देर तक छिपाया जा सके और छिपाने का कोई फायदा भी नहीं, खासकर तुमसे ।'

'हाँ-हाँ, मैं कोई गैर तो नहीं हूँ। मुझे तो खुद इस बात की परेशानी हो रही है कि आखिर वह बात क्या है ?'

हमीद बोला—'बात सिर्फ इतनी है कि अपने मामू जान शकीला का रिश्ता पाकिस्तान में करना चाहते हैं ।'

जुबेदा आश्चर्य में आ बोली—'पाकिस्तान में ? यह क्यों ?'

शकीला चुपचाप बैठी रही और वे दोनों भाई-बहन बातचीत करते रहे। हमीद बोला—'इस सवाल का जवाब तो काफी लम्बा है, लेकिन मैं सब कुछ समझ गया हूँ ।'

'मैं तो समझी थी कि कोई और ही वजह होगी। यह तो कभी सोचा भी नहीं था कि मामू जान शकीला के लिए पाकिस्तान में रिश्ता ढूँढ रहे हैं ।'

'तुम भला समझती भी कैसे ? अपने घर में तो शुरू से देश को प्यार करने की शिक्षा मिलती रही है। लेकिन मामू जान के विचार शुरू से ही कुछ और हैं ।'

'लेकिन हमीद यह तो बड़ी बुरी बात है ।'

'अब जो कुछ भी हो, अभी मेरे पास इतना वक्त भी नहीं है कि मैं उनको कुछ समझा सकूँ। मैं यह भी नहीं कह सकता कि समझाने से वह समझेंगे भी या नहीं ।'

अब शकीला बोल उठी—'मैं आपसे क्या कहूँ; कहते हुए दुःख होता है। वह सदा ही पाकिस्तान की बातें करते रहते हैं । आजकल अखबारों में जो कच्छ के बारे में खबरें निकल रही हैं, उन पर भी वह खूब

बगलें बजा रहे हैं। वह कहते हैं कि पाकिस्तान की फौज ने भारत की फौज को मार-मार कर भगा दिया है।'

हमीद बोला—'मामू साहब बुजुर्ग हैं, मैं उनके बारे में क्या कहूँ, लेकिन उनके सोचने का यह ढंग अकलमन्दी से बहुत दूर है। जरा सोचो तो कि इस दुनिया में कई और भी मुल्क हैं जहाँ मुसलमान बसते हैं तो क्या इसका यह मतलब है कि हम अपने मुल्क को भूलकर उनकी खैर मनायें। अरे, हमें तो यहीं रहना है, यहाँ खाना, कमाना और मरना है, इसलिए हमारा प्यार तो इसी मुल्क से होना चाहिए। यह ठीक है कि हम इस्लाम धर्म को मानते हैं, तो उससे क्या फर्क पड़ता है। इस देश में बहुत से धर्मों के लोग बसते हैं, हर एक को अपने-अपने धर्म के अनुसार रहने का हक है। हमें इस्लाम धर्म मानने से कोई मना तो नहीं करता। हम अपने मजहब के मुताबिक जो जी चाहे करें, लेकिन बाकी सब कामों में तो हमें अपने मुल्क के दूसरे जितने रहने वाले हैं उनका साथ देना चाहिए।'

जुबेदा बोली—'भई यह सब तो ठीक है लेकिन उन्हें कौन समझाये?'

'जब समझाने का मौका आयेगा तब देखा जायगा। अभी तो न इतनी फुर्सत है और न कोई जल्दी ही है।

शकीला बेचैन होकर बोली—'अगर आपके पीछे उन्होंने कहीं बात पक्की कर दी तो?'

हमीद बोला—'नहीं शकीला, तुम बेफिकर रहो, अगर वह बहुत जल्दी भी करें तो उन्हें पाँच-छः महीने लग ही जायेंगे। मुझे इस बात की कोई उम्मीद नहीं कि वह इतनी जल्दी तुम्हारी शादी कर देंगे। जहाँ तक मैं जानता हूँ वह उस वक्त शादी करेंगे जब तुम्हारी उम्र बाइस

वर्ष के लगभग हो जायगी। अभी इस बात का कोई डर नहीं है। फिर भी तुमने अच्छा किया जो मुझे बता दिया।'

अब जुबेदा ने शकीला को तसल्ली देते हुए कहा—'हाँ शकीला, मैंने भी मामूजान की जबानी सुना है कि वह इक्कीस-बाईस साल से पहले लड़को की शादी करने के हक में नहीं हैं। वह पढ़े-लिखे और समझदार हैं, यह अलग बात है कि अपने मुल्क से हमदर्दी होने के बजाय उन्हें एक गैर-मुल्क से हमदर्दी है। इस बात पर जितना भी अफसोस किया जाय कम है।'

हमीद ने बहन से कहा—'अच्छा आपा, अब तो यह बात तुम्हें भी मालूम हो गई है इसलिए तुम दोनों आपस में सलाह-मशविरा कर सकती हो। अगर कोई ऐसी-वैसी बात हो तो फौरन मुझे चिट्ठी लिख देना। बेकार परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। मुझे इस बात की भी उम्मीद है कि शायद मैं फिर छुट्टी लेकर छः-सात दिन के लिए आ जाऊँ।'

चार

उसी दोपहर को वह गाड़ी पर सवार हो कर बड़ौदा चला गया। वहाँ जा करके उसे पता चला कि कच्छ की समस्या काफी गम्भीर थी और उसी के लिए उन सबको वापस बुलाया गया था।

हमीद को कच्छ जाने का मौका भी मिला। वहाँ उसे पता चला कि पाकिस्तान की सेना ने तीन हजार की संख्या में भारत की चौकी पर हमला बोला था। इधर से वास्तव में भारत की सेना के सिपाही नहीं लड़े, बल्कि आगे की चौकियों पर जिन सिपाहियों की घूमने-फिरने और जाँच-पड़ताल करने की ड्यूटी लगी हुई थी, उन्होंने ही पाकिस्तानी हमले का मुकाबला किया। उनकी संख्या डेढ़ सौ से अधिक नहीं थी, फिर भी उन्होंने पाकिस्तानी सेना को काफी हानि पहुँचायी। बीसियों पाकिस्तानी सिपाही मारे गये, और भारतीय सिपाहियों ने उनके बहुत से हथियार भी छीन लिये। बहुत ज्यादा संख्या में होने के कारण, और फिर अचानक ही हमला कर देने के कारण उनका कब्जा कञ्जरकोट की बस्ती पर हो गया। भारत की जवाबी कार्यवाही होने से पहले ही बीच-बचाव करने वाले आ गये, और इस बात की कोशिश होने लगी कि बिना युद्ध के ही आपस में समझौता हो जाय।

अब हमीद को ख्याल आया कि उसके मामू ने इस स्थिति

का कितना गलत अनुमान लगाया था। यह तो किसी के लिए भी गर्व की बात नहीं हो सकती कि तीन-साढ़े-तीन हजार की सेना सौ-डेढ़-सौ सिपाहियों पर हमला बोल कर उन्हें पीछे हटा दे। हमीद ने जुबेदा को एक चिट्ठी लिखी, जिसमें उसने यह सब सच्ची बातें भी ठीक ढंग से लिख दीं।

उधर जुबेदा भाई के जाने के बाद काफी चौकन्नी हो गई। हमीद के बतलाने से पहले भी वह जानती थी कि उन दोनों का आपस में लगाव है लेकिन आमने-सामने बात हो जाने के बाद उसने महसूस किया कि दरअसल ही दोनों का प्यार बहुत गहरा था, और यह उनके लिए जिन्दगी और मौत का सवाल बन चुका था। इसलिए अब उसने अपना यह कर्त्तव्य समझा कि वह उन दोनों के मार्ग को समतल बनाये। इसीलिए उसने अपने अब्बा और अम्मी के मन को टटोलना शुरू किया। अब्बा और अम्मी को भी अपने बेटे और शकीला के आपसी लगाव का कुछ अन्दाजा तो था लेकिन उन्हें निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञान नहीं था। चुनांचे जब एक रोज अपनी अम्मी के पास जुबेदा अकेली बैठी थी तो उसने मेज-पोश पर फूल काढ़ते हुए कहा—'अम्मी।'

'क्या है, जुबेदा ?'

'आपने हमीद की शादी के बारे में भी कुछ सोचा है ?'

'कौन ऐसी माँ होगी जो अपने बेटे की शादी के बारे में न सोचती हो लेकिन फौज में होने के कारण अभी तो हमीद की शादी हो भी नहीं सकती।'

'अगर शादी अभी नहीं हो सकती तो इसका यह मतलब तो नहीं कि किसी लड़की का चुनाव ही न किया जाय। आखिर यह तो नहीं होता कि जब ब्याह करना हो तभी लड़की भी ढूंढी जाय।'

'तुम ठीक कहती हो लेकिन पहले तो हमें तुम्हारी ही शादी करनी होगी।'

यह सुन कर जुबेदा झेंप गई। पल भर आँखें झुकाये बैठी रही, परन्तु पढ़ी-लिखी लड़की थी इसलिए भाई वाली बात अधूरी नहीं छोड़ना चाहती थी। बहुत ही धीमे स्वर मे बोली—'परन्तु अम्मी जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरा रिश्ता तो आप तय कर ही चुकी हैं, वैसे भी हमीद की शादी में तो अभी काफी वक्त पड़ा है। मैं जानती हूँ कि पहले तो आप मुझी को अपने घर से निकालेंगी।'

अम्मी मुस्करा दीं—'बेटी भला हमें निकालने की क्या जरूरत है? यह तो समाज की सदा से रीति चली आती है कि लड़की को दूसरे के घर जाना ही पड़ता है, जभी तो उसे पराया धन कहते हैं। माँ-बाप का तो जी नहीं चाहता कि वह अपने बच्चों को अपने आप से अलग करें।'

'ठीक है, मेरी बात छोड़िये, क्योंकि जहाँ तक मेरा ताल्लुक।है वह तो जो कुछ होना है सो हो ही जायगा लेकिन मेरा बहाना रखकर आप यह तो नहीं कह सकतीं कि तुम्हारे कारण हम हमीद के लिए लड़की नहीं ढूँढ रहे हैं।'

अम्मी हँस दीं और कहने लगीं—'तुम्हारी बात ठीक है, लेकिन हमीद के लिए हम लड़की कैसे ढूँढ सकती हैं?'

'क्यों?'

'भई वह फौज में अफसर है, वह हमारी पसन्द की लड़की से शादी न करे तो?'

'उसकी पसन्द की बात आप मुझ पर छोड़ दीजिये।'

जुबेदा यह बात कहना तो न चाहती थी, परन्तु न जाने कैसे उसके

मुँह से बात निकल ही गई। अम्मी ने अचानक ही सिर उठाकर टक-टकी बाँधते हुए बेटी की ओर देखा, और फिर बोलीं—'मुझे लगता है कि तुम्हारी नजर में कोई ऐसी लड़की जरूर है जिसके बारे में तुम्हें इस बात का यकीन है कि हमीद उसे पसन्द कर लेगा।'

जुबेदा माँ की बात का सीधा उत्तर देने के बजाय बोली—'अम्मी, शकीला के बारे में आपका क्या ख्याल है?'

शकीला का नाम सुनकर अम्मी मन ही मन में चौंकी तो जरूर लेकिन उन्होंने अपने चेहरे से कुछ जाहिर नहीं होने दिया, बल्कि बेटी की ओर देखे बिना सिलाई की मशीन की दस्ती घुमाते हुए बोलीं—'शकीला बुरी लड़की तो नहीं, लेकिन......।'

'लेकिन क्या?'

'वह बड़ी सीधी-सादी लड़की है।'

'फिर भी पढ़ी-लिखी तो है।'

'हाँ, पढ़ी-लिखी है, लेकिन सवाल तो यह है कि क्या वह हमीद की अफसराना जिन्दगी पूरे तौर पर निभा सकेगी या नहीं?'

'नहीं अम्मी आपके दिल में ऐसा शक तो पैदा ही नहीं होना चाहिए। आजकल की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ नई बातों को बड़ी जल्दी समझ लेती हैं और वह अपने विचारों को अपने शौहर के विचारों में बड़ी आसानी से ढाल लेती हैं।'

अम्मी समझ तो गईं कि जुबेदा बिना हमीद के सलाह-मशवरे के इतने विश्वास से यह बातें कभी न कहती, लेकिन फिर भी उसके मन को टटोलने के लिए उन्होंने कह दिया—'फिर भी हमीद की राय तो लेनी ही पड़ेगी।'

'हाँ, वह भी ले लेंगे।'

अम्मी मुस्करा कर बोलीं—'सलाह ले लेंगे या पहले से ही भाई से सलाह-मशवरा कर चुकी हो।'

जुबेदा एक बार फिर चुप हो गई, परन्तु फिर उसने सोचा कि इस बात को छिपाने से फायदा ही क्या। अगर मैं यह बता भी दूँ तो उससे काम कुछ बनेगा ही, बिगड़ेगा तो नहीं। तब वह मुस्कराकर बोली—'जी हाँ, हमीद ने बातें कुछ ऐसी ही की थीं जिससे लगता था कि वह शकीला से ही शादी करने पर तुला हुआ है।'

एक बार फिर अम्मी ने भरपूर नजरों से बेटी की ओर देखा। उनके मन का मोर नाच उठा था, क्योंकि उन्हें इस बात की बड़ी खुशी थी कि आखिर उनके लड़के ने अपने लिए एक लड़की पसन्द कर ही ली। जुबेदा फिर बोली—'अम्मी आप चुप क्यों हो गईं ? क्या आपको इस रिश्ते पर कोई एतराज है ?'

'नहीं बेटी ! बल्कि मैं तो खुश हूँ कि घर का काम घर ही में हो जाय।'

'तब तो आपको हमीद की कुछ मदद करनी चाहिए।'

'मदद ?'

'जी।'

'मैं समझ नहीं पाई कि इसमें मदद की क्या जरूरत है ? अरे शकीला अपने घर की लड़की है। अगर हमीद को पसन्द है तो इस रिश्ते में कोई दिक्कत की बात तो हो ही नहीं सकती।'

'आपको इस बात का यकीन है ?'

अम्मी ने आश्चर्य में आ बेटी की ओर देखा, फिर बोलीं—'तो क्या तुम समझती हो कि इसमें कोई अड़चन की बात है ? अगर तुम्हारा यह ख्याल है तो इसे दिल से निकाल दो।'

जुबेदा समझ गई कि उसकी अम्मी को अपने भाई साहब के विचारों का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं था। वह कुछ उदास लहजे में बोली—'काश। आपका यह ख्याल ठीक होता।'

अम्मी ने आँखें सिकोड़ कर बेटी की ओर देखा और जरा ऊँचे स्वर में बोली—'तुम यह क्या कहती हो, जुबेदा ?'

'मैं ठीक ही कहती हूँ।'

'गोया तुम यह कहना चाहती हो कि अगर मैं भाई साहब से अपने हमीद के लिए शकीला का हाथ माँगू तो वह इन्कार कर देंगे ?'

'हो सकता है।'

'नहीं, यह कभी नहीं हो सकता।'

'शायद आपको अपने भाई साहब के विचारों का ठीक ढंग से पता नहीं है।'

'उनका ख्याल कुछ भी हो, लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि वह शकीला का हाथ हमीद के हाथ में देने से इन्कार कर दें।'

'खुदा करे आपका यह ख्याल ठीक हो क्योंकि इस तरह तो हमारे रास्ते में किसी किस्म की कोई अड़चन ही नहीं रहती।'

'वही तो मैं कहती हूँ कि इसमें अड़चन की कोई बात ही नहीं। लेकिन जुबेदा ! मैं पूछती हूँ कि तुम्हें इस बात का शक कैसे हुआ कि तुम्हारे मामू इस रिश्ते पर एतराज कर सकते हैं ?'

'मुझे पता चला है कि वह शकीला का रिश्ता पाकिस्तान में ढूँढ रहे हैं। उनका ख्याल है कि अगर उन्होंने शकीला की शादी हिन्दुस्तान में ही कर दी तो उसके बच्चों का मुस्तकबिल (भविष्य) खतरे में पड़ जायगा।'

'लो, और सुनो ! यह भी कोई बात हुई ? क्या हिन्दुस्तान में जो

दस करोड़ मुसलमान रहते हैं, क्या वह भूखों मर रहे हैं ? क्या मुसलमानों को काम-काज नहीं मिलता; या वह कारोबार नहीं करते, या उन्हें नौकरियाँ नहीं मिलतीं, या मुसलमान अधिक से अधिक तरक्की नहीं कर रहे हैं ? क्या उपराष्ट्रपति डॉक्टर जाकिर हुसेन और शिक्षा-मन्त्री श्री छागला मामूली लोग हैं, या उनका दर्जा मामूली है ? इनके अलावा और भी हजारों नाम लिये जा सकते हैं।'

'वह सब तो ठीक है अम्मी, लेकिन यह तो हमारे विचार हैं। हम इस्लाम मजहब में ईमान रखते हुए भी भारत को अपना देश और अपनी जन्मभूमि मानते हैं। लेकिन क्या किया जाय, मामू जान के ख्याल तो कुछ और ही हैं।'

'बँटवारे से पहले भाई साहब को मुस्लिम लीग से गहरी हमदर्दी थी, और वह पाकिस्तान बनवाने के पक्ष में भी थे। लेकिन पाकिस्तान बनने के बाद हम लोगों ने देख लिया है कि इससे हमारा कोई मसला (समस्या) हल नहीं हुआ, इसलिए अब तो मुसलमानों के सोचने का पुराना ढंग बदल जाना चाहिए। मैं तो समझती थी कि भाई साहब के ख्याल भी बदल गये होंगे। लेकिन जुबेदा, यह यूँ ही सुनी-सुनाई बात है या······।'

'जी नहीं अम्मी, सुनी-सुनाई बात नहीं है, शकीला ने खुद यह सब बताया है।'

'क्या शकीला ने खुद बताया है ?'

'जी हाँ।'

'लेकिन मेरे ख्याल में शकीला के सोचने का ढंग तो यह नहीं होगा।'

'जी नहीं वह तो नये जमाने की लड़की है, उसके ख्याल भी नये

हैं। वह तो पाकिस्तान जाने का नाम भी नहीं लेती। इसीलिए तो वह डरती है कि कहीं उसे पाकिस्तान ही न जाना पड़े। उसने हमीद को चिट्ठी लिख कर बुलाया था। चिट्ठी में उसने इस भेद को नहीं खोला लेकिन इतनी ताकीद कर दी थी कि हमीद जल्दी से जल्दी अलीगढ़ पहुँच जाय तभी तो हमीद छुट्टियाँ खत्म होने से एक हफ्ता पहले ही यहाँ पहुँच गया था। अगर उसे तार न मिलता तो वह पूरा एक हफ्ता यहीं पर ठहरता।'

'अच्छा तो अन्दर ही अन्दर इतनी खिचड़ी पक रही थी, लेकिन हमें तो किसी ने कुछ नहीं बताया।'

'आपको कौन बताता, मुझे तो खुद कुछ भी पता नहीं था। जब हमीद ने बताया तो सारा हाल मालूम हुआ।'

'मुझे तो इस बात का पता नहीं था कि तुम्हारे मामू जान पाकिस्तान के किसी खानदान से रिश्ता जोड़ना चाहते थे लेकिन अगर उनका यही ख्याल हो तो हमें उनकी खुशामद करने की क्या जरूरत है? आखिर हम लड़के वाले हैं, हमीद जैसे लड़के के लिए भला लड़कियों की क्या कमी। तुम्हारे मामू जान सिर पटक कर रह जायँ उन्हें हमीद जैसा लड़का नहीं मिल सकता। सच, मुझे तो यह बातें सुन कर बड़ा दुःख हुआ है, बल्कि गुस्सा भी आ रहा है।'

'लीजिये और सुनिये। हम तो आप से आश लगाये बैठे थे कि आप का सहारा मिल जायगा, लेकिन आपने तो गुस्सा में आकर हमारा भट्ठा ही बैठा दिया।

'देखो जुबेदा, तुम्हारे मामू मेरे भाई लगते हैं। सगे न सही, फिर भी रिश्ते से भाई तो हैं। बचपन से ही मैं उनकी बहुत इज्जत करती रही हूँ, मुझे क्या मालूम कि उनके ऐसे ख्याल हैं।'

'पर अम्मी, उनके ख्याल जो कुछ भी हो, हमें तो अपनी तरफ से पूरी कोशिश करनी चाहिए। यह तो ठीक नहीं कि बड़ों के उलटे-सीधे ख्यालों की वजह से नवजवान जिन्दगियाँ तबाह कर दी जाय।'

'भई लड़की उनकी है, अगर वह उसे अन्धे कुएँ में ढकेलना चाहें तो हमें इससे क्या लेना ?'

'यह तो ठीक है कि लड़की उनकी है, लेकिन अम्मी लड़का तो आपका है। मैंने माना कि हमीद को लड़कियों की कमी नहीं, लेकिन अम्मी दिल की बातें तो ऐसे ही होती हैं। यह तो मैं ही जानती हूँ कि हमीद शकीला को कितना चाहता है। अगर उसकी मदद आप भी न करेंगी तो बिचारे की और कौन मदद करेगा ? उसके दुःख-सुख का ख्याल रखना तो आपके और मेरे लिए बहुत जरूरी है। दुनियाँ में चाहे हजारों लड़कियाँ हों लेकिन जिससे अपना दिल पटे वही तो मन को अच्छी लगती है। खुद ही सोचिये कि अगर हमीद के जिन्दगी में खुशी न रही तो आप खुश कैसे रह सकेंगी ?'

अम्मी कुछ उदास सी हो गईं और दर्द-भरे स्वर में बोलीं—'हाँ, यही तो एक दुःख है। आखिर तुम पढ़ी-लिखी हो, समझदार हो, तुम्हीं बताओ कि क्या करें ?'

जुबेदा यह सुनकर पल भर को चुप हो गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या सुझाव दे, क्योंकि वह इस बात के लिए तैयार नहीं थी। उसने माँ से यह तो कह दिया कि कुछ करना चाहिए लेकिन उसने यह नहीं सोचा था कि माँ उसी को कुछ करने को कहेंगी। कोई खास बात नहीं सूझी तो वह बोली—'अम्मी, पहले तो आप जा कर मुमानी जान के दिल को टटोलिये। इसके बाद जो ठीक समझेंगे सो करेंगे।'

अम्मी बड़बड़ायीं—'यह अच्छी बात है, हम लड़के वाले होकर लड़की वालों की खुशामद करें। खैर, जो अल्लाह ने हमारी तकदीर में लिख दिया है सो तो करना ही पड़ेगा।'

'अम्मी, आप तो ख्वामख्वाह उदास होती हैं। आप वहाँ हमीद का रिश्ता लेकर थोड़ी जा रही हैं। बस यूँ ही कहियेगा कि शकीला के शादी की कहीं बातचीत शुरू की है या नहीं ? या जैसे भी आप ठीक समझें शकीला के रिश्ते की बात शुरू कर दें। अपना नाम लेने की जरूरत भी नहीं। इस तरह टटोलने से यह तो पता चल ही जायगा कि इस सम्बन्ध में उनके ख्याल क्या हैं ?'

'लेकिन एक बात है कि तुम भी मेरे साथ चलो।'

'आप मेरे सामने बातचीत करना चाहती हैं क्या ?'

'नहीं बस साथ चली चलना, बात चाहे तुम्हारे सामने ही शुरू कर दूँगी, तुम कुछ देर हमारे पास बैठना, फिर मन चाहे तो अलग शकीला के पास जा बैठना।'

'अरे, आपने खूब याद दिलाया। मुझे शकीला से मिलना भी तो है।'

'क्यों कोई खास बात है क्या ?'

'हमीद की जो चिट्ठी मेरे पास आयी थी उसी लिफाफे में एक पत्र उसके लिए भी है। वहाँ जाऊँगी तो वह उसे दे दूँगी।'

× × ×

माँ-बेटी का यह प्रोग्राम तय हो गया तो वे उसी शाम वहाँ पहुँच गईं। जाते ही जुबेदा ने अपना हाथ माथे तक ले जाते हुए कहा—'सलाम मुमानी जान।'

मुमानी ने नजर उठा कर देखा। बुरके की उठी हुई नकाब में से

जुबेदा का चेहरा दमक रहा था। खुश होकर बोलीं—'जीती रहो बेटी ! मैं कहती हूँ कि तुम अपने साथ कभी अपनी अम्मी को भी ले आया करो।'

जुबेदा की अम्मी जरा पीछे रह गई थीं, इतने में ही सामने आ गईं तो शकीला की अम्मी गद्गद् हो उठीं। असल में वह स्वभाव की बहुत अच्छी थीं। उन्हें देखते ही दुपट्टे का आँचल सम्भालती हुई और गरारा फड़फड़ाती हुई आगे बढ़ीं और हँसते हुए बोलीं—'अजी मैं पूछती हूँ कि आज यह चाँद किधर से निकल आया। अभी-अभी मैं बेटी जुबेदा से आपके न आने की शिकायत करने जा रही थी। सचमुच ही आप तो ईद का चाँद हो गई हैं।'

दूसरे ही पल दोनों एक दूसरे से चिपट गईं और जुबेदा की अम्मी बोलीं—'ठीक है भाभी, यही शिकायत तो मुझे भी आपसे है, लेकिन आप जरा पहल कर गईं।'

'ठीक कहती हैं। मैं आपके पास आ नहीं पाई, लेकिन मैं आपको पलभर के लिए भी नहीं भूली।'

'बस जी ठीक है,—दिल से दूर तो तन से दूर; दिल के नजदीक तो मन के भी नजदीक।'

इतना कहकर दोनों जोर से हँसीं। शकीला की अम्मी उन्हें बड़े ही प्यार से अपने साथ लायीं और दीवान पर बैठा दिया। बातों का शोर सुन कर शकीला भी इधर आ निकली—'फूफी जी सलाम अर्ज करती हूँ।'

'जीती रहो बेटी ! अरे यह तो हमारी बेटी ही अच्छी है, हफ्ते में एक-आध बार सूरत तो दिखा आती है। भला भाभी जी को हमारी क्या फिकर ?'

शकीला की अम्मी बोलीं—'भाभी का दिल तो चाहता है कि चौबीस घण्टे आपके साथ बैठी बातें करती रहे, लेकिन दुनियादारी के इन झंझटों से पीछा छूटे तभी तो।'

'लेकिन देख लो भाभी, जिनके मन में मुहब्बत होती है वह सब कामों में से भी वक्त निकालकर आ जाते हैं।'

'मैं किन लफ्जों में आपका शुक्रिया अदा करूँ? आखिर इस दुनिया में रखा ही क्या है? यही मुहब्बत के दो बोल; प्यार का बर्त्ताव, बाकी तो सब दिखावटी ही है।'

बातों की इस शुरुआत के बाद छोटी-मोटी घरेलू समस्याओं का रोना शुरू हो गया। आखिर मौका पाकर जुबेदा की अम्मी बोलीं—'भाभी आप तो जानती ही हैं कि जुबेदा का रिश्ता कर चुके हैं, अब थोड़े ही अरसे बाद इसकी शादी करके अपना फर्ज पूरा कर लेंगे। पर भाभी! शकीला के बारे में क्या सोचा है?'

'क्या कहूँ, मुझे तो इसका गम सताता रहता है पर इसके अब्बा कहते हैं कि अभी बच्ची है। आखिर शादी की इतनी भी क्या जल्दी?'

'सो तो ठीक है भाभी लेकिन मैं शादी की बात तो नहीं कह रही हूँ। शादी दो-चार साल रुक कर भी हो सकती है, लेकिन लड़के की तलाश तो अभी से शुरू कर देनी चाहिए।'

शकीला अपनी शादी की बात सुन कर बैठी-बैठी सिकुड़ने लगी, और फिर उसने जुबेदा के कान में फुसफुसा कर कहा—'आओ यहाँ से खिसक चलें।'

इतने में उसकी अम्मी बोलीं—'जाओ बेटी, अपनी फूफी के लिए चाय-नाश्ते का इन्तजाम तो करो।'

शकीला तो पहले ही बहाना तलाश कर रही थी, माँ का इशारा पाते ही जुबेदा का हाथ पकड़कर उसे वहाँ से घसीटती हुई भाग गई।

लड़कियों के चले जाने के बाद शकीला की माँ ने मुँह आगे को बढ़ाकर यूँ कहना शुरू किया जैसे बड़े भेद की बात बताने जा रही हो। फिर बोलीं—अब क्या बताऊँ? आपके भाई जान को तो एक न एक झख सवार रहती है।'

जुबेदा की अम्मी खुश हुईं कि बातचीत का सिलसिला तो शुरू हो ही गया। अगर उसकी भाभी रिश्ते की बात बिल्कुल टाल ही देतीं तो फिर उनके लिए एक मुश्किल खड़ी हो जाती, फिर वह बात को आगे बढ़ा न पाती। उन्होंने दिलचस्पी लेते हुए पूछा—'मैं आपकी बात समझी नहीं, भाभी।'

'वही तो बताने जा रही हूँ। आखिर आपसे क्या छिपाना? आज-कल उन्हें बस एक ही धुन सवार है कि शकीला की शादी करेंगे तो पाकिस्तान में ही।'

जुबेदा की अम्मी ने यूँ आश्चर्य प्रकट किया जैसे यह बात पहली बार उनके कानों में पड़ी हो। गम्भीर स्वर में पूछा—'वह क्यों?'

'न जाने उन्हें यह वहम क्यों हो गया है कि उनके सब बच्चों की धीरे-धीरे शादियाँ पाकिस्तान में ही हो जायें, ताकि वे सब वहीं के बाशिन्दे (नागरिक) बन जायें।'

'और उनका अपना जो इतना कारोबार यहाँ है, उसका क्या बनेगा?

'कहते हैं कि जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक कारोबार की देखभाल करता रहूँगा, जब अपने से यह काम नहीं चलेगा तो सब कुछ बेच-बाच दूंगा। जहाँ तक बच्चों का ताल्लुक है वे चाहे नौकरी करें या कारो-बार; लेकिन रहें पाकिस्तान में।'

'भाभी, यह बात तो बड़ी अजीब सी लगती है।'

'अजीब तो है ही, लेकिन यह भी तो सोचिये कि मेरे लिए कितनी परेशानी की बात है। जिस बच्ची की शादी हो जाय वह पाकिस्तान में पहुँच जाय और मैं यहाँ उसकी शकल देखने को तरसती रहूँ। आखिर पाकिस्तान जाना, या पाकिस्तान से बच्चों को यहाँ बुलाना कोई आसान काम तो है नहीं।'

'यह तो ठीक ही है, लेकिन आप भाई जान को समझाती क्यों नहीं ?'

'यही तो मुश्किल है। समझाऊँ तो लड़ने लगते हैं।'

'लगता है कि किसी ने उन्हें उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ा दी है।'

'यह भी हो सकता है लेकिन वैसे तो शुरू से ही उनके कुछ ऐसे ही ख्याल है। मैं तो आपसे कहती हूँ कि आप ही अपने भाई को समझाइये न।'

'भई उनकी औलाद के मामले में कैसे उनसे कुछ कहूँ ? शायद उन्हें बुरा लगे।'

'मुझे उम्मीद नहीं कि आपकी बात का वह बुरा मानें। कम से कम उन्हें इस बात का पता तो चल जायगा कि मेरे अलावा दूसरे लोग भी उनकी इस बात को ठीक नहीं समझते।'

'अच्छा, देखिये कभी मौका लगा तो मैं बात करूँगी।'

'हाँ-हाँ मौका देख कर ही बात कीजिये। सोचिये न कि यहाँ हमें अच्छे सा अच्छा रिश्ता मिल सकता है। और बाकी कितनी सहूलियत रहेगी।'

जुबेदा की अम्मी ने होशियारी से काम लेते हुए हमीद का कुछ जिकर ही नहीं किया। इतनी बात तो उनकी समझ में आ गई कि

हमीद की मुमानी उसके रास्ते की अड़चन नहीं बन सकती। उन्होंने इस बात का भी अनुभव कर लिया कि उन लोगों ने अभी तक हमीद के बारे में नहीं सोचा था। शायद इसका कारण यही हो कि वे समझते हों कि हमीद किसी ज्यादा पढ़ी-लिखी और फैशनेबुल लड़की से शादी करना पसन्द करेगा और उनकी सीधी-सादी शकीला उसे पसन्द न आयेगी।

इधर यह बातचीत चल रही थी, उधर शकीला और जुबेदा रसोई घर में बैठी चाय तैयार कर रही थीं और बातें भी कर रही थीं। शकीला इस बात से खुश थी कि वे उसकी रिश्ते की बात करने आई हैं या इसी सिलसिले में उसकी अम्मी का दिल टटोलने आई हैं। शकीला जितनी शकल की खूबसूरत थी उतन ही मन की भी खूबसूरत थी। वह उन लाखों हिन्दुस्तानी लड़कियों की तरह ऊँचे चरित्र की लड़की थीं जो जीवन में एक ही मर्द को अपनाती हैं, और फिर उसके सिवा उन्हें कोई अच्छे सा अच्छा और अमीर से अमीर पति भी मिले तो वे उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखतीं, क्योंकि वे अपने दिल, शरीर और विचारों को बहुत ही पवित्र मानती हैं। बड़े भाग्यवान होते हैं वे मर्द जिन्हें ऐसी लड़कियाँ पत्नी रूप में मिलती हैं। जिस रोज अन्धेरे में हमीद के ओंठों ने पहली बार उसके कुँआरे ओंठों को छुआ, तो उसी दिन उसने अपना दिल, अपनी आत्मा और अपनी पवित्रता को हमीद के कदमों में डाल दी थी।

जुबेदा ने शकीला के मन की दशा का अनुमान लगाकर कहा—'मुमानी जान और अम्मी क्या बातें कर रही होंगी?'

'मुझसे पूछती हैं?'

जुबेदा ने देखा कि शकीला का चेहरा शर्म से गुलाबी सा हो गया है। वह बोली—'क्या तुम नहीं बताना चाहतीं?'

'मैं क्या बताऊँ यह सब आप ही की तो शरारत है। जभी तो उस विषय पर बातें शुरू हो गई।'

शब्द 'शरारत' का प्रयोग करके शकीला खुद ही परेशान हो उठी। उसने महसूस किया कि उसे इस तरह नहीं कहना चाहिए था। लेकिन मुँह से निकला हुआ शब्द धनुष से छूटे हुये बाण की भाँति होता है जिसे लौटाया नहीं जा सकता।

जुबेदा ठहरी हुई तबियत की लड़की थी, इसलिए उसे जल्दी से शकीला की कही हुई किसी बात पर क्रोध नहीं आ सकता था परन्तु फिर भी उसने माथे पर बल डालकर शकीला को सताने के लिए कहा—'अच्छा, तो यह मेरी शरारत है? खैर, कोई बात नहीं। आगे मैं इस बात का ख्याल रखूंगी कि फिर मुझसे ऐसी शरारत करने की भूल न हो।'

शकीला जुबेदा के झूठे क्रोध को नहीं समझ सकी, वह तुरन्त ही बोली—'नहीं आपा, कभी ऐसा सोचना भी नहीं। मैं तो यह कहना भी नहीं चाहती थी, न जाने कैसे मेरे मुँह से यह लफ्ज़ निकल गया।'

जुबेदा ने उसे और चिढ़ाने के लिए कहा—'क्यों झूठ बोलती हो? यह क्यों नहीं कहती, कि मेरे मन की बात मुँह पर आ गई।'

शकीला ने दोनों हाथों से अपने दोनों कान छूते हुए कहा—'मेरी लाखों बार तोबा। अल्लाह पाक की कसम, मेरे दिल में यह बात हरगिज नहीं थी।'

जुबेदा ने बात बनाते हुए कहा—'दिल की बात तो दिल खुद ही जानता है, मैं उसमें झाँक कर देख तो नहीं सकती। हाँ, जो मेरे कानों ने सुना उसका तो यकीन करना ही पड़ता है।'

इस पर शकीला ने अपने दोनों हाथ जुबेदा के कन्धों पर रख दिये

और भर्रायी हुई आवाज में बोली—'मुझे माफ कर दो आपा, मेरी अच्छी आपा। अगर आपने मुँह मोड़ लिया तो फिर आपकी शकीला की जल्दी ही कब्र खुद जायगी।'

इतना सुनते ही जुबेदा ने शकीला को गले से लगा लिया। उसने देखा कि शकीला की आँखों से आँसू बह रहे थे और वह सिसकियाँ भर रही थी। जुबेदा ने अपने दुपट्टे से उसके आँसू पोछते हुए कहा—'अरी। पगली कहीं की। इतना भी नहीं समझती कि मैं मजाक कर रही हूँ, तुमसे छेड़-छाड़ कर रही हूँ। अरी मैं पक्का इरादा किये हुए हूँ कि तुम्ही को अपनी भाभी जान बना कर घर में ले जाऊँगी। अच्छा जल्दी करो, सब कुछ तो तैयार हो गया है, चलो चाय लेकर चलें।'

पाँच

हमीद कच्छ का चक्कर लगा कर बड़ौदा लौट आया था। शायद उनके अफसर का पहले यही ख्याल था कि उसे कच्छ के रन में भेज दिया जाय परन्तु बाद में और ज्यादा जरूरी काम के लिए उसे वापस बुला लिया गया।

बड़ौदा में उसके कुछ ऐसे मित्र भी थे जो फौज में नहीं थे। उन्हें यह जानने की बड़ी उत्सुकता हो रही था कि कच्छ के रन में कैसी लड़ाई हुई। जितने मुँह उतनी बातें। जब कभी शहर के किसी रेस्टोरेण्ट या क्लब में उन नागरिक दोस्तों से मुलाकात हो जाती, या वे उसके पास चले आते, तो इसी विषय पर बात-चीत शुरू हो जाती। वे कुरेद-कुरेद कर प्रश्न करते और हमीद बिना बात को बढ़ाये उचित उत्तर दे देता परन्तु उनकी तसल्ली न होती थी। उनमें से एक रईस ने कह दिया—'अजी न जाने क्या बात है, हिन्दुस्तानी फौज हर जगह मार खाती है। मालूम होता है कि संसार में सबसे ज्यादा कमजोर सिपाही हमारे ही यहाँ हैं।'

हमीद आखिर फौजी अफसर था। उसको इस बात पर बहुत गुस्सा आया, परन्तु वह गुस्से को पीकर गम्भीर स्वर में बोला—'आखिर आप यह कैसे कह सकते हैं? जरा मुझे भी तो बताइये।'

'अजी इसमें बताने की क्या बात है ? जहाँ लड़ाई हुई वहीं हमारी सेनाएँ पिटीं। कश्मीर में अब तक पाकिस्तान काफी बड़े भाग पर अपना कब्जा जमाये बैठा है। चीन ने लद्दाख और नेफा में हमारी सेना को पीछे हटा दिया। अब कच्छ के रन में भी यही सब कुछ देख रहे हैं। पाकिस्तानियों ने कंजरकोट पर कब्जा जमा लिया है और हमारी सेना के सिपाही एक बार फिर पीछे हट आये हैं।'

हमीद कड़ुवी हँसी हँस कर बोला—'आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। मुझे आपसे इस बात की आशा नहीं थी। अगर आपका ज्ञान इतना ही अधूरा है, तो मैं आपको असली बात बताता हूँ। आपको मालूम होना चाहिए कि पाकिस्तानियों ने कश्मीर पर उस वक्त हमला बोला जब कश्मीर पर वहाँ के राजा राज्य करते थे। बाद में उन्होंने कश्मीर की रियासत भारत में विलय कर दी, तभी हमारी सेना कश्मीर में पहुँची। उस समय तक पाकिस्तानी कश्मीर के अन्दर तक घुस आये थे और श्रीनगर के शहर तक पहुँच चुके थे। ऐसे मौके पर भारतीय सेना ने वहाँ पहुँच कर उनके छक्के छुड़ा दिये। यहाँ तक कि पाकिस्तानियों को दुम दबा कर भागना पड़ा। यदि नेहरू जी सेना को न रोकते तो हमारे सिपाही सारा कश्मीर खाली करा लेते। नेफा में जो कुछ हुआ उसे अच्छी तरह जानते हुए भी आप शिकायत कर रहे हैं। आप मुझे इतना बताइये कि यदि आप मुझे अपना मित्र या अपना भाई समझते हों, और मैं आपको किसी सुनसान जगह ले जाकर चुपके से आपके पीठ में छुरा भोंक दूँ, तो क्या इसका यह मतलब होगा कि आपका कायर थे या दुर्बल थे इसीलिए मारे गये ? बस, यही नेफा में हुआ। हम सदा से चीनियों को अपना भाई मानते रहे, फिर हमारा उनसे समझौता भी हो चुका था कि हम एक दूसरे के देश में नहीं घुसेंगे।

बाद में हमने तो अपने कर्त्तव्य का पालन किया परन्तु चीनियों ने नहीं किया। नेफा और लद्दाख की सीमाओं पर हमने कभी सोचा भी नहीं था कि चीनी हम पर हमला बोल देंगे। इस धोखे में हमने वहाँ बचाव का कोई खास प्रबन्ध नहीं किया था, लेकिन चीनियों ने पूरी तैयारी के साथ हमला बोल दिया। अब रही कच्छ की बात। तो यहाँ भी नेफा से मिलती-जुलती ही घटना हुई। हमारे ज्यादा से ज्यादा डेढ़ सौ सिपाही थे और पाकिस्तान के साढ़े तीन हजार। जिसका मतलब यह हुआ कि हमारे एक सिपाही को अकेले कम से कम तेइस पाकिस्तानी सिपाहियों का मुकाबला करना पड़ा। इसके अलावा पाकिस्तानी सेना के पास अमरीकी टैङ्क और दूसरे भारी शस्त्रास्त्र भी थे। अच्छा अगर आपको अकेले छोड़ दिया जाय तो आप कितने आदमियों का मुकाबला कर सकते हैं? मेरे ख्याल में आपके लिए एक ही मजबूत आदमी काफी होगा।'

इस पर सब लोग हँसने लगे। एतराज करने वाले सज्जन की समझ में भी यह बात आ गई और उन्होंने कहा—'कैप्टन साहब, आपकी यह बात तो हमने मान ली, लेकिन यह तो बताइये कि हम लोग हर जगह ऊँघते क्यों पाये जाते हैं? क्या हमारी सरकार का यह कर्त्तव्य नहीं है कि वह अपनी सीमाओं के बचाव का पूरा प्रबन्ध कर रखे और······'

'देखिये मैं एक सिपाही हूँ। आपकी इस बात का उत्तर देना मेरा काम नहीं है। देश की नीति बनाना मेरा काम नहीं है। किस देश से लड़ना है और कब लड़ाई छेड़नी है और कब नहीं छोड़नी; यह सब मेरा काम नहीं है। हमारे देश में लोकतन्त्र का राज्य है। यहाँ के हर रहने वाले को एतराज करने का हक है, अगर आपको किसी बात पर एतराज

है तो आप उसके ख़िलाफ आवाज उठाइये, नुक्ताचीनी कीजिये, लीडरों से मिलिये। हाँ, जहाँ तक लड़ने का ताल्लुक है वह एक सिपाही का धर्म है। हम तो अपने देश के लिए लड़ना ही जानते हैं।'

एक और सज्जन बोले—'कैप्टन साहब आपने जो बातें कहीं हैं वे सच हैं और फिर यह भी तो सोचने की बात है कि कच्छ में हमारे थोड़े से सिपाहियों ने भी पाकिस्तानियों के दाँत खट्टे कर दिये और उन्हें काफी हानि पहुँचायी।'

इतने में ही कैप्टन जॉन वहाँ आ निकला और उसने कैप्टन हमीद के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—'हलो हमीद।'

'हलो आओ बैठो भई।'

कैप्टन ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—'एक खुशखबरी सुनाऊँ ?'

'खुशखबरी ?'

'तुम हफ्ते भर के लिए बम्बई जा रहे हो। शायद खण्डाला जैसी सुन्दर जगह पर भी रुकने का कुछ मौका मिले।'

'सच ?'

'यस, माई ब्वॉय, वहाँ तुम्हें कुछ दफ्तर का काम भी रहेगा और घूमने-फिरने की फुर्सत भी खूब रहेगी।'

'क्या यह बिल्कुल ठीक खबर है ?'

'बिल्कुल ठीक'

'कब तक जाना पड़ेगा ?'

'बस यही आठ-दस दिन तक।'

एकाएक हमीद ने घड़ी की ओर देखा और बोला—'माफ कीजिये अब मुझे लौटना होगा।'

इतना कह कर हमीद सब मित्रों की आज्ञा लेकर अपने कमरे में लौट गया। उसका सारा सामान बिखरा हुआ था।

उसका चपरासी उसके दफ्तर जाने पर कमरा साफ कर देता था, बिस्तर को झाड़-पोंछ कर फिर से बिछा देता था। परन्तु आज सारा सामान वैसे ही बिखरा पड़ा था जैसे वह छोड़ कर गया था। यह देख कर उसे बड़ा क्रोध आया, इतने में चपरासी भी आ गया। उसे देखते ही वह उस पर बरस पड़ा,—'आज तुमने कमरे की सफाई क्यों नहीं की ? देखते नहीं, कमरे का कितना बुरा हाल हो रहा है ?'

चपरासी हाथ जोड़ कर बोला—'हजूर, आज आप कमरे की चाबी देना भूल गये थे। मैं जब बाहर निकला तो आप कमरा बन्द करके दफ्तर को जा चुके थे। फिर मैं दफ्तर गया तो पता चला कि आप मोटर-साइकिल पर कहीं बाहर चले गये हैं।'

हमीद को याद आया कि आज जल्दी में वह सचमुच ही दरवाजा बन्द करके चला गया था। अपनी गलती महसूस करते हुए उसने कहा— 'हाँ, अब याद आया। मुझे जल्दी में कुछ ख्याल ही नहीं रहा। अच्छा अब तुम कमरा ठीक कर दो। कोई चिट्ठी तो नहीं आई ?'

'जी हजूर, आई थी, मैंने दरवाजे के नीचे से अन्दर डाल दी थी।'

आज हमीद बाहर के कामों में व्यस्त रहा इसलिए दफ्तर में आई डाक का भी उसे पता नहीं चला। लिफाफा नीचे फर्श पर दीवार के निकट पड़ा था। चपरासी ने उठाकर दिया तो वह बोला—'अच्छा, मैं बाहर लॉन में खड़ा हूँ, जितनी देर में मैं चिट्ठी पढ़ूँ, उतने देर में तुम कमरे की सफाई कर दो।'

इतना कह कर वह बाहर हरी-भरी घास पर जाकर खड़ा हो गया। लिफाफा देखते ही वह पहचान गया कि पत्र उसकी आपा ने

भेजा था लिफाफा खोल कर उसने चिट्ठी पढ़नी शुरू की। लिखा था—

'डियर हमीद,

जब से तुम गये हो, तब से हमें एक चिट्ठी भी नहीं लिखी। क्या हमें दो लाइनें लिखने की भी फुर्सत नहीं मिलती।

अच्छा अब मैं तुम्हारा ज्यादा समय खराब नहीं करूँगी। तुम्हारे कहने के अनुसार मैं और अम्मी मामू जान के घर गये थे। दोपहर का वक्त था, उस वक्त मामू जान तो घर पर नहीं थे, इसीलिए मुमानी जान से मुलाकात हुई। हम चाहते भी यही थे। अम्मी ने उन्हें शकीला के रिश्ते के बारे में टटोला तो पता चला कि शकीला ने जो बात कही थी वह ठीक ही थी। जहाँ तक मुमानी जान का ताल्लुक है उन्हें मामू जान की यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं। वह तो खुद बहुत परेशान हैं क्योंकि शकीला की शादी पाकिस्तान में हो गई तो वह अपनी बेटी का मुँह तक देखने के लिए तरस जायेंगी। वह तो यही चाहती हैं कि शकीला की शादी नजदीक में ही हो ताकि वह जब चाहें अपनी बेटी से मिल सकें।

एक अच्छी बात और भी है। वह यह कि मामू जान शकीला की शादी जल्दी नहीं करेंगे। फिर भी इस बात पर तुले हुए हैं कि शकीला का रिश्ता पाकिस्तान के ही किसी लड़के से करूँगा। अब हमें इस बात की कोशिश करनी होगी कि उनके विचार बदल जायें। अब आगे जैसा तुम लिखोगे वैसा ही किया जायगा।

लो सारी चिट्ठी इन्हीं बातों में हो गई। अम्मी और अब्बा की तरफ से तुमको प्यार पहुँचे। इस चिट्ठी का जवाब जल्द ही देना।

अगर तुमने चिट्ठी का जवाब जल्दी न दिया तो फिर याद रखना कि मैं भी तुम्हारे काम में कुछ मदद नहीं करूँगी ।

अच्छा, अब रुख्सत ।

तुम्हारी बहन,
जुबैदा ।'

हमीद ने चिट्ठी पढ़कर जेब में रखी ही थी कि लॉन के दूसरे सिरे पर कैप्टन सिद्धू दिखाई दिया । उसने दूर से ही हाथ हिलाया और पूछा—'कहो हमीद, आज सारा दिन कहाँ रहे ?'

'जरा बाहर एक काम पड़ गया था, इसलिए इधर-उधर भागता फिरा ।'

इधर-उधर की बातें करते हुए सिद्धू उसके निकट पहुँच गया । हमीद ने पूछा—'भई, आज जॉन बता रहा था कि मुझे कुछ दिनों के लिए बम्बई भेजा जा रहा है क्या यह सच है ?'

'हाँ भई, बिल्कुल सच । तुम्हें आठ-दस दिन के अन्दर-अन्दर जाना पड़ेगा ।'

'अच्छा, तो बात पक्की समझनी चाहिए । लेकिन भई ठीक-ठीक बताओ, नहीं तो मेरा काम गड़बड़ा जायगा ।'

सिद्धू ने शरारत से पूछा—'क्यों, क्या वहाँ किसी लड़की से मिलना है क्या ?'

'हाँ कुछ ऐसा ही समझो ।'

'तो फिर बेफिक्र रहो, तुम्हारा काम बन जायगा । अगर तुम उस लड़की को अपने आने की खबर भेजना चाहते है तो बेशक भेज दो ।'

हमीद हँसा फिर वे दोनों दोस्त इधर-उधर की दो-चार बातें करके एक-दूसरे से विदा हो गये । हमीद ने देखा कि चपरासी कमरे की सफाई कर चुका था, चुनांचे वह फिर कमरे में चला गया ।

हमीद जब कमरे में पहुँचा तो उसने देखा कि चपरासी फर्श पर भाड़ू देने के बाद बिस्तर बिछा चुका था, और अब भाड़न से फर्नीचर की धूल साफ कर रहा था। थोड़ी ही देर बाद जब वह अपना काम समाप्त कर चुका तो उसने कहा—'हजूर और कोई काम करना है ?'

हमीद ने दाँये-बाँये देखा, फिर उसकी नजर खुले हुए सिगरेट केश पर पड़ी जिसमें केवल दो ही सिगरेट बचे थे। उसने चपरासी से कहा—'मैं चिट लिख देता हूँ, कैण्टीन से चार पैकेट सिगरेट ले आओ।'

चपरासी चिट लेकर सिगरेट लेने के लिए चला गया। हमीद ने आराम कुर्सी पर अधलेटे होकर पाँव सामने की कुर्सी पर रख दिये और एक सिगरेट सुलगा कर धुआँ उड़ाने लगा।

उस समय वह सोच में डूबा हुआ था। अभी तक आपा के पत्र के शब्द उसके दिमाग में गूँज रहे थे। वैसे वह पत्र पढ़कर उसे कुछ इत्मिनान हुआ था, क्योंकि इतना तो उसे पता चल गया कि कम से कम उसकी मुमानी जान पाकिस्तान में शकीला की शादी नहीं करना चाहती थीं। दूसरी बात जिससे उसे इत्मिनान था यह थी कि मामू जान बेटी की शादी जल्दी नहीं कर रहे थे। डर सिर्फ इस बात का था कि कहीं रिश्ता तय न हो जाय। बस यही एक समस्या थी जिसे हल करना था।

सोचते-सोचते एकाएक उसके मन में ख्याल आया कि क्यों न आपा को बम्बई बुला लिया जाय। उसके साथ शकीला भी चली आयेगी और वे तीनों बम्बई, खण्डाला और पूना में मजे के दिन व्यतीत कर सकते थे। सवाल केवल यह था कि मामू जान शकीला को आपा के साथ बम्बई भेज देंगे या नहीं। परन्तु फिर भी एक चिट्ठी लिख देने में क्या हर्ज है। इतने में ही चपरासी सिगरेट लेकर आ गया और हमीद

आराम कुर्सी से उठकर मेज के निकट पड़ी कुर्सी पर बैठ गया। दो मिनट सोचने के बाद उसने निम्न चिट्ठी लिखी :—

'डियर आपा,

तुम्हारी चिट्ठी मिली, जिसे पढ़कर पूरा हाल मालूम हुआ। देख लो मैं तुम्हारे कहने के मुताबिक फौरन ही पत्र का उत्तर दे रहा हूँ। कुछ ही देर पहले तुम्हारी चिट्ठी मिली, उसे पढ़कर थोड़ी देर सोचता रहा और अब लिखने बैठ गया।

सबसे पहले तो मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ कि तुम मेरे इस काम में इतनी दिलचस्पी ले रही हो और मेरी इतनी मदद कर रही हो। मेरी अल्लाह से यही दुआ है कि सब भाइयों को तुम्हारे जैसी आपाएँ मिलें।

तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर मुझे काफी इत्मिनान भी हुआ। अभी-अभी मैं इसी के बारे में सोच रहा था। इत्मिनान की एक बात तो यह है कि मुमानी जान शकीला की शादी पाकिस्तान में बिल्कुल नहीं करना चाहतीं। यह ठीक है कि उनके घर में ज्यादातर मामू जान की ही मानी जाती है, लेकिन फिर भी हम यह कह सकते हैं कि मुमानी जान के इस विरोध से हमारा रास्ता कुछ आसान हो जाता है। अगर मुमानी जान के भी वही ख्याल होते जो मामू जान के हैं तो फिर हमारे रास्ते में एक बहुत बड़ी दीवार खड़ी हो जाती।

अच्छा, अब एक बहुत जरूरी बात सुनो। मुझे पता चला है कि आठ-दस रोज तक किसी काम से मुझे बम्बई और पूना जाना पड़ेगा। वहाँ कम से कम एक हफ्ता लग जायगा। एकाएक मुझे ख्याल आया कि अगर तुम शकीला को लेकर वहाँ पहुँच सको तो कितना मजा आये। हम लोग सात-आठ दिन बिल्कुल इकट्ठे गुजार सकते हैं। जहाँ

तक तुम्हारे आने का सम्बन्ध है, जब तुम असली बात बता दोगी तो न अम्मी रोकेंगी और न अब्बा जान। लेकिन शकीला का क्या इन्तजाम होगा ?

प्यारी आपा ! इसकी तिकड़म तो अब तुम ही लड़ाओ। इतना तो तुम भी जानती हो कि मामू जान नये विचारों के आदमी हैं, यह बात अलग है कि उनके दिमाग में पाकिस्तान में रिश्ता करने की झख घुस पड़ी है। कुछ कठिनाई भी हो सकती है लेकिन यह काम नामुमकिन नहीं है। इतना ख्याल रहे कि उन्हें इस बात का पता न चलने पाये कि मैं भी बम्बई पहुँच रहा हूँ।

अगर मुझे पक्का पता चल गया कि मैं बम्बई जा रहा हूँ तो मैं तुम्हें तार भेज दूँगा। अम्मी को सारी बात बता देना, लेकिन उन्हें ताकीद कर देना कि मुमानी जान को इसके बारे में, खास तौर पर मामू जान को, कुछ पता न चलने पाये।

मैंने तुम्हें अभी से खबर भेज दी है ताकि तुम इतने दिनों में इसका कुछ इन्तजाम कर सको।

अब्बा और अम्मी की खिदमत में आदाब अर्ज करता हूँ। बाकी भाई-बहनों को प्यार।

तुम्हारा भाई,
हमीद।'

छः

जब हमीद का यह पत्र आपा के पास पहुँचा तो उस वक्त शकीला भी उसके घर में आई हुई थी। सुबह के दस बजे थे, जुबेदा ने शकीला को घर पर खाने-पीने के लिए बुला रखा था। जब से उसे शकीला और हमीद के प्रेम के बारे में निश्चित रूप से पता चला था तभी से उसने शकीला से अपने सम्बन्ध बढ़ा लिये थे। अक्सर या तो वह शकीला के घर चली जाती या शकीला को अपने घर बुला लेती। उनके मेल-जोल पर तो कोई रोक-टोक नहीं थी इसलिए वे आपस में खुल्लम-खुल्ला बात-चीत कर सकती थीं।

शकीला अपने घर ही में नाश्ता करने के बाद जुबेदा के पास चली आई थी। अब उसे दोपहर का खाना खाकर और शाम की चाय पीकर ही वापस जाना था। वे दोनों खुश थीं कि आज उनका समय खूब अच्छी तरह कट जायगा।

वे दोनों कमरे में बैठी बात-चीत कर रही थीं कि इतने में जुबेदा के अब्बा जान ने आवाज दी। जुबेदा भागी हुई चली गई, और जब लौटकर आई तो उसके हाथ में हमीद का लिफाफा था। उसने शरारत से लिफाफा हाथ में हिलाकर शकीला की ओर देखा।

शकीला यह तो समझ गई कि वह पत्र हमीद का ही है परन्तु

इतना वह भी जानती थी कि वह उसके नाम का नहीं हो सकता, क्योंकि यह तो असम्भव था कि अपने घर पर वह उसके नाम का लिफाफा भेज दें।

जुबेदा ने चंचलता से कहा—'बोलो तो, यह किसका लिफाफा है ?'

'कागज का।'

'अरी लिफाफा तो कागज का है, लेकिन यह तो बताओ कि आया कहाँ से ?'

'मैं क्या जानूँ ?'—शकीला ने बुद्धू बनकर उत्तर दिया।

'बस समझ लो।'

'आप ही समझा दो न ?'

'बस उसी का है।'

'किसका ?'

'तुम्हारे उसका।'

अब शकीला ने शर्म से चेहरा दोनों हाथों में छिपा लिया। जुबेदा बोली—'बस, शर्मा गई क्यों ?'

शकीला ने पल भर चुप रह कर मुँह छिपाये-छिपाये पूछा—'क्या लिखा ?'

'अभी मैंने पढ़ा ही कहाँ है ?'

'तो पढ़ डालिये ना।'

'अच्छा, पढ़ती हूँ।'

यह कह कर जुबेदा ने लिफाफा फाड़ा और चुपचाप पत्र पढ़ने लगी। शकीला को उलझन हो रही थी कि न जाने पत्र में क्या लिखा था। आखिर उससे न रहा गया, बोली—'इसमें मेरे लिए कोई हाल नहीं है क्या ?'

'नहीं ।'

शकीला चुप रह गई ।

जुबेदा फिर बोली—'लेकिन निश्चिन्त रहो, सारे पत्र में तुम्हारा ही जिक्र है ।'

शकीला का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा । जुबेदा ने उसके पास बैठकर धीरे-धीरे सारा पत्र पढ़कर सुना दिया । तब वह बोली—'क्यों शकीला यह सुझाव तो बहुत अच्छा है ।'

शकीला ने 'हाँ' में सिर हिला दिया ।

जुबेदा फिर बोली—'सच, कितना मजा आयेगा—हम, तुम और तुम्हारे वह ।'

शकीला फिर झेंप गई ।

जुबेदा ने शकीला के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—'देखो शकीला ऐसे काम नहीं चलेगा । अब तो कुछ न कुछ इन्तजाम करना ही पड़ेगा । मेरे जाने में तो कुछ अड़चन नहीं होगी परन्तु प्रश्न तो यह है कि तुम्हें कैसे साथ ले जाऊँ ? मामला बड़ा टेढ़ा है फिर भी कोई न कोई तरीका निकालना पड़ेगा, क्यों क्या ख्याल है तुम्हारा ?

'मेरा क्या ख्याल होगा ? आप जो चाहें करें ।'

जुबेदा कुछ सोचने लगी । वह अपने माथे को अँगुलियों से बजाते हुए बोली—'हाँ शकीला, यह मौका तो बहुत अच्छा लगा है, इसकी कोई तरकीब सोचनी पड़ेगी ।'

शकीला ने कहा—'मुझे तो कोई ऐसी तरकीब सूझ नहीं रही है । यह काम तो आप ही को करना होगा ।'

'हाँ भई, मैं तो मानती हूँ कि मुझी को करना पड़ेगा । अभी सिर खपाने से क्या फायदा ? इधर-उधर की बातें करते हैं, बाद में सोच लेंगे ।'

शकीला के मुँह से बेअख्तियार निकल गया—'इस काम में भ
इतनी सुस्ती ?'

यह सुनकर जुबेदा चमकी और फिर बोली—'तुम्हें इतनी उत्सुकता
हो रही है क्या ?'

शकीला शरमा गई। तब उसने यह विषय बदलकर इधर-उधर की बातें शुरू कर दीं। इतने में उन्हें औरतों की आवाजें सुनाई दीं जो शायद जुबेदा की अम्मी से मिलने आयी थीं। बातें करते-करते एका-एक जुबेदा ने कहा—'जरा चलकर देखूँ तो सही कि कौन आई हैं।'

इतना कहकर जुबेदा वहाँ से चली गई। जाकर देखा कि उसकी एक पुरानी सहेली जिसकी शादी डेढ़ साल पहले हो चुकी थी, अपनी माँ के साथ उससे मिलने आई थीं। उसका नाम रेखा था। जुबेदा को देखते ही वह बोली—'तुम कहाँ घुसी बैठी थीं ? इतनी देर से आये बैठे हैं, जनाब का कुछ पता ही नहीं।'

जुबेदा ने पहले तो रेखा की माँ की ओर देखते हुए नमस्ते की और फिर अपनी सखी से लिपटकर बोली—'झूठ क्यों बोलती हो रेखा, मैंने अभी-अभी आवाज सुनी तो चली आई। तुम्हें चाहिए था कि आते ही मुझे बुलवा लेतीं।'

जुबेदा की अम्मी बोलीं—'तुम क्यों ख्वामख्वाह परेशान होती हो, यह तो अभी-अभी आकर बैठी हैं।'

जुबेदा ने कहा—'मैं तो जानती हूँ, इनका दिल हमसे मिलने को थोड़े चाहता है। हम इनके यहाँ जायें तो जायें, परन्तु यह हमारे पास कभी नहीं आतीं।'

रेखा हँस कर बोली—'जब तुम्हारी शादी हो जायगी और तुम दुलहन बन जाओगी, तब तुम्हें पता चलेगा। अभी क्या है ? मौज करती हो। अपनी मर्जी से सोती हो, अपनी मर्जी से जागती हो।'

जुबेदा रेखा के कान के पास अपना मुँह ले जाकर फुसफुसाई—'मालूम होता है कि जीजा जी तुम्हें रात भर परेशान करते हैं। न तुम्हें मर्जी से सोने देते हैं, और न जागने देते हैं। घबराओ नहीं, अब जीजा जी मिलेंगे तो मैं उनसे सिफारिश कर दूँगी कि वह तुम्हें इतना परेशान न किया करें।'

'धुत्त !' इतना कहकर रेखा ने प्यार से जुबेदा को जरा परे धकेल दिया।

जुबेदा की फुसफुसाहट तो किसी की समझ में नहीं आयी और रेखा की माता जी अपनी ही धुन में बोलीं—'अरी बेटी, यह तो आज भी न आ पाती। हमारे दामाद की तबदीली जबलपुर से बम्बई में हो गई है, दो-चार दिनों में इसे बम्बई जाना होगा, इसीलिए तो मैंने कहा कि तुम्हें जिन-जिन से मिलना है अभी मिल लो। फिर सफर की तैयारी में फ़ुर्सत हो या न हो।'

एकाएक ही जुबेदा को कुछ सूझा। उसे यूँ लगा जैसे खुदा ने उसकी दुआ सुन ली हो। कुछ सोचकर उसने रेखा का हाथ थामा और उसे उठाते हुए बोली—'आओ रेखा, हम कमरे में चल कर बातचीत करें। अम्मी लोगो को अपनी ही बातें करने दो।'

रेखा झट उठकर उसके साथ हो ली। लेकिन अपने कमरे की ओर ले जाने के बजाय जुबेदा उसे दूसरी तरफ ले गई, और बोली—'देखो रेखा, मैं तुम्हें अपने मामू की लड़की शकीला से मिलाने जा रही हूँ।'

इसके बाद उसने रेखा को सारी बात समझा दी। उसे बता दिया कि हमीद और शकीला का आपस में प्रेम है और वे शादी करना चाहते हैं। जुबेदा ने यह नहीं बताया कि इस पर क्या एतराज था। यहाँ तक उसे समझा-बुझा कर जुबेदा बोली—'चलो मेरे कमरे में। बेचारी शकीला अकेली बैठी बोर हो रही होगी।'

इतनी बातें हो चुकीं तो वे दोनों शकीला के पास जा पहुँचीं। तब जुबेदा ने उन दोनों का परिचय कराते हुए शकीला से कहा—'देखो यह मेरी पुरानी सहेली रेखा है। मैंने इसे सारी बात बता दी है, यानी इसे अपनी भेदिया बना लिया है। इसलिए अब जो बातें हों उन्हें सुन कर तुम खामखा शरमाना नहीं।'

कोशिश करने पर भी शकीला अपने आपको रोक नहीं सकी, और शरम की एक लहर उसके चेहरे पर फैल गई। अब जुबेदा ने रेखा के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—'सुनो रेखा, तुम्हारे आने से पहले हम दोनों अजीब मुसीबत में फँसी हुई थीं।'

'कैसी मुसीबत ?'

'वही तो बताने जा रही हूँ। यूँ लगता है जैसे अल्लाह ने तुम्हें खासतौर पर हमारी मुसीबत दूर करने के लिए भेजा है। अच्छा यह तो बताओ कि बम्बई में तुम्हें रहने के लिए मकान मिल गया है क्या ? वैसे तुम्हें इस सम्बन्ध में कोई दिक्कत तो नहीं होनी चाहिए क्योंकि हमारे जीजा तो काफी बड़े सरकारी अफसर हैं।'

'उन्होंने लिखा है कि हमारे रहने के लिए काफी अच्छी जगह मिल गई है लेकिन तुम यह सब क्यों पूछ रही हो ?'

'असल में बात यह है कि हम दोनों तुम्हारी मेहमान बनना चाहती हैं।'

यह सुनकर मारे खुशी के रेखा का चेहरा खिल उठा, बोली—'सच कहती हो जुबेदा ? या मजाक कर रही हो ?'

'मजाक नहीं है। अरी, हम तो गहरी उलझन में पड़ी हुई थीं, भला इस समय हमें मजाक कैसे सूझ सकता है ?'

'तब तो बड़ी खुशी की बात है, तुम दोनों आओ और मेरे पास कम से कम एक महीना भर रहो।'

'न बाबा । महीना भर रहने की फुर्सत नहीं है । अब तुम असली बात सुनो । हमीद की बड़ौदा से चिट्ठी आई है कि वह आठ-दस दिन तक बम्बई जा रहा है और वह चाहता है कि मैं और शकीला उसे वहाँ मिले । तुम्हारे जरिये से हमारा यह काम बन सकता है, अच्छा यह तो बताओ कि तुम कब जा रही हो बम्बई को ?'

'मैं आज से चौथे दिन यहाँ से चल दूँगी ।'

'इसका मतलब यह है कि हमें कुछ दिन पहले ही वहाँ पहुँचना पड़ेगा । जब तक हमीद नहीं आयेगा, हम तुम्हारे पास रहेंगी, लेकिन उसके आने पर हम उसके पास चल देंगी । देखो हमें अपने पास रहने पर जोर मत देना । हाँ, अब मैं यह चाहती हूँ कि तुम हमारी अम्मी से यह कहो कि वह शकीला को और मुझको तुम्हारे साथ भेज दें । मैं भी तुम्हारी हाँ में हाँ मिला दूँगी । इस तरह हमारा काम बन जायगा ।'

रेखा बोली—'मैं तो तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ, यह तो बिल्कुल मामूली बात है ।'

जुबेदा उठकर खड़ी हो गई, फिर शकीला और रेखा के बाजू थाम कर बोली—'आओ शकीला तुम भी चलो और हाँ, रेखा, तुम थोड़ी देर के बाद अपने आप ही यह सुझाव रखना कि मैं तुम्हारे साथ चली चलूँ ।'

'बहुत अच्छा ।'

इसके बाद रेखा, जुबेदा और शकीला तीनों वहाँ पहुँचीं जहाँ बात-चीत चल रही थी । थोड़ी देर ये लोग गपशप में भाग लेती रहीं, फिर एकाएक ही मौका पाकर रेखा ने कहा—'जुबेदा बहन तुम मेरे साथ बम्बई चलो न ।'

जुबेदा—'सुझाव तो बहुत अच्छा है। क्यों अम्मी, आप तो कई बार बम्बई की सैर कराने की बातें करती रहती हैं। अब अगर मैं रेखा के साथ चली जाऊँ तो कैसी रहेगी ?'

जुबेदा की अम्मी बोलीं—'बेटी मैं तो मना नहीं करती, लेकिन इसके लिए तो तुम्हें अपने अब्बा जान की इजाजत लेनी पड़ेगी।'

जुबेदा मुँह बना कर बोली—'अब्बा वैसे तो नहीं रोकेंगे, लेकिन शायद बिल्कुल अकेली जाने पर उन्हें कोई एतराज हो।'

अब रेखा ने फिर कहा—'इसका हल तो बड़ा आसान है।'

जुबेदा—'क्या ?'

रेखा—'शकीला को साथ ले चलो न।'

इस पर जुबेदा ने खुश होते हुए कहा—'बात तो ठीक है, लेकिन मामू जान शकीला को इजाजत देंगे या नहीं। क्यों शकीला तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

शकीला ने अपने दुपट्टे के कोने को मरोड़ते हुए कहा—'अब इसमें मैं क्या कह सकती हूँ ?'

जुबेदा—'लेकिन इतना तो बताओ तुम्हें बम्बई चलने में कोई एतराज तो नहीं है ?'

शकीला—'नहीं, मुझे कोई एतराज नहीं है। बल्कि आपके साथ जाकर तो बहुत मजा आयेगा। बम्बई जैसा शहर देखने को मिल जायगा।'

इस तरह की बातें होती रहीं, और जब रेखा और रेखा की माँ उठकर जाने लगीं तो एक बार फिर रेखा ने कहा—'सुनो जुबेदा, तुम्हें मेरे साथ जरूर चलना होगा। कहीं ऐसा न हो कि तुम बाद में कोई बहाना बनाकर टाल दो।'

जुबेदा बोली—'अरी, मैं तो वहाँ जाने के लिए तुमसे भी ज्यादा बेचैन हूँ, जहाँ तक बन पड़ेगा मैं जरूर चलूँगी।'

जब वे माँ-बेटी चली गई तो जुबेदा ने शकीला को इशारा किया कि वह उसके कमरे में चली जाय, ताकि वह अकेले में अम्मी से बात कर सके।

शकीला चली गई तो जुबेदा ने माँ से कहा—'अम्मी, क्या आप मामू जान से यह कह नहीं सकतीं कि वह शकीला को मेरे साथ बम्बई भेज दें?'

'बेटी, तुम कहती हो तो मैं कोशिश करूँगी।'

'कोशिश नहीं अम्मी, आपको यह काम करना ही होगा। देखिये मैं आपको हमीद की चिट्ठी दिखाये देती हूँ। दरअसल वह बम्बई और पूना वगैरह जाने वाला है। उसी ने लिखा है कि मैं किसी न किसी तरह शकीला को लेकर बम्बई पहुँच जाऊँ।'

जुबेदा की माँ ने कुछ आश्चर्य में आकर पूछा—'अच्छा तो यह बात है। पहले क्यों नहीं बताया मुझे?'

'बताती किस वक्त? अभी-अभी तो चिट्ठी आई है। रेखा के होते हुए मैं इस चिट्ठी का जिकर कैसे कर सकती थी?'

जुबेदा की अम्मी कुछ सोच में डूब गई, फिर बोलीं—'अच्छा तो मैं जाकर भाई जान से बात करूँगी।'

'आप बड़ी अच्छी अम्मी हैं।'

'सभी अम्मियाँ अच्छी होती हैं। क्या करें अपने लड़के की भलाई तो सोचनी ही पड़ती है।'

'अच्छा तो कब चलेंगी मामू जान के घर?'

'आज तो जाना ठीक नहीं, क्योंकि शकीला को बुलाया है, वह

सारा दिन यहीं रहेगी, और शाम को मैं वहाँ पहुँच जाऊँ तो अच्छा नहीं लगेगा। कल के लिए कहो तो हम दोनों चली चलेंगी।'

'लेकिन सारी बात का फैसला सुबह ही हो जाना चाहिए, ताकि हम रेखा और हमीद को खबर भेज सकें, और जाने की तैयारी भी कर सकें।'

'अच्छा तो ठीक है कल ही चलेंगे।

यह सुनकर जुबेदा खुशी के मारे भागती हुई अपने कमरे में पहुँची और बोली—'शकीला, अम्मी ने कहा है कि वह कल तुम्हारे यहाँ चलेंगी और सारी बातें करेंगी। मुझे तो उम्मीद है कि अगर वह जोर देकर कहेंगी तो मामू जान मान जायेंगे।'

'तब तो बड़ी अच्छी बात है।'

उस दिन वे दोनों बड़ी खुश रहीं, सारा दिन चहकती-बोलती रहीं, और शाम को शकीला वापस चली गई।

शकीला ने घर पहुँचकर सोचा कि क्यों न वह अपनी अम्मी से यह बात कर ले। अब्बा से तो कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं हो सकती थी लेकिन अम्मी से तो वह कह ही सकती थी। इससे इतना तो पता चल जायगा कि उसकी अम्मी को इस बात पर कोई एतराज है या नहीं।

इतना सोच कर वह अम्मी के पास पहुँची। अब्बा दूसरे कमरे में बैठे थे इसलिए उसने अम्मी को रेखा वाली बात बताते हुए कहा—'अम्मी, बम्बई देखने को तो मेरा दिल भी बहुत चाहता है। अगर आप मुझे जाने की इजाजत दे दें तो इसी बहाने मैं बम्बई देख आऊँगी।'

अम्मी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—'मुझे तो इस पर कुछ एतराज नहीं, हाँ तुम अपने अब्बा से पूछ लो।'

शकीला ने घबराकर कानों पर हाथ रखते हुए कहा—'मैं ?......

मैं अब्बा जी से कभी नहीं पूछ सकती। उन्होंने एक घुड़की दे दी तो मैं चुप रह जाऊँगी।'

अम्मी धीरे से फुसफुसा कर बोली—'इस वक्त तुम्हारे अब्बा बड़े खुश दिखाई देते हैं। यह उनसे पूछने का बड़ा अच्छा मौका है।'

शकीला कुछ उत्तर भी नहीं दे पाई थी कि इतने में अब्बा उनके कमरे में चले आये। उन दोनों को फुसफुसाते देखकर पूछने लगे—'यह माँ-बेटी आपस में क्या फुसफुसा रही हैं ?'

शकीला की अम्मी हँसकर बोली—'आपकी लाड़ली बेटी दरअसल आपसे कुछ पूछना चाहती है, लेकिन पूछने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही है, जभी तो मेरे कान में फुसफुसा रही है।'

शकीला यह नहीं चाहती थी कि अब्बा के कानों तक यह बात पहुँचे। वह सोच रही थी कि उसकी फूफी दूसरे दिन खुद ही आकर बात-चीत कर लेंगी। वह अम्मी को रोकना चाहती थी। लेकिन रोकते-रोकते उन्होंने बात कह दी, और बेचारी शकीला का हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा। अब्बा ने अम्मी से पूछा—'आखिर ऐसी क्या बात है ?'

'बात सिर्फ इतनी है कि जुबेदा की एक सहेली रेखा है जो इस वक्त अलीगढ़ में अपने माँ-बाप के पास आई हुई है। पहले वह अपने मियाँ के साथ जबलपुर में रहती थी। अब मियाँ का तबादला हो गया है। वह सरकारी अफसर है और अब बम्बई में उसकी ड्यूटी लगी है।'

'यह तुम क्या कहानी ले बैठी हो ? आखिर रेखा और उसके मियाँ से हमें क्या लेना है ?'

'आप बीच ही में तो बात काट देते हैं, मुझे पूरी बात तो कह लेने दीजिये।'

'लेकिन छोटी सी बात को तुम यों लटकाती हो कि सुनते-सुनते तबियत ऊब जाती है।'

शकीला मन ही मन में डरी, कहीं अब्बा और अम्मी लड़ने न लगें। लेकिन उसकी अम्मी को ऐसी बात सूझी कि झगड़ा बढ़ने नहीं पाया। अम्मी बोली—'अजी सारी उम्र तो मेरी बातें सुनते कटी, अब एकाएक आपकी तबियत क्यों घबराने लगी ?'

इतना सुन कर अब्बा को बड़े जोर की हँसी छूटी, और अन्त में वह कहकहा लगाकर वहीं बैठ गये और बोले—'अच्छा भई तुम जीतीं, मैं हारा। ठीक है, तुम कहो, मैं बैठकर सुनता हूँ।'

'बात सिर्फ इतनी है कि रेखा जुबेदा को अपने साथ कुछ दिनों के लिए बम्बई ले जाना चाहती है।'

'ठीक, अच्छा तो फिर ?'

'और जुबेदा को अकेली कौन भेजेगा ? वह चाहती है कि शकीला भी उसके साथ चले।'

अब्बा ने बेटी की ओर देखते हुए पूछा—'क्यों शकीला, यही बात है क्या ?'

'जी, आज मैं सारा दिन जुबेदा आपा के पास ही रही। वहीं पर रेखा अपनी माता जी के साथ आई और यह बात चली। जुबेदा आपा मेरी राय पूछने लगीं तो मैंने कहा कि इस बात की इजाजत तो उन्हीं को आपसे लेनी पड़ेगी।'

अब्बा बेटी की घबराहट का आनन्द लेते हुए बोले—'लेकिन उनमें से कोई मेरी इजाजत लेने तो नहीं आया ?'

शकीला ने डरते-डरते दबे स्वर में कहा—'हो सकता है कि वह कल सुबह आयें।'

'अच्छा।'

अब शकीला की अम्मी ने पूछा—'आपने कुछ राय तो दी नहीं, सिर्फ 'अच्छा' कहकर रह गये।'

'अब तो उन्हीं से बातें होंगी। इतनी देर में मैं कुछ तय भी कर लूँगा।'

शकीला मन ही मन में घबराती रही। रात के वक्त वह ठीक तरह से सो भी नहीं पाई। उसका दिल चाहता था कि वह बम्बई जरूर जाय। उसे बम्बई देखने का शौक नहीं था, केवल हमीद के साथ पूरी स्वतन्त्रता से कुछ दिन व्यतीत करने की इच्छा थी।

दूसरे दिन शकीला के यहाँ नाश्ता समाप्त हुआ ही था कि जुबेदा और उसकी अम्मी आ पहुँची। शकीला अपने घर भर सहित बरामदे में रखी खाने की मेज से हटी नहीं थी। जुबेदा की अम्मी को देखते ही शकीला के अब्बा बोले—'आओ आपा, आपका ही इन्तजार था।'

जुबेदा की अम्मी बोलीं—'वाह! मुझे आपा क्यों कहते रहते हैं? मैं तो आपसे छोटी हूँ।'

'किसी को इज्जत महज उमर के कारण ही नहीं दी जाती, बल्कि गुण के कारण भी दी जाती है।'

जुबेदा की अम्मी हँस दीं और बोलीं—'अच्छा, यह बात है तो ठीक है। मुझे तो अपने आप में कोई खूबी दिखाई नहीं देती अगर आपको दिखाई है तो मेरे लिए यह बड़ी खुशी की बात है। लेकिन यह तो बताइये कि आपको मेरा इन्तजार किसलिए था?'

'इसलिए कि मुझे मालूम है कि आप यहाँ आने वाली थीं।'

'फिर तो यह समझना चाहिए कि आपने मेरे पीछे जासूस लगा रखे हैं।'

शकीला के अब्बा हँसे—'हाँ, आगे को होशियार रहिये क्योंकि मैं आपकी पूरी खबर रखता हूँ।'

'मैं तो होशियार रहने की जरूरत नहीं समझती। आखिर आप मेरे भाई जान हैं, मैं तो खुद ही आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहती। और न कोई ऐसी बात ही है जिसके जाहिर हो जाने से मुझे कोई डर हो।'

'गोया तो आपको अपने भाई जान से डर नहीं लगता ?'

'यह बात नहीं है। मेरे कहने का मतलब यह है कि जब मैं गलती नहीं करूँगी तो फिर डरने की क्या जरूरत है ?'

'बिल्कुल ठीक कहती हैं आप, अब बताइये कि किस काम से आई हैं ?'

'अरे ! अभी तो आप कह रहे थे कि आपको मालूम है कि मैं किस काम से आई हूँ।'

'वह तो ठीक है, लेकिन आपके मुँह से भी तो सुनें।'

'जी नहीं, आपने आते ही मुझ पर इतना रोब झाड़ दिया, अब आप ही बताइये कि मैं किस काम से आई हूँ, और उसका जवाब हाँ में है या न में।'

शकीला के अब्बा लम्बे-चौड़े और भारी-भरकम आदमी थे। सिर के बाल मशीन से कटाकर रखते थे। पहलवानों की तरह लम्बी-लम्बी मोछें रक्खे हुए थे। इस वक्त तो बड़े ही अच्छे मूड में थे। जुबेदा की अम्मी की बात सुनकर उन्होंने अपना भारी-भरकम हाथ बढ़ाया और उसके सिर पर रखते हुए प्यार से बोले—'बताओ, मैं बहन की किसी बात का न में जवाब दे सकता हूँ ?'

'यह तो आप ही जानें।'

शकीला के अब्बा ने जुबेदा की ओर देखते हुए कहा—'बेटी, मुझे पता चला है कि तुम अपनी सहेली रेखा के साथ बंबई जाना चाहती हो या वह तुम्हें ले जाना चाहती है, लेकिन तुम अकेली जाना नहीं चाहतीं……'

जुबेदा ने बीच में ही बात काटकर कहा—'लेकिन मामू जान मुझ अकेली को जाने कौन देगा ?'

'तो गोया शकीला के बिना तुम्हारा जाना भी रुक जायगा ।'

'जी ।'

'भई तुम शकीला की बड़ी बहन जैसी हो, अगर तुम समझती हो कि शकीला की देखभाल ठीक तरह से कर सकोगी तो ले जाओ ।'

अब शकीला की अम्मी बीच में बोल पड़ीं—'अजी मैं पूछती हूँ कि हमारी लड़की क्या कोई दूध-पीती बच्ची है जो उसकी देखभाल करने की जरूरत पड़ेगी ?'

शकीला के अब्बा गरम होकर बोले—'तुम यूँ ही टाँग अड़ाने लगती हो । तुम नहीं जानतीं कि देखभाल से क्या मतलब होता है ?'

अब शकीला जुबेदा के कान में फुसफुसाई—'कहीं अब्बा और अम्मी की लड़ाई में हमारा बना-बनाया काम बिगड़ न जाय ?'

जुबेदा ने जल्दी से कहा—'लेकिन मामू जान मैं तो समझ गई हूँ आपका मतलब । आपको मुमानी जान से क्या लेना ?'

अब शकीला के अब्बा फिर खुश हो गये—'कितनी अच्छी बात कही है जुबेदा बेटी ने । ठीक है, मेरी तरफ से इजाजत है……बस शकीला तुम बम्बई जाने की तैयारी करो ।'

इस समय शकीला के अब्बा इतनी मौज में थे कि लगता था कि इस वक्त उनके सामने कोई भी सुझाव रखा जाय तो वह स्वीकार कर

लेंगे। पल भर को जुबेदा की अम्मी के मन में ख्याल आया कि वह हमीद और शकीला के रिश्ते की बात छेड़ दें, परन्तु फिर वह यह सोच कर चुप रह गई कि कहीं ऐसा न हो कि उनका मूड ही बिगड़ जाय, और रिश्ते की बात तो रही अलग, अभी शकीला का बम्बई जाना भी रुक जाय।

शकीला और जुबेदा अब बड़ी खुश थीं। वे दोनों फौरन ही बड़ों की टोली में से उठकर अलग चली गईं, और बैठ कर आपस में अपना प्रोग्राम तय करने लगीं। उन्हें क्या-क्या सामान और कौन-कौन से कपड़े साथ ले जाने होंगे। शकीला ने कहा—'देखो आपा, रेखा को खबर कर देना कि हमलोग उसके साथ ही जा रही हैं।'

'हाँ हाँ यह तो बहुत जरूरी है, क्योंकि हो सकता है कि पहले से ही बम्बई की सीटें बुक करानी हों मैं अभी जाकर उसके घर खबर भिजवा दूँगी।'

जुबेदा और शकीला में सलाह-मशविरा होता रहा कि इतने में दूसरे कमरे से जुबेदा की अम्मी की आवाज सुनाई दी—'आओ बेटी, घर चलें। अभी तो खाना भी पकाना है।'

जुबेदा ने शकीला से जल्दी-जल्दी दो-चार बातें की और वहाँ से भाग निकली। जब वह माँ के साथ घर को जा रही थी तो उसे एक नई बात सूझी, बोली—'अम्मी, मैं खुद ही रेखा से क्यों न मिल आऊँ। जुबानी कहलाने में वह बात नहीं होती। मुमकिन है उसे कोई सलाह-मशविरा देना हो, या कोई और बात कहनी हो।'

रेखा का घर उनके घर से बहुत ज्यादा दूर नहीं था, इसलिए उसकी अम्मी ने इजाजत देते हुए कहा—'लेकिन जल्दी लौट आना जो बातें रह जायें फिर कर लेना।'

ज़ुबेदा रेखा के मकान के निकट ही रिक्शे से उतर गई। जब वही उनके घर में पहुँची तो रेखा उसे देखते ही गद्‌गद् हो उठी। छूटते ही उसने पूछा—'कहो ज़ुबेदा, बम्बई जाने का क्या प्रोग्राम है?'

'अरी, वही तो बताने आई हूँ।'

'पहले यह तो बताओ कि जा रही हो या नहीं।'

'हाँ, हाँ, तुम्हें तो घबराहट हो रही होगी कि कहीं हम साथ ही न चल दें, तो ख्वामख्वाह् तुम्हारा खर्चा भी होगा और उनसे मुलाकातें करने में बाधा भी पड़ेगी। तुम्हें यह जानकर परेशानी होगी कि शकीला को मामू जान ने जाने की छुट्टी दे दी है। घबराओ मत रेखा, हम तुम्हारे घर दो-चार दिन से ज्यादा नहीं टिकेंगे, उतने में तुम्हारा कुछ न कुछ खर्चा हो ही जायगा लेकिन बेफिकर रहो किराया हम अपना ही खर्च करेंगे।'

इस पर दोनों सखियों ने बड़े जोर के कहकहे लगाये। फिर रेखा बोली—'अरी मैं तो इतनी खुश हूँ कि तुम इसका अन्दाज ही नहीं लगा सकती। बम्बई तक का लम्बा सफर मुझ अकेली को तय करना पड़ता तो कितनी परेशानी होती। अब तो हम तीनों हँसती-बोलती चली जायेंगी और सफर का कुछ पता भी नहीं चलेगा। अच्छा हुआ तुम फौरन कहने चली आईं, क्योंकि मैं तुम्हारे घर किसी को भेजने वाली थी। बम्बई के लिए सीट तो बुक करानी पड़ेगी न पहले से।'

इसीलिए तो मैं खुद ही चली आई, अच्छा जो बात कहनी है जल्दी से कहो।'

'जल्दी किस बात की है?'

'अरे मुझे वापस जाना है। अम्मी ने कहा था कि खाने के समय तक लौट आना।'

'अजी छोड़ो अब तुम्हें कौन जाने देता है रही खाने की बात तो वह तुम यहीं खा लेना।'

'नहीं भई, अम्मी गुस्सा होंगी।'

'वाह ! गुस्सा होने का यह कौन-सा मौका है ? मैं उन्हें कहलवा देती हूँ कि सफर के सिलसिले में बातचीत करनी है इसलिए मैं जुबेदा को यहीं रोक रही हूँ।"

'मुझे जाने दो तो अच्छा ही है देखो न सीटें भी तो जल्दी ही बुक कराने जा रही हो। घर चली जाऊँ तो मैं अम्मी से रुपया लेकर तुम्हें अपना और शकीला का किराया भिजवा दूँ।'

'ख्वामख्वाह घबराती क्यों हो जुबेदा ? टिकटों के लिए मैं अभी किसी को भेजवा देती हूँ। तुम्हारे रुपये बाद में आते रहेंगे।'

आखिर जुबेदा को हार माननी पड़ी। उसने सोचा कि जिसके हाथ पत्र भेजेंगे उसी के हाथ रुपया भी तो मँगवाया जा सकता है चुनांचे उसने ऐसे ही किया, और फिर दोनों सखियाँ जाने का प्रोग्राम बनाती रहीं।

रेखा ने उसे शाम की चाय तक बिठाये रखा। सचमुच ही जाने से ज्यादा तो जाने का प्रोग्राम बनाने में ही मजा आ गया।

सात

आखिर वह दिन भी आ पहुंचा जब वे तीनों सहेलियाँ गाड़ी में बैठ गईं। कितनी खुश थीं वे! जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम ही मिलते हैं। कुछ ही दिन पहले तक उन्होंने इस बात की कल्पना तक नहीं की थी कि वे तीनों मिलकर अलीगढ़ से बम्बई तक की यात्रा करेंगी। उनका सारा सफ़र हँसी-खुशी में कटा, और जब वे बम्बई पहुँचीं तो प्लेटफार्म पर रेखा के पति देव अपनी पत्नी को लेने आये हुए थे। उन्होंने रेखा के अतिरिक्त जुबेदा और शकीला को देखा तो पल भर के लिए बिल्कुल चकित रह गये। जुबेदा को तो वह जानते ही थे लेकिन शकीला उनके लिए नई थी।

डिब्बे से नीचे पाँव रखते हुए जुबेदा बोली—'जीजा जी, रेखा के अलावा हमें देखकर जो आपको परेशानी हो रही है उसके लिए मैं माफी चाहती हूँ।'

रेखा के पति देव इस चोट से तिलमिला उठे और हड़बड़ा कर बोले—'अजी नहीं, जुबेदा जी, भला आपने यह बात कैसे सोच ली?'

जुबेदा ज़रा चंचल तबियत की लड़की थी, फौरन ही बोली—'हम जानते हैं, कि जब पति देव को कई महीनों के इन्तजार के बाद पत्नी के

८

दर्शन हों, और साथ ही दो-दो सालियाँ भी चिपकी हों, तो पति देव मन पर क्या गुज़रती है।'

रेखा के पतिदेव ने अपनी झेंप छिपाने के लिए जोरदार कहकहा लगाया। बेशक जुबेदा ने बात ठीक ही कही थी, लेकिन वह बहुत ही शरीफ और सुलझा हुआ व्यक्ति था। जुबेदा फिर बोली—'जीजा जी घबराने की कोई जरूरत नहीं, हम आपके पास दो-तीन दिन से ज्याद नहीं टिकेंगे। यह भी हो सकता है कि हम चार दिन भी टिक जायें।'

इतने में रेखा ने उसकी पीठ पर हल्की सी थपकी मारकर कहा—'क्यों उल्टी-सीधी बातें कर रही हो ? आखिर तुम अपने जीजा जी को समझती क्या हो ?'

पति देव बोले—'कोई बात नहीं रेखा, सालियों का तो यह हक है कि वह अपने जीजा का मज़ाक उड़ायें।'

शकीला शरमायी हुई सी अलग खड़ी थी। रेखा बनावटी गुस्से से बोली—'भई यह क्या बात है ? शकीला उधर मुँह फेरे खड़ी है, यह जीजा-साली अलग शोर मचा रहे हैं, आखिर सामान की जाँच-पड़ताल करना, और इसे कुलियों के सिर पर रखवाना भी किसी का काम है या नहीं ?'

उसके पति देव बोले—'यह तुम्हारा काम है।'

रेखा चमक कर बोली—'क्यों जी वह कैसे ?'

'ऐसे कि तुम ही तो घर की मालकिन हो।'

'और आप सब दूध-पीते बच्चे हैं ?'

अब जुबेदा बोली—'हाँ हाँ, हम सब दूध-पीते बच्चे ही तो हैं।'

यह कह कर वह अपने मुँह में अँगूठा डालकर चूसने लगी।

रेखा ने दाँये-बाँये देखकर चिल्लाना शुरू किया—'कुली-कुली आखिर यह क्या मज़ाक है ?'

यह देखकर कि रेखा सचमुच ही परेशान हो रही है। उसके पति देव ने निकट से गुज़रते हुए दो कुलियों को बाजू से थामकर रोक लिया और कहा—'सुनो, तुम्हें मेम साहब बुला रही हैं। तुम्हें यह बता दूँ कि मेम साहब बहुत रईस हैं, इनका सामान उठाओगे तो भाड़े के अलावा बख़्शीश भी पाओगे।'

कुली रुक गये, और पूछने लगे—'कहिये मेम साहब, कौन-कौन सा सामान है आपका ?'

रेखा अँगुली के इशारे से सामान बताने लगी और उसके पति देव ज़ुबेदा से कहने लगे—'आपने इनसे मेरा परिचय नहीं कराया।'

ज़ुबेदा ने शकीला की ठुड्डी के नीचे अँगुली रखते हुए कहा—'पहले इसे पसन्द तो कर लीजिये फिर मैं परिचय भी करा दूँगी।'

'पसन्द'—वह घबराहट में हकलाते हुए बोले—'मेरे पसन्द करने की क्या बात है, ज़ुबेदा जी ?'

'आप मुझे गलत मत समझिये, आप इन्हें इस नज़र से देखिये कि यह मेरी भाभी बन जायें तो कैसी रहे ?'

रेखा के पति देव ने हल्का सा कहकहा लगाया और बोले—'ओह, तो यह बात है। इसका मतलब है कि मैं समझ लूँ कि इनकी मँगनी आपके छोटे भाई से हो चुकी है। क्या नाम है उनका ? हमीद ? ठीक है न ?'

'बिल्कुल ठीक। रही नौबत पहुँचने की बात, तो आप यह समझ लीजिये कि अभी मँगनी तो नहीं हुई लेकिन नौबत बहुत दूर तक जा चुकी है।'

'जी, जी······तब तो बड़ी खुशी की बात है।'

शकीला बुरी तरह से शरमा रही थी। उसने जुबेदा की पीठ प
हल्का सा छाप जमाकर कहा—'जाइये आपा ! हम आपसे नहीं बोलेंगे।

'अच्छा तो अभी से बोल-चाल बन्द ? अरे भई शादी तो हो लेने
दो। इतना तो हम मानते हैं, बल्कि इस बात की इजाज़त देते हैं वि
शादी के बाद बेशक तुम्हारा जी चाहे तो हमसे बोल-चाल बन्द कर
देना।'

रेखा के पति ने दोनों लड़कियों को आपस में भिड़ते देखकर समझ
लिया कि अब उनमें किसी पुरुष का कोई काम नहीं इसलिए सामान के
सम्बन्ध में वह रेखा का हाथ बँटाने लगे।

× × × ×

शकीला के मन में वहाँ आने से पहले इतनी झिझक थी कि अगर
हमीद से मुलाकात का आकर्षण न होता तो वह कभी वहाँ न आती।
लेकिन एक बार रेखा के घर में पहुँच कर उसको वहाँ का वातावरण
इतना पसन्द आया कि उसकी झिझक दूर हो गई। आपस में बातचीत
करने में जो उसे बेजा शरम महसूस होती थी वह भी न रही। मुसलमान
लड़की होने के नाते से शकीला को साधारण लड़कियों से भी ज्यादा
शरम लगती थी। जुबेदा भी बेशक मुसलमान थी परन्तु उसके घर का
वातावरण साधारण मुसलमान घरानों से बिल्कुल ही भिन्न था, इसी-
लिए बात-चीत करने में उसकी झिझक खुली हुई थी। रेखा के पति देव
बड़े समझदार थे। उन्होंने ताड़ लिया कि यदि शकीला की यही दशा
रही तो उस बेचारी को बड़ी परेशानी होगी। इसीलिए उन्होंने बड़े
शान्ति और दुलार से शकीला की झिझक दूर कर दी। अब वे इकट्ठे
खाने-पीने और घूमने-फिरने लगे।

बम्बई में पहुँचते ही सबसे पहले तो जुबेदा ने हमीद को यह पत्र लिखा—

'डियर हमीद,

तुम्हें यह देखकर हैरानी तो होगी कि मैं तुम्हें यह चिट्ठी अलीगढ़ के बजाय बम्बई से लिख रही हूँ। घबराने की कोई बात नहीं मैं सारा किस्सा सुनाती हूँ।

तुमने अपनी पिछली चिट्ठी में शकीला को बम्बई ले आने की जिम्मेदारी मुझको सौंपी थी। तुम तो जानते ही हो कि मैं बड़ी ही अच्छी बहन हूँ और अगर तुमने अब तक ऐसा न महसूस किया हो तो अब महसूस कर सकते हो कि मैं कितनी अच्छी हूँ। हाँ, तो मैं कह रही थी कि तुम्हारी चिट्ठी पाते ही मैंने बड़ी फुर्ती से तुम्हारा काम करना शुरू कर दिया। इसी फुर्ती का नतीजा है कि मैं इस वक्त बम्बई में हूँ।

घबराओ नहीं, शकीला मेरे साथ है। यह बात इसलिए जल्दी से बता दी ताकि तुम्हारे दिल को तसल्ली हो जाय।

तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर मैं सोचने लगी कि मैं यह नामुमकिन काम कैसे करूँगी। मानना पड़ेगा कि तुम्हारी तकदीर बड़ी तेज है। जिस वक्त तुम्हारी चिट्ठी आई उसी वक्त मेरी सहेली रेखा अपनी माता जी के साथ हमसे मिलने चली आई। उसके पति देव जबलपुर में थे, और अब उनका तबादला बम्बई में हो चुका है। चुनाँचे रेखा बम्बई जा रही थी। मैंने उसे अलग ले जाकर समझाया और सारा भेद बताते हुए उससे कहा कि वह मेरी अम्मी से मुझे अपने साथ ले जाने को कहे। उसने ऐसा ही किया। अम्मी ने कहा कि इजाजत तो अब्बा से ही मिलेगी लेकिन अकेली तुम्हें वह जाने दें या न जाने दें, इसके सम्बन्ध में वह कुछ ठीक से नहीं कह सकती थीं। चुनाँचे शकीला को साथ ले

जाने का प्रोग्राम बनाया गया। अब यह मत पूछो कि मुझे क्या-क्य
पापड़ बेलने पड़े। बस इतना समझ लो कि मामूजान अच्छे मूड में थे
और उन्होंने शकीला को मेरे साथ बम्बई जाने की इजाज़त दे दी
तुम्हारी खातिर यह सब कुछ करना पड़ा। और अब हम अपनी सहेल
रेखा के घर में ही रह रहे हैं, इनका पता नीचे लिख रही हूँ। अ
अपने आने का तार इसी पते पर भेजना।

और क्या लिखूँ, सिवा इसके कि बेचारी शकीला सैकड़ों मील क
सफर तय करके तुमसे मिलने के लिए यहाँ आ पहुँची है। अब को
गड़बड़ न कर देना, ऐसा न हो कि लिख दो कि यहाँ आने का प्रोग्रा
खतम हो गया है। अब तो जैसे भी बन पड़े यहाँ पहुँचो।

तुम्हारे जवाब के इन्तज़ार में !

तार भेजने का पता—

कुमारी जुबेदा,
१०२३, गाँधी नगर, बम्बई—२३।

तुम्हारी आपा,
जुबेदा।'

× × × ×

हमीद को यह पत्र मिला तो वह इसे पढ़कर उछल पड़ा। अभ
तक उसे इस बात का विश्वास था कि उसे बम्बई भेजा जायगा तभ
वह आपा को तार भेज देगा। लेकिन यह चिट्ठी पढ़कर उसे खुशी भी हु
और घबराहट भी। घबराहट इस बात की कि कहीं अब उसे रो
लिया गया तो न केवल उसे बल्कि आपा और खासकर शकीला क
कितनी निराशा होगी।

वह फौरन ही चिट्ठी का जवाब देने बैठ गया। पहले तो वह हाथ
पर ठुड्डी रखकर कुछ देर सोचता रहा फिर उसने चिट्ठी लिखनी
शुरू की—

'डियर आपा,

तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर तो मैं हैरान ही रह गया। कुछ देर तक तो मुझे अपनी आँखों पर यकीन ही नहीं आया। मैं तो सोच रहा था कि पक्का पता चले तो आप लोगों को तार दे दूँ, लेकिन मुझे क्या मालूम था कि आप लोग इतने तेज निकलेंगे कि तार मिलने से पहले ही बम्बई पहुँच जायेंगे।

वैसे तो मैं मानता हूँ कि आपने लाजवाब काम किया है। सच पूछिये तो मुझे आपसे इतनी ज्यादा उम्मीद न थी। लेकिन अब तो मैं आपको दिल से मानने लगा हूँ। बल्कि कहना चाहिए कि मुझे आप पर बड़ा भरोसा हो गया है। मैं आपका जितना भी शुक्रिया अदा करूँ उतना ही कम है।

यहाँ का हाल यह है कि अभी तक तो मेरे वहाँ आने का प्रोग्राम बना हुआ है लेकिन यह मेरे बस की बात तो है नहीं, इसीलिए मैं डर भी रहा हूँ कि कहीं मेरा आना रोक दिया गया तो सारा मजा किरकिरा हो जायगा। अगर आप लोग अलीगढ़ में ही रहतीं तो फिर भी इतनी परेशानी न होती। अब तो मैं भी खुदा से दुआ करता हूँ और आप लोग भी कीजिये कि हमारे रास्ते में कोई अड़चन न आने पाये।

अपनी सहेली रेखा को मेरा सलाम कहिये और यह भी कह दीजियेगा कि मैं उनका बहुत शुक्रगुजार हूँ। शकीला से भी मेरा सलाम कहियेगा, लेकिन उसे यह चिट्ठी न दिखाइयेगा। मुझे डर है कि यह चिट्ठी सुनकर उसे ख्वामखाह परेशानी होगी।

अच्छा, अब रुखसत। आपका भाई,

हमीद।'

× × × ×

जुबेदा ने हमीद की चिट्ठी पढ़ी तो उसे कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि न जाने क्यों उसके मन को पूरा भरोसा था कि हमीद जरूर आयेगा। एक रोज वह शकीला को लेकर जूहू की सैर करने चली गई। उस रोज रेखा ने उसका साथ नहीं दिया। जूहू में उन्होंने खूब सैर की। ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के नीचे बैठकर मालपूड़ी खायी।

वे अपने साथ जमीन पर बिछाने के लिए एक दरी ले गई थीं। जब वे घूम-फिर कर थक गईं तो पेड़ की छाँव तले दरी बिछाकर लेट गईं। यह जरा सुनसान कोना था, इसलिए वे इत्मिनान से लेटी रहीं। जुबेदा ने कहा—'यह जगह भी कितनी सुन्दर है।'

शकीला ने 'हूँ-हाँ, करके बात टाल दी। जुबेदा मन ही मन में चौंकी। उसे महसूस हुआ कि शकीला का मन उलझा हुआ था। वह इसका कारण भी जानती थी, और उसने सोचा भी कि कुछ पूछे, लेकिन शकीला ने खुद ही दबी जबान में अपने मन का सन्देह प्रकट करते हुए कहा—'आपा, अगर कहीं वह न आये तो?'

शकीला के यह शब्द सुनकर जुबेदा के मन को भी धक्का सा लगा। वह महसूस करने लगी कि कहीं सचमुच ही हमीद न आया तो शकीला को कितनी निराशा होगी। फिर जुबेदा ने सोचा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि शकीला ने हमीद वाली चिट्ठी पढ़ ली हो। लेकिन फिर उसने सोचा कि यह नामुमकिन था, क्योंकि उसने वह चिट्ठी बहुत सम्भाल कर अपने कपड़ों के सूटकेस की तह में बिछे हुए कागजों के नीचे छिपा रखी थी। शकीला ऐसी लड़की ही नहीं थी कि ख्वामखाह उसके सूटकेस की तलाशी लेकर अन्दर से चिट्ठी निकाल ले। तब जुबेदा ने लेटे-लेटे सिर घुमाकर शकीला की ओर देखा और बोली—'क्यों तुम्हें यह शक किस लिए हो रहा है?'

शकीला ने जरा काँपते हुए स्वर में उत्तर दिया—'वजह तो कोई नहीं, वैसे ही मैं सोच रही थी।'

'तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए, क्योंकि हमीद जरूर आयेगा।'

'आप यह कैसे कह सकती हैं?'

'अगर तुम मर्द की तबियत को समझती होती तो तुम्हारे दिल में यह शक पैदा न होता।'

'तो आप ही मुझे मर्द की तबियत समझा दीजिये न।'

शकीला ने पहले कभी इस विषय पर इतनी बेतकल्लुफी से बातचीत नहीं की थी, लेकिन आज वह शायद मूड में आयी हुई थी, तभी तो बिना झिझक के बोले जा रही थी। जुबेदा नहीं चाहती थी कि शकीला यह महसूस करे कि आज उसमें कोई अनोखी बात दिखाई दे रही थी, चुनाँचे वह सहज में बोली—'यह याद रखो कि जब कोई मर्द किसी लड़की से सच्ची मुहब्बत करता है और लड़की भी जवाब में सच्ची मुहब्बत करते हुए उसके दिल में अपना विश्वास जमाये रहती है तो ऐसी महबूबा के लिए मर्द सात समुद्र पार करके और दर्जनों पहाड़ फाँद करके भी उसे मिलने के लिए आता है। और मैं समझती हूँ कि किसी भी लड़की के जीवन में इससे ज्यादा खुशी और गर्व की कोई और बात नहीं हो सकती। इसी में लड़की की सबसे बड़ी जीत है, और इसी तरीके से उसे महसूस हो सकता है कि उसने अपने जीवन का सबसे बड़ा इनाम और सबसे बड़ी सफलता प्राप्त कर ली है।'

शकीला को यह बातें बड़ी अनोखी लगीं, क्योंकि उसने पहले कभी ये बातें सुनी नहीं थीं। उसका जी चाहता था कि जुबेदा आपा इसी तरह बोलती चली जायँ और वह सुनती चली जाय क्योंकि उसे ये बातें बहुत ही भली लग रही थीं।

जुबेदा ने शायद उचित मौका जानकर बातचीत जारी रखी—'शकीला, इस बात से तो निश्चित रहो, कि हमीद यहाँ जरूर आयेगा। उसका प्रोग्राम रद्द भी हो गया, तब भी वह किसी न किसी बहाने से छुट्टी लेकर तुमसे मिलने के लिए तो जरूर ही आयेगा।'

शकीला को ये बातें सुनकर बहुत शान्ति महसूस हुई। वह कहना चाहती थी कि अगर सच्चा प्रेम करने वाली लड़की के दिल की पवित्रता का मर्द के मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ सकता है तो फिर उन्हें जरूर ही वहाँ आना चाहिए, क्योंकि वह केवल उन्हीं को प्रेम करती थी और उन्हें जीवन भर के लिए अपना सब कुछ मान चुकी थी लेकिन उसके मुँह से कोई बात निकल न सकी, वह ये सब बातें मन ही मन में सोच कर रह गई।

जुबेदा ने एक बार फिर वातावरण में छाये हुए मौन को तोड़ते हुए कहा—'शकीला, तुम्हें मालूम है कि मैं उन दोनों के बारे में अक्सर सोचा करती हूँ।'

शकीला समझ तो गई कि आपा किन दो के बारे में कह रहीं थीं फिर भी उसके मुँह से निकल ही गया—'किनके बारे में?'

जुबेदा हँसी—'शरारत करती हो। हमीद और तुम्हारे बारे में। और कौन हो सकता है?

'आपने पहले तो कभी इस बात का जिक्र नहीं किया।'

'जिक्र कैसे करती?'

'पहले मैंने कभी तुम दोनों के बारे में सोचा ही नहीं था।'

'और अब ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी?'

जुबेदा शकीला की शरारत को अच्छी तरह समझ रही थी। परन्तु उसने यह जाहिर नहीं होने दिया कि वह उसकी शरारत को समझ

रही थी, बल्कि गम्भीर स्वर में बोली—'अब सोचने की जरूरत इसलिए आ पड़ी क्योंकि तुम दोनों एक दूसरे के काफी नजदीक पहुँच चुके हो।'

'ओह ! तो यह बात है। अच्छा तो फिर आपने क्या सोचा ?'

'मैंने यही सोचा है कि अब वह वक्त आ गया है कि तुम भी कुछ सोचने-विचारने की कोशिश करो।'

'आपा, आपने सचमुच ही बड़े पते की बात कही। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या सोचूँ। आपके कहने से मुझे भी महसूस होता है कि मुझे कुछ सोचना चाहिए लेकिन क्या सोचना चाहिए, इसका कुछ पता नहीं चलता क्योंकि मेरा दिमाग तो बिल्कुल धुआँ-धुआँ सा हो रहा है।'

इस पर फिर कुछ देर के लिए मौन छा गया, तब जुबेदा ने भारी स्वर में कहना शुरू किया—'शकीला, ब्याह-शादी कोई हँसी-खेल नहीं है।'

इतना ही सुन कर शकीला ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को और भी फैलाकर जुबेदा की ओर देखा, परन्तु मुँह से कुछ नहीं बोली। जुबेदा ने फिर कहना शुरू किया—'शादी से पहले लड़की और लड़के जो प्रेम का खेल खेलते हैं, उससे अक्सर वह यही नतीजा निकालते हैं कि शादी के बाद भी इसी तरह हल्के-फुल्के अन्दाज में जिन्दगी के दिन गुजरते जायेंगे, लेकिन ऐसा सोचना बहुत ही बड़ी भूल है।'

शकीला ने केवल कुछ कहने के खातिर कहा—'क्यों आपा आप मुझे डरा रही हैं क्या ?'

'नहीं, मैं डरा नहीं रही, बल्कि खबरदार कर रही हूँ।'

'तो क्या आने वाले दिनों के चेहरे से जब नकाब उठेगी तो मुझे कोई भयानक नजारा दिखाई देगा ?'

'खुदा न करे, मेरा मतलब सिर्फ यही है कि शादी-ब्याह को खेल न समझकर उसके गम्भीर पहलुओं पर पहले से ही गौर कर लिया जाये तो आने वाली कई मुसीबतें और दुःख टल जाते हैं।'

'आपा, यह तो बड़ी अच्छी बात है कि आप मुझे इस तरह पहले से ही खबरदार कर रही है। सच पूछिये तो मुझे कुछ भी तो पता नहीं कि किन-किन बातों की तरफ ध्यान देना चाहिए। अगर आप मुझे जरा खोलकर सारी बातें बता सकें तो बड़ी खुशी होगी और मैं जिन्दगी भर आपका एहसान नहीं भूलूँगी।'

'इस सिलसिले में गौर करने की बातें तो बहुत सी हैं, लेकिन अभी एक खास बात का जिक्र करूँगी जिसका ख्याल रखने की तुम्हें खास जरूरत होगी।'

'जल्दी से बताइये, मैं आपकी बात सुनने के लिए बेचैन हो रही हूँ।'

बात फिर से शुरू करने से पहले जुबेदा ने अपने विचारों को समेटा, और फिर बोली—'तुम मामूजान, यानी अपने अब्बा जान के ख्याल तो जानती ही हो।'

'जानती तो हूँ, लेकिन आपका इशारा किन ख्यालों की तरफ है ?'

'मेरा इशारा इस बात की तरफ है कि वह तुम्हारी शादी पाकिस्तान के किसी खानदान में करना चाहते हैं।'

'वह तो मुझे मालूम है।'

'मेरे ख्याल में मेरा यह अन्दाजा भी गलत नहीं है कि तुम उनके इस ख्याल से सहमत नहीं हो।'

'आप बिल्कुल ठीक समझती है। अम्मी जान भी तो इसके हक में नहीं हैं।'

'हाँ, वह तो मैं जानती हूँ और मुझे इस बात की भी खुशी है कि तुम्हारे ख्याल इस मामले में अपने अब्बा से अलग हैं लेकिन शकीला, मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि इतना ही काफी नहीं है।'

'मैं आपका मतलब नहीं समझी।'

'मेरा मतलब यह है कि इस वक्त अपने अब्बा से तुम्हारी नाइत्तिफाकी इसलिए भी हो सकती है क्योंकि तुम हमीद से शादी करना चाहती हो, इसी बात को सोच कर मैंने कहा था कि सिर्फ इतना ही काफी नहीं है।'

'यहाँ तक तो आपकी बात मेरी समझ में आ गई, लेकिन मैं चाहती हूँ कि आप जरा और अच्छी तरह से समझा दें।'

'देखो न, तुम्हारे अब्बा भारत को अपना देश नहीं समझते। यह उनकी बहुत बड़ी भूल है। वह अपने बच्चों के मन में भी इसी किस्म के विचार पैदा करना चाहते हैं। लेकिन मैं तुमसे कहना चाहती हूँ कि हमीद के यह ख्यालात नहीं हैं। सिर्फ हमीद ही की बात नहीं हमारा सारा खानदान भी भारत को अपना देश और जन्म-भूमि मानता है। यह ठीक है कि हम इस्लाम-धर्म को मानने वाले हैं, और हमें इस बात का पूरा हक भी है। हमें अपने धर्म पर बड़ा फक्र (गर्व) भी है। लेकिन हम भारत को ही अपना देश मानते हैं। इस देश के साथ वफादारी करना हमारा फर्ज है। पाकिस्तान में मुसलमानों को ही पूरे हक मिले हुए हैं लेकिन हमारे देश में सभी धर्मों के मानने वालों को बराबर के हक मिले हुए हैं। मैं यह सब बातें तुमसे इसलिए कह रही हूँ कि तुम्हारे लिए इतना ही काफी नहीं है कि चूँकि तुम हमीद से शादी करना

चाहती हो इसीलिए तुम्हें यह बात पसन्द नहीं कि पाकिस्तान में तुम्हारा रिश्ता हो। मैं तुम्हें समझा देना चाहती हूँ कि तुम्हें सदा भारत को ही अपना देश मानना पड़ेगा। तुम्हें अपने होने वाले बच्चों को भी यही शिक्षा देनी होगी। अगर तुम यह सब कुछ नहीं कर सकतीं तो मैं तुम्हें अभी से बता दूँ कि हमीद के साथ रहकर तुम खुशी हासिल नहीं कर सकोगी और न उसे अच्छी खुशी दे सकोगी।'

शकीला मन की गहराइयों से बोली—'आपा, मैं आपको सच्चे दिल से बताती हूँ कि मेरे भी बिल्कुल यही ख्यालात हैं।'

यह सुन कर जुबेदा को बड़ी खुशी हुई, और थोड़ी देर बाद जब वे घर पहुँचीं तो उन्हें हमीद का तार मिला—वह दूसरे दिन बम्बई आ रहा था।

आठ

हमीद का स्वागत करने के लिए जुबेदा और शकीला स्टेशन पर पहुँचीं। उन्होंने रेखा को भी साथ ले जाना चाहा लेकिन वह बोली कि वह उन लोगों के लिए नाश्ता और चाय का प्रबन्ध करेगी, इसलिए उसका स्टेशन न जाना ही ठीक होगा। वैसे उसके जाने की कोई जरूरत भी नहीं थी।

जब वे दोनों प्लेटफार्म पहुँचीं तो गाड़ी के आने में अभी दस-पन्द्रह मिनट बाकी थे। अब भी उनके दिल धक-धक कर रहे थे, कि कहीं अब भी उसे रोक न लिया गया हो। खास कर शकीला का दिल तो और भी जोर-जोर से उछल रहा था। इतने में दूर से इंजन आता दिखाई दिया। गाड़ी तेजी से चली आ रही थी, लेकिन फिर भी इन्हें ऐसे लग रहा था जैसे वह कछुआ की चाल चल रही हो। इंजन प्लेट-फार्म में घुसा तो दोनों लड़कियों की आँखें डिब्बों के हर दरवाजे से टकराने लगीं, यहाँ तक कि एकाएक हमीद की शकल दिखाई दी जो उन्हें देख-देख कर हाथ हिला रहा था।

शकीला तो खासतौर पर पहले खुश हुई और फिर घबरा गई। उस घबराहट में शरम भी मिली हुई थी। गाड़ी रुकी तो हमीद छलाँग

लगाकर डिब्बे से नीचे उतर आया, उसने जुबेदा के कन्धे पर हाथ रखा और दूसरे बाजू के घेरे में शकीला को ले लिया। शकीला के लिए यह एक नया ही अनुभव था, खासतौर पर उस जगह जहाँ हजारों लोग और घूम रहे थे। सनसनाहट की एक लहर उसके शरीर में दौड़ गई, और उसने दाँयें-बाँयें नजरें दौड़ाईं। उसे लग रहा था जैसे प्लेटफार्म पर सब लोग उन्हीं की ओर देख रहे हैं, परन्तु खुद आँखें उठाकर देखा तो पता चला कि किसी का उनकी ओर ध्यान ही नहीं था। सब लोग अपने-अपने ध्यान में लगे हुए थे। हमीद की यह हरकत भी बिल्कुल स्वाभाविक अन्दाज में थी। उसने शकीला को यह महसूस नहीं होने दिया कि जैसे वह कोई अनोखी हरकत कर रहा हो। उसने कहकहा लगाते हुए कहा—'तुम दोनों लड़कियों ने तो कमाल ही कर दिखाया। आपा भई मान गये तुम्हें। मुझे इस बात की उम्मीद नहीं थी कि तुम इतनी होशियार निकलोगी। तुमने वह काम कर दिखाया जिसको मैं ख्वाब में भी नहीं सोच सकता था। और शकीला! तुम भी सचमुच बड़ी बहादुर लड़की हो।'

जुबेदा ने बनावटी गुस्से से कहा—'यह देखो, शकीला को खाम-ख्वाह बहादुर बनाया जा रहा है। अरे, यह तो बिल्कुल चुहिया की तरह डर गई थी। इसने तो छोटी उँगली तक नहीं उठाई। जो कुछ किया सो मैंने किया।'

इस पर शकीला हल्का सा ताव खा गई। दरअसल वह यह नहीं चाहती थी कि हमीद उसे इस तरह बुजदिल समझे। फौरन ही बोली—'आपा, आपने जो कोशिश की उसके लिए मैं सच्चे दिल से आपका शुक्रिया अदा करती हूँ, लेकिन यह कहाँ का इन्साफ है कि आप मुझे बिल्कुल ही बुजदिल बना रही हैं।'

हमीद ने बहन को कुछ समझाने के लिए चुपके से उसका बाजू दबाते हुए कहा—'शकीला ठीक ही तो कहती है। पुरानी कहावत चली आती है कि ताली दो हाथ से बजती है, भला शकीला ही आने से इन्कार कर देती तो फिर तुम क्या कर लेतीं; देखो आपा इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। सच पूछो तो मैं तुम दोनों का एहसान मानता हूँ, और दोनों को ही सैल्यूट करता हूँ।'

जुबेदा हमीद के कान तक मुँह ले जाकर धीमे से बोली—'सब समझती हूँ, अपनी होने वाली बेगम की अभी से ही खुशामद करने लगे हो।'

हमीद भी उसके कान में फुसफुसा कर बोला—'माफ करना आपा, तुम तो मर्द की मजबूरी समझती ही हो।'

यह सुनकर जुबेदा ने जोर का कहकहा लगाया और कहा—'इधर बातों में लगे हो, जरा अपने सामान का भी तो ख्याल करो। किसी कुली से कह दिया कि नहीं ?'

हमीद ने चौंककर डिब्बे की तरफ देखा और कहा—'अरे हाँ तुमने ठीक ही कहा; कुली, ऐ कुली।'

दो-तीन कुली उसकी ओर भागे आये। उन्होंने देखा कि वह फौजी अफसर है और उससे भाड़े के अलावा बख्शीश भी मिलने की उम्मीद थी। हमीद ने खिड़की के निकट खड़े होकर बेंत से इशारा करते हुए कहा—'देखो वह ऊपर की सीट पर मेरा सारा सामान रखा है बस एक कुली का सामान है, ज्यादा कुलियों की जरूरत नहीं।'

उनमें से जो ज्यादा चतुर था वह कुली छलाँग लगाकर अन्दर घुस गया और हमीद ने बहन की ओर देखते हुए कहा—'भई मैं तुम दोनों के लिए कुछ तोहफे भी लाया था, बल्कि तुम्हारी सहेली रेखा के लिए

भी एक साड़ी लाया हूँ। कहीं यह तोहफे गुम हो जाते तो मेरे किये-कराये पर पानी फिर जाता और तुम लोगों को जो दुःख होता सो अलग।'

जुबेदा बोली—'अगर तोहफे गुम हो जाते तो हमें तो इस बात का यकीन ही न आता कि तुम कुछ तोहफे भी लाये थे, अरे मैं तो अफसरों की शान खूब अच्छी तरह समझती हूँ। नाम बड़े और दर्शन छोटे।'

हमीद ने फिर उसके कान में कहा—'आपा, तुम कहती तो ठीक हो, क्योंकि मुझे एक दोस्त से पाँच-सौ रुपये उधार लेने पड़े। आखिर हमें घूमने-फिरने के लिए भी तो रुपयों की जरूरत है। फिर भी तुम्हें मेरी होने वाली बेगम के सामने इस तरह मेरे ढोल की पोल नही खोलनी चाहिए।'

यह सुनकर जुबेदा ने मर्दों की तरह जोरदार कहकहा लगाया। कुली ने सारा सामान लाकर प्लेटफार्म पर रख दिया था और कह रहा था—'क्यों साहब इतना ही सामान है ? कोई चीज छूट तो नहीं गई ?'

हमीद ने धीरे से बेंत बगल में दबा लिया और बोला—'ठीक है अच्छा अपने नम्बर वाला टोकेन हमें दे दो और तुम सामान बाहर ले जाकर इन्तजार करो।'

कुली ने अपना नम्बर दे दिया और सामान उठाकर चला गया। जुबेदा ने पूछा—'कुली को पहले क्यों भेज दिया, क्या यहाँ कोई और काम करना है ?'

'नहीं तो, काम कैसा ? मैं सोच रहा था कि यहाँ रेस्टोरेण्ट में बैठकर हल्का-फुल्का नाश्ता किया जाय और एक-एक कप चाय भी पी लिया जाय। क्यों शकीला तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

शकीला कुछ उत्तर दे भी न पाई थी कि जुबेदा बोल उठी—'अरे वाह ! शादी हुई नहीं और अभी से बेगम से हर बात में सलाह-मशविरा करने लगे ।'

शकीला ने शरमा कर अपने दुपट्टे का कोना दाँतों में दबाकर मुँह दूसरी ओर फेर लिया । तब हमीद ने बहन से पूछा—'आई एम सॉरी आपा, क्या तुम्हें इस बात पर कोई एतराज है ?'

'बिल्कुल एतराज है ?'

'वह क्यों ?'

'इसलिए कि मेरी सहेली तो आपका नाश्ता तैयार करके बैठी होगी और तुम……।'

'ओह ! तो यह बात है ? मैंने सोचा था कि जरा अकेले में बैठकर……।'

जुबेदा ने भाई को दोनों हाथों से हल्का सा धक्का देते हुए कहा—'तुम तो अभी से जोरू के गुलाम नजर आने लगे हो । चिन्ता काहे की करते हो, तुम दोनों को अलग बैठने का पूरा-पूरा मौका दिया जायगा ।'

'बहुत अच्छा-बहुत अच्छा' यह कहते-कहते हमीद फाटक की ओर बढ़ा ।

वे तीनों स्टेशन के बाहर निकले, और उन्होंने टैक्सी किराये पर ली ताकि तीनों इकट्ठे बैठ सकें । टैक्सी में बैठने से पहले हमीद ने जुबेदा और शकीला से कहा—'अगर आप चाहें तो मैं आगे ड्राइवर के साथ बैठ जाऊँ, लेकिन मुझे खुशी इसी बात में होगी कि अगर आप मुझे अपने बीच में बैठा लें, ताकि आप मेरे बाँयें हाथ हों और…………और……'

शकीला यह बात सुन कर इतनी शर्माई कि उसने मुँह दूसरी ओर फेर लिया। जुबेदा ने हँस कर कहा—'भई मुझे तो यह बात मन्जूर है, लेकिन शकीला से इजाजत लेना तुम्हारा काम है।'

कुली ड्राइवर की मदद से मोटर के पीछे सामान रखने लगा और हमीद शकीला की खुशामद करते हुए धीरे से बोला—'शकीला है तो यह मेरी ज्यादती, लेकिन अगर आप इजाजत दें तो।'

शकीला जमीन की तरफ देखती रही परन्तु मुँह से कुछ नहीं बोली। अब हमीद ने बेबश होकर बहन की ओर देखा और बोला—'कहो आप अब मैं क्या करूँ? यह तो बोलती ही नहीं। तुम मेरी कुछ मदद करो ना।'

जुबेदा ने हाथ हिलाते हुए कहा—'न बाबा! मैंने क्या तुम दोनों का ठेका ले रखा है? मैं उसे अलीगढ़ से यहाँ तक ले आई, क्या अब तुम उसे कार में अपने साथ भी नहीं बैठा सकते हो?'

'देखो; मैं शकीला का दिल नहीं दुखाना चाहता। वह इतनी दूर से यहाँ आई है, तो इसका क्या फायदा कि उसे खामख्वाह मेरी किसी हरकत से दुःख पहुँचे।'

जुबेदा—'मत घबराओ उसे कुछ दुःख नहीं होगा। आखिर इतनी दूर से तुमसे मिलने के लिए तो आई है, आखिर यह कैसे हो सकता है कि अब तुम्हीं से मिल कर उसे दुःख हो। बुद्धू कहीं के इतनी सी बात भी नहीं समझते।'

हमीद—'सच कहती हो आपा, मैं इस मामले में सचमुच बहुत बुद्धू हूँ। मैं औरतों के मन को नहीं पहचानता।'

अब फिर जुबेदा और शकीला दोनों को बड़े जोर की हँसी छूटी। शकीला तो अपनी हँसी बन्द करने के लिए मुँह में दुपट्टे का गोला

ठूसने लगी। अब जुबेदा ने दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हुए कहा, 'जा बच्चा तुझ पर दया आती है। अब तू अपनी महबूबा से बस इतना ही कह दे कि मैं आपके साथ बैठ जाऊँ तो आप इस पर एतराज करेंगी। अगर वह कहे कि हाँ एतराज करूँगी तो फिर तुम उसके साथ न बैठना लेकिन अगर वह चुप रहे और जवाब न दे तो चुपके से उसके साथ बैठ जाना। खुदा तेरा भला करेगा।'

हमीद यह सुनकर हँसा, फिर उसने यही बात शकीला से पूछी तो शकीला ने कुछ जवाब नहीं दिया। तब हमीद ने कहा—'शकीला जी, आप से दरख्वास्त करता हूँ कि आप कार की पिछली सीट पर बैठ जाइये।'

शकीला चुपचाप अपना गरारा समेट कर पिछली सीट पर बैठ गई। उसके साथ हमीद बैठा और हमीद के साथ जुबेदा। टैक्सी चली तो हमीद ने शकीला के कान के पास मुँह ले जाकर कहा—'आपा ने तरकीब तो अच्छी बताई, लेकिन शकीला अगर तुम ही यह तरकीब बता देतीं तो कितना अच्छा होता। मुझे आपा की खुशामद तो न करनी पड़ती।'

यह सुनकर शकीला चुपचाप मुस्करा दी।

इसी तरह हँसते-बोलते वे तीनों जुबेदा की सहेली रेखा के घर पहुँचे। टैक्सी की आवाज सुनकर रेखा दरवाजे पर ही आ खड़ी हुई, और उसने वहीं पर अपने मेहमानों का स्वागत किया। हमीद पहले भी रेखा से मिल चुका था, फिर भी उसने कहा—'क्यों रेखा दीदी आपने मुझे पहचाना कि नहीं ?'

रेखा खिलखिला कर हँसते हुए बोली—'लो यह अच्छी रही; भला मैं तुम्हें नही पहचानूँगी ?'

हमीद—'आपको मुझसे मिले काफी समय गुजर चुका है इसीलिए तो मुझे शक हो रहा था कि शायद आप······।'

जुबेदा बीच में ही बोल उठी—'अरे क्यों घबराते हो, तुम्हें यही फिक्र पड़ी होगी कि कहीं रेखा ने न पहचाना तो नाश्ता-पानी ही न मिलेगा। फिकर मत करो रेखा तुम्हें न भी पहचानेगी तो मेरे कहने से तुम्हें पेट भर कर खिला-पिला देगी।'

हमीद ने आपा की बात सुनकर जोरदार कहकहा लगाया और रेखा से पूछने लगा—'हमारे जीजा जी कहाँ हैं ? क्या अन्दर घुसे बैठे हैं ?'

रेखा—'वह तो तुम्हारा इन्तजार करते-करते कुछ ही देर पहले दफ्तर गये हैं।'

इधर यह बातें हो रही थीं और उधर टैक्सी का ड्राइवर सामान उठाकर रेखा के नौकर के हवाले कर रहा था। नौकर सामान लेकर अन्दर चला तो हमीद ने टैक्सी वाले को किराया दिया और फिर औरतों के पीछे-पीछे घर में घुस गया।

अन्दर पहुँच कर रेखा ने यूँ ही कह दिया—'और सुनाओ हमीद क्या-क्या खबरें हैं ?'

हमीद—'सबसे जरूरी खबर तो यह है कि मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं। मैंने तो आपा से कहा था कि स्टेशन पर ही कुछ देर बैठ कर खा-पी लें, लेकिन वह नहीं मानीं और मुझे भूखे ही यहाँ तक आना पड़ा।'

यह सुनकर सबने बड़े जोर का कहकहा लगाया और जुबेदा ने अपनी सहेली से कहा—'रेखा हमारा हमीद खबरें सुनाने में किसी भी रेडियो से कम नहीं है। शर्त सिर्फ यह है कि हमारे इस रेडियो का पेट भरा होना चाहिए।'

रेखा ने खिलखिला कर हँसते हुए कहा—'अच्छा तो मैं अभी नाश्ता लगाती हूँ।'

यह कह कर वह रसोईघर की ओर चली तो हमीद भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। जुबेदा ने पुकार कर कहा—'ऐ भाई साहब, खाने का कमरा इधर है, उधर बावर्चीखाने में तुम्हें कुछ भी खाने को नहीं दिया जायगा।'

हमीद ने जवाब दिया—'इसकी फिकर न करो आपा, बावर्चीखाने में खाने को नहीं मिला तो क्या हुआ, मैं अभी सूँघ कर ही गुजारा कर लूँगा।'

अब वह रेखा के साथ बावर्चीखाने में जा घुसा और खाने की जो-जो चीज दिखाई दी उसमें से एक-एक टुकड़ा उठाकर उसने मुँह में डाल लिया। फिर वह रेखा से कहने लगा—'दीदी; आप यह न समझियेगा कि मैं बड़ा भुक्खड़ हूँ। दरअसल बात यह है कि मुझे चोरी करके खाने में बड़ा मजा आता है।'

रेखा ने आँखें मटकाकर कहा—'तुम निश्चिन्त होकर खाओ। मैं सब कुछ समझती हूँ।'

हमीद भरे मुँह के साथ हँसा और बोला—'आपका हुक्म मानना मैं अपना फर्ज समझता हूँ।'

रेखा ने उसको पीठ थपथपाते हुए कहा—'क्यों नहीं, क्यों नहीं, आज-कल तुम्हारे जैसा कहना मानने वाले भाई मिलते कहाँ हैं ?

इतना कह कर रेखा ने बात का विषय बदलते हुए कहा—'लेकिन यह तो बताओ कि तुम सरकारी काम से आये हो या शकीला से मिलने के लिए छुट्टी लेकर आये हो ?'

'बाप रे !·········तो क्या आपको मेरी मुहब्बत की कहानी का भी पता चल गया है ?'

'हाँ ।'

'वह कैसे ?'

'सीधी सी बात है, सारा संसार यही तो कहता है कि इश्क और मुश्क छिपाये नहीं छिपते, यह अलग बात है कि प्रेम करने वाले यही समझते हैं कि प्रेम के इस खेल को और कोई नहीं देख रहा, लेकिन या तो वह भोले और मूर्ख होते हैं, या अपने विचारों में इतने मग्न होते हैं उन्हें इस बात का पता ही नहीं चलता कि सारा संसार उनकी हरकतें देख रहा है। लेकिन तुमने मेरी बात का तो उत्तर दिया ही नहीं ।'

'हाँ-हाँ, दीदी ! मैं सरकारी छुट्टी पर ही आया हूँ ।'

इस तरह बातें करते-करते वे दोनों खाने के कमरे में पहुँचे, और वहाँ हमीद चिल्ला उठा—'ऐ आपा ! तुम्हें क्या मैंने अपने दिल का भेद इसीलिए बताया था ?'

जुबेदा ने मुस्करा कर सिर उठाया और हमीद की ओर देखते हुए बोली—'क्या कहते हो ? कौन सा भेद ?'

हमीद—'वाह ! कैसी भोली बनती हो जैसे कुछ पता ही न हो; मैं पूछता हूँ कि हमारी रेखा दीदी को इन सब बातों का कैसे पता चला ?'

जुबेदा सब कुछ समझ गई, परन्तु अभी वह उत्तर भी न दे पाई थी कि रेखा बीच में ही बोल उठी—'मैंने तो कैप्टन साहब को बताया है कि इश्क और मुश्क कभी नहीं छुपते ।'

'अजी यह सब कहने की बात हैं। असलियत तो यह है कि औरतें पेट की बड़ी हल्की होती हैं। उन्हें कोई भी बात नहीं पचती ।'

जुबेदा—'मर्द का तो यह कायदा ही है कि औरतों की बुराईयाँ करते रहते हैं।'

हमीद—'बिल्कुल झूठ! अजी मर्दों को तो औरतों की हद से ज्यादा खुशामद करनी पड़ती है। जब तक उनकी खुशामद न की जाये तब तक वह काबू में नहीं आतीं।'

जुबेदा—'गोया तुम यह कहना चाहते हो कि मर्द खुशामदी टट्टू होते हैं।'

'निरे खुशामदी टट्टू नहीं होते बल्कि मर्द वह टट्टू होते हैं कि जिन्हें न सिर्फ अपनी बीबी का बल्कि उसके बच्चों का, घर की अनगिनत चीजों का बोझ उठाना पड़ता है।'

रेखा ने छेड़ने के लिए शकीला की ओर देखा और बोली—'देख लो शकीला, यह हैं तुम्हारे होने वाले मियाँ के विचार।'

हमीद तिलमिला कर बोला—'वाह, शकीला से क्या कहती हैं, आप मुझसे बात कीजिये ना? आप हम दोनों को लड़ाने की कोशिश कर रही हैं क्या?

रेखा बोली—'अजी मैं कोशिश क्या करूँगी?' क्या तुम शकीला को इतनी बेवकूफ समझते हो कि वह तुम्हारी बातों से इस बात का अन्दाजा लगा सके कि औरतों के बारे में तुम्हारे विचार क्या हैं? वह सब समझती है।'

हमीद—'मैं भी सब समझता हूँ। पहले तो हमारे प्रेम की कहानी फैलाई गई और अब हमारी आपस में लड़ाई कराने की कोशिश हो रही है।'

रेखा हँस कर बोली—'तुम्हारी तिलमिलाहट से इतना पता तो चल गया कि तुम शकीला पर बुरी तरह मरते हो।'

हमीद ने फर्श पर जोर से पैर मार कर कहा—'हाँ-हाँ, मरता हूँ मरता हूँ बेशक मैं शकीला पर मरता हूँ।'

जुबेदा और रेखा खिलखिला कर हँसने लगी बेचारी शकीला शर्म के मारे सिकुड़ी जा रही थी और उसका चेहरा मारे शर्म के लाल हो रहा था। जुबेदा ने उसी तरह हँसते-हँसते कहा—'अभी तो सिर्फ मुझे और रेखा को ही उसका पता है लेकिन अब तो सभी जान जायेंगे।'

हमीद—'वह कैसे ? आप बतायेंगी या रेखा दीदी।

'जुबेदा—'न मैं और न रेखा बल्कि बताने वाले तो तुम हो।'

हमीद—'वह कैसे ?'

जुबेदा—'अभी तो तुम इतना चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे कि मैं शकीला पर मरता हूँ, अब तो तुम्हारी आवाज अड़ोस-पड़ोस वालों तक भी पहुँच गई होगी। इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि औरतों को दोष देना बिल्कुल बेकार है।'

रेखा बोली—'बस-बस जी अब इस बात को खत्म कीजिये। देखो न, बेचारी शकीला को कितनी शर्म आ रही है।'

हमीद ने भी महसूस किया कि अब इस विषय को बदल देना चाहिए। सच्ची बात तो यह थी कि उसके मन में भी कोई गुस्सा नहीं था, वह तो दिल बहलावे के लिए उनसे छेड़-छाड़ कर रहा था। शकीला को शर्माते देख कर उसने भी महसूस किया कि अब इस बात को घसीटना ठीक नहीं। यही सब बातें सोच कर हमीद ने जोर का कहकहा लगाया और कहा—'शकीला, किसी बात का बुरा न मानना, ऐसी छेड़-छाड़ तो चलती रहती है।'

रेखा ने खास कर शरारत भरे स्वर में कहा—'हाँ भई शकीला,

तुम्हें अब छेड़-छाड़ की आदत डाल लेनी चाहिए क्योंकि शादी के बाद मर्द लोगों की छेड़-छाड़ करने की बड़ी आदत होती है।'

जुबेदा ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा—'अजी शादी के बाद तो छेड़-छाड़ की बस हद ही हो जाती है, लेकिन शादी से पहले भी मर्द लोग कुछ कम हरकतें नहीं करते।'

रेखा ने मुस्करा कर जुबेदा की ओर देखा। वह जानती थी कि जुबेदा यह सब कुछ हमीद को तंग करने के लिए कह रही थी। उसने भी हाँ में हाँ मिलाई और बोली—'यह तो आप बिल्कुल ठीक ही कहती हो बहन।'

हमीद ने खाते-खाते एक दम हाथ रोक लिया और अपनी अँगुलियों में पकड़े हुए काटें को हिला कर बोला—'देखिये, अब आप बेकार मर्दों को बदनाम कर रही हैं। यह मैंने अक्सर देखा है कि जहाँ चार औरतें मिल कर बैठती हैं, वहीं मर्दों की बुराई शुरू कर देती हैं।'

जुबेदा—'यह तो मर्दों के अपने बोये हुए बीजों का नतीजा है कि औरतें उनकी बुराई करने पर मजबूर हो जाती हैं।'

हमीद—'क्या मतलब ?'

जुबेदा—'मतलब यही कि मर्दों की छेड़खानी इतनी बढ़ गई है कि औरतों के नाक में दम आ गया है।'

हमीद—'यह अच्छी बात कही आपने। मर्द तो उल्टे औरतों की खुशामद करते हैं।'

जुबेदा—'बस-बस, रहने दो। वह खुशामद भी तो अपना उल्लू सीधा करने के लिए करते हैं।'

हमीद—'अब इसका कारण कुछ भी हो, लेकिन इतना तो आप मानती हैं कि मर्दों को बड़ी खुशामद करनी पड़ती है।'

जुबेदा—'तो न करो भई ! किसी डाक्टर ने तो कह नहीं रखा कि वे खुशामद किया करें। जरा यह भी तो सोचो कि वह लड़कियों को परेशान कितना करते हैं। जरा लड़की पास से निकल जाये तो कुछ न कुछ बात जरूर कहेंगे और बड़ी शराफत दिखाई तो सीटियाँ बजाने लगते हैं। मतलब यह है कि मर्दों से खुदा ही बचाये।'

यह सुनकर हमीद ने जोरदार कहकहा लगाते हुए कहा—'कम से कम यह भी तो बताइये कि मर्दों से बच कर औरतों का ठिकाना भी कहाँ है ?'

'मैं तो समझती हूँ कि औरतों का अपना अलग से देश हो जिसमें कोई मर्द पाँव भी न रख सके बल्कि जिन्दगी भर किसी मर्द की शक्ल भी दिखाई न दे।'

हमीद ने कोहनी मेज पर जमा कर बहन की ओर गर्दन बढ़ाते हुए कहा—'तो क्या मैं अपने होने वाले जीजा जी को लिख दूं कि आपकी होने वाली बेगम का ख्याल यह है कि वह किसी मर्द की शक्ल भी नहीं देखना चाहतीं।'

अब रेखा बीच में बोल उठी—'इस झगड़े का फैसला शकीला को करना चाहिए क्योंकि हम सब लोग तो आपस में झगड़ा कर रहे हैं। एक वही चुपचाप बैठी हमारी बातें सुन रही है इसलिए वह इस बात का फैसला भी कर सकती है।'

हमीद झट से बोला—'अजी मैं उसका फैसला अच्छी तरह जानता हूँ।'

रेखा—'वह क्या ?'

हमीद—'उसके भी वही ख्याल हैं, जो मेरे हैं।'

रेखा—'आपको यह कैसे मालूम ?'

हमीद—'इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि शकीला बहुत समझदार लड़की है। दूसरा कारण यह है कि वह अपने होने वाले मियाँ के विरोध में कुछ नहीं सोच सकती।'

रेखा ने कहकहा लगाकर कहा—'वाह मियाँ मैं आपकी होशियारी मान गई। इसी को कहते हैं कि एक तीर से दो शिकार। एक तरफ तो शकीला को समझदार कहकर उसकी खुशामद करते हो और दूसरी तरफ उसे यह भी समझाते हो कि पत्नी को पति के विचारों का विरोध नहीं करना चाहिए।'

जुबेदा बोली—'बस यही तो मर्दों की खास बात है, सारी उम्र औरतों को चकमें देते रहते हैं।'

हमीद ने शकीला की ओर देखते हुए कहा—'देखो शकीला तुम इनकी बातों में बिल्कुल न आना। यह तो मानी हुई बात है कि इस दुनियाँ के लोग दो मुहब्बत करने वाले दिलों के दुश्मन होते हैं। इस झगड़े का तो आज तक कोई फैसला ही नहीं हो सका कि औरत मर्द पर जुर्म करती है या मर्द औरत पर। मेरी राय में इनमें से कुछ भी नहीं होता। कोई किसी पर जुर्म नहीं करता। खुदा ने मर्द और औरत को एक दूसरे के साथ निबाह करने के लिए बनाया है।'

रेखा बोली—'देख लो जुबेदा, हमीद भी अपनी कला का उस्ताद है। कैसे-कैसे झाँसे दे रहा है, शकीला को?'

हमीद ने फिर भी रेखा की बात का उत्तर न देते हुए शकीला से कहा—'देख रही हो शकीला। यह नहीं चाहतीं कि इन छुट्टियों में हम दोनों ने जो एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर हँसी-खुशी के कुछ दिन गुजारने का प्रोग्राम बनाया है, वह पूरा हो। यह तो उसमें अड़ंगा लगाना चाहती हैं।'

जुबेदा ने हाथ उठाकर कहा—'बस रेखा, बस ! काफी मजाक कर लिया हम दोनों ने। बेचारी शकीला तो बिल्कुल ही भोली-भाली है। दुनियादारी की बातों को बिल्कुल नहीं समझती। कहीं ऐसा न हो कि मजाक ही मजाक में शकीला उलटी बात समझ ले।'

रेखा ने कहकहा लगाकर कहा—'नहीं जी, यह कैसे हो सकता है? हम तो यों ही छेड़-छाड़ करके मौज ले रहे हैं।'

जुबेदा ने भाई की ओर मुँह करते हुए कहा—'हाँ हमीद मजाक खत्म हुआ, अब आगे का क्या प्रोग्राम है ? मेरा मतलब है कि यहाँ से कब चलें, कहाँ चलें, और जहाँ जायेंगे वहाँ रहने-सहने का और खाने-पीने का क्या इन्तजाम होगा ?'

हमीद ने कहा—'रहने और खाने-पीने का इन्तजाम तो मुझ पर छोड़ दीजिये। रही यहाँ से चलने की बात तो चाहे कल चलिये, चाहे आज शाम तक, या अभी ही चलें।'

रेखा—'भई नहीं हम पहले कह चुके हैं कि आज नहीं जाने देंगे। आखिर यह क्या मजाक हो रहा है, जब एक बात तय हो गई कि कल से पहले नहीं जा सकते तो फिर बार-बार उसी बात को छेड़ने का क्या मतलब ?'

जुबेदा ने रेखा को तसल्ली देते हुए कहा—'अच्छा भई तुम्हारी बात मान गये, लेकिन अब यह तो पता चलना चाहिए कि कल यहाँ से चल कर पहले कहाँ जाना होगा ? खण्डाला या पूना ?'

हमीद—'पहले हम खण्डाला जायेंगे वह पूना के रास्ते में ही पड़ेगा और वह जगह भी बहुत खूबसूरत है।'

———

नौ

दूसरे दिन रेखा ने बड़ी मुश्किल से जाने की इजाजत दी। उसने यहाँ तक कह दिया कि तुम लोग इस तरह चले जाओगे तो मैं गुस्सा हो जाऊँगी। फिर जुबेदा ने उसे अलग ले जाकर समझाया कि यदि वह वहीं के वहीं रुके रहे तो जिस काम से वह आये थे वह नहीं हो पायेगा। आखिर शकीला और हमीद के लिए आपस में मिल बैठने का यह एक सुनहरा मौका था। इसका पूरा-पूरा लाभ उठाना उनके लिए आवश्यक था।

सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि रेखा के पतिदेव भी अपनी पत्नी का साथ दे रहे थे। उनकी बहुत बड़ी इच्छा थी कि उनके मेहमान दो-तीन दिन तो उनके यहाँ टिकें। अपने पति का सहारा पाकर रेखा और अड़ गयी। जुबेदा ने समझाते हुए कहा—'देखो रेखा, मैं तुम्हें सारी परिस्थिति समझा चुकी हूँ। अगर इन दोनों के इकट्ठे रहने का मामला न होता तो मैं यहीं रुक जाती। हमीद को छुट्टियाँ तो मिलीं नहीं, वह सरकारी छुट्टी पर आया है। यह अलग बात है कि हम उसके साथ-साथ घूमती रहें, ताकि उसका हमारा साथ भी रहे और वह काम भी करता रहे।'

रेखा ने जुबेदा के बाजू में चुटकी लेकर कहा—'मेरी समझ में त
यह नहीं आता कि तुम इन दो प्रेमियों के साथ बँधी-बँधी क्यों घूम रह
हो। उन दोनों की मजबूरी तो समझ में आती है, लेकिन तुम्हारी क्या
मजबूरी है, यह बात मेरी समझ में नहीं आई ?'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यही कि तुम उन दोनों प्रेमियों को इकट्ठे घूमने-फिरने
दो। जहाँ तक तुम्हारा सम्बन्ध है तुम यहीं मेरे पास टिकी रहो।'

जुबेदा ने रेखा की ठुड्डी को उँगलियों से पकड़ते हुए कहा—'वाह
री मेरी भोली रेखा ! भोलेपन की भी कोई हद होती है। जरा सोचो
तो कि वे दोनों अभी बिल्कुल जवान हैं, एक दूसरे को बहुत चाहते हैं,
अगर उन्हें दिन-रात अकेले रहने का मौका मिल जाय तो इस बात का
डर है कि कहीं वह गलत हरकत न कर बैठें। अभी शादी तो क्या
उनकी मँगनी भी नहीं हुई। इस बात का भी डर है कि शायद शकीला
के अब्बा अपनी जिद पर अड़े रहें और हमीद से शकीला की शादी न
हो पाये। इधर अकेले वह कोई ऐसी-वैसी हरकत कर बैठे तो कुछ दिनों
तक बेचारी शकीला नई मुसीबत में पड़ जाय। तब, जरा सोचो तो, कि
मेरी कितनी बदनामी होगी। मामूजान बड़ी जिद्दी तबियत के आदमी
हैं, इसलिए हो सकता है कि हमारे दोनों खानदानों की अनबन हो जाय,
और इसकी जिम्मेदारी मुझ पर आयेगी।'

जुबेदा की यह बातें सुनकर रेखा कुछ सोच में डूब गयी। जुबेदा ने
फिर समझाया—'मेरे साथ रहने से उन पर काफी रोक होगा। मैं दिन
में उन्हें कुछ देर के लिए अलग बातें करने को छोड़ सकती हूँ, लेकिन
रात के समय तो मैं शकीला को अपने पास ही सुलाऊँगी। देखो रेखा,
बुरा मत मानना, तुम तो जानती ही हो कि जवानी दिवानी होती है,

इसलिए जब तक इन दोनों की शादी न हो जाय तब तक इन पर कुछ न कुछ रोक तो होनी ही चाहिए।'

रेखा ने जुबेदा का हाथ थामकर कहा—'तुम ठीक ही कहती हो माफ करना जुबेदा बहन, मैंने इस बात को इतनी गहराई से नहीं सोचा था।'

इस तरह उन तीनों को वहाँ से जाने की इजाजत मिली। जाते-जाते हमीद ने वायदा किया कि अगर उसे कुछ और दिन रुकने की इजाजत मिल गई और बम्बई का भी कोई काम निकल आया तो वह लौटते समय उन्हीं के यहाँ रुकेगा।

× × ×

अब गाड़ी में अपना हल्का-फुल्का सामान रख कर यह तीनों मुसाफिर खण्डाला की ओर चल दिये। रास्ते में हमीद ने शकीला से कुछ बेतकल्लुफी के अन्दाज में बात-चीत करनी चाही लेकिन शकीला बेतकल्लुफ नहीं हो सकी, शायद वह जुबेदा के कारण शर्माती रही। आखिर हमीद ने मजाक ही मजाक में बहन से कहा—'वाह री आपा, तुम्हारी वजह से तो शकीला का मुँह ही नहीं खुल रहा, अरे इससे अच्छा तो यही था कि तुम रेखा के पास ही टिकी रहतीं।'

जुबेदा ने प्यार से उसका कान पकड़ कर दबाया और बोली—'शैतान कहीं के, मैं तुम्हारी सब हरकतें अच्छी तरह समझती हूँ। खैर इन बातों के लिए तो पूरी जिन्दगी पड़ी है। तुम बेफिक्र रहो। तुम्हें हरकत करने का मौका मिलेगा, लेकिन यह तो बताओ कि अब हम खण्डाला में रहेंगे कहाँ?'

'उसकी चिन्ता ही न करो आपा, तुम्हें ऐसी जगह ठहराऊँगा कि बस खुश हो जाओगी।'

'गपोड़ी कहीं के, मुझे तुमसे डर ही लगता है, तुम कहते कुछ और हो और करते कुछ और हो।'

'यह क्या कह रही हो आपा? जरा यह तो सोचो कि तुम्हारी इन बातों का मेरी होने वाली बेगम के दिल पर क्या असर होगा। वह यही समझेगी की मेरी किसी बात पर भरोसा नहीं किया जा सकता।'

'पहले यह बताओ, कि खण्डाला में रहने का प्रबन्ध क्या है?'

'खण्डाला में हमारे एक रईस दोस्त ने बहुत ही खूबसूरत बँगला बनवा रखा है, उसकी चाबी मेंरे पास है। कहो, अब तुम्हारी कुछ तसल्ली हुई कि नहीं?'

'हो गई।'

'हाँ, आपने अपनी तसल्ली तो कर ली, लेकिन मेरा काम बिगाड़ दिया।'

'अरे क्या काम बिगाड़ा है मैंने? तू समझता है कि शकीला इतनी ही बेवकूफ है कि मेरी दो-चार मजाक की बातों से वह तुम्हारे बारे में एक बुरी राय बना लेगी?'

हमीद चहक कर बोला—'अच्छा, यह बात है तो तुम जरा बीच में से हट जाओ। मैं खुद ही शकीला से बातें करता हूँ।'

'तो मैं क्या तुम दोनों के बीच में दीवार बनकर खड़ी हुई हूँ लो मैं सामने की सीट पर बैठ जाती हूँ। तुम अपने मन का गुबार निकाल लो। लेकिन यह बात याद रखो कि बेकार की हँसी-मजाक नहीं होनी चाहिए, जो बात पूछो सो गम्भीरता से पूछो।'

'हाँ-हाँ, तुम मत घबराओ आपा, ऐसे ही होगा।'

इतना कह कर उसने शकीला की ओर देखते हुए कहा—'देखो

शकीला, मैं तुमसे बड़ी गम्भीर बात पूछने जा रहा हूँ, तुम उसका जवाब उसी गम्भीरता से देना। कहो दोगी ना ?'

शकीला मुँह से कुछ नहीं बोली परन्तु उसने 'हाँ' में सिर हिला दिया।

हमीद ने जरा सा खाँस कर पूछा—'मैं जानना चाहता हूँ कि क्या तुम अच्छी चाय बना लेती हो ?'

यह सुनते ही शकीला बड़े जोर से हँसी और हमीद ने बनावटी आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए पूछा—'अरे ! तुम हँस रही हो ? बड़ी अजीब बात है, मैंने तो एक गम्भीर प्रश्न किया था और तुम उसके बदले में हँसे जा रही हो।'

शकीला फिर भी कुछ न बोली, वह दुपट्टे का कोना मुँह के आगे रख कर दाँत छिपाने की कोशिश करती रही, लेकिन उसकी हँसी बन्द होने में ही नहीं आती थी। तब जुबेदा बोली—'तुम्हारी इस गम्भीर बात का जवाब वह चाय बनाकर ही दे सकती है।'

हमीद ने शकीला की ओर देखते हुए पूछा—'क्यों शकीला, ठीक बात है क्या ?'

शकीला फिर भी कुछ नहीं बोली, जुबेदा ने कह दिया—'हाँ भाई यही बात है, क्या तुम्हें मेरी बात का यकीन नहीं है ?'

हमीद—'नहीं, तुम्हारी बात का मुझे कुछ भी यकीन नहीं है। जब तक शकीला मुझे अपने मुँह से नहीं बतायेगी तब तक मुझे यकीन नहीं आयेगा।'

आखिर शकीला को मुँह से बताना पड़ा—'जी हाँ आपा ठीक ही कहती हैं।'

यह सुन कर हमीद ने जोरदार कहकहा लगाया और कहा—'त
तो ठीक है लेकिन याद रखना कि खण्डाला पहुँचकर सुबह से शाम त
तुम्हीं को चाय, नाश्ता और खाना तैयार करना पड़ेगा।'

शकीला फिर भी कुछ नहीं बोली, जुबेदा ने उससे कहा—'अ
शकीला, अपने मुँह से जी हाँ तो कह दे, वरना हमीद तेरे पीछे प
जायेगा।

शकीला ने मजबूरन सिर हिलाकर जी हाँ कह दिया।

इसी तरह अन्य हल्की-फुल्की बातों में उनका समय जल्द बी
गया। गाड़ी खण्डाला स्टेशन पहुँची तो हमीद हैरान होकर बोला—
'अरे क्या हम खण्डाला पहुँच गये।'

जुबेदा ने कहा—'लगता तो है।'

हमीद बोला—'आपा, आप शकीला को लेकर उतरें, मैं कुली क
बुला कर सामान नीचे उतरवाता हूँ।' और हमीद ने एक कुली क
आवाज दी। कुली के आते ही हमीद ने सामान की ओर इशारा कर
हुए कहा—'इसे ले चलो।' और वह गाड़ी के नीचे उतर पड़ा। जुबेद
और शकीला पहले ही नीचे उतर चुकी थीं। तीनों साथ ही गेट की ओ
बढ़े। पीछे-पीछे कुली सामान उठाये चला आ रहा था।

जुबेदा ने पूछा—'हमीद उस बँगले का पता तो ठीक से मालूम है।

'हाँ आपा मेरी डायरी में नोट है।'

गेट नजदीक आ गया था इसलिए वह चुप हो गये। गेट के बाह
आते ही हमीद ने सामान एक टैक्सी पर रखवा कर कुली को पैसे द
दिये। कुली पैसे लेकर चलता बना। हमीद ने टैक्सी वाले को अपन
डायरी में से पता बताया। साथ ही वह तीनों टैक्सी में बैठ गये। टैक्सी
दौड़ने लगी। बड़े ही सुन्दर बँगले दिखाई देते और पीछे निकल जाते

जुबेदा बोली—'हमीद जिस जगह हम जा रहे हैं वह बँगला कैसा है ?'

हमीद—'आपा वह बँगला बहुत सुन्दर है, देखोगी तो खुश हो जाओगी ।'

जुबेदा बोली—'देखो शकीला हमीद कैसा गपोड़ी है खुद तो बँगला देखा नहीं और हमसे गप्प हाँक रहा है ।'

शकीला मुस्कुरा दी कुछ बोली नहीं । थोड़ी ही देर बाद बँगला आ गया था इसलिए सब चुप हो गये । जब वे फाटक में घुसे तो कोई नहीं था । पोर्टिको में पहुँचकर टैक्सी वाले ने टैक्सी रोक दी ।

पहले हमीद उतरा बाद में जुबेदा फिर शकीला, सारा सामान पोर्टिको में रखने के बाद हमीद ने ड्राइवर को भाड़ा दे दिया । ड्राइवर भाड़ा पाकर चलता बना ।

जुबेदा ने कहा—'हमीद यहाँ तो कोई नहीं है ।'

हमीद बोला—'अभी आवाज देता हूँ ।'

हमीद ने जोर से पुकारा—'कोई है ।' हमीद की आवाज सुनकर एक नौकर आया और बोला—'कहिये सरकार ।'

हमीद ने प्रश्न किया—'तुम्हारा नाम प्यारेलाल है ।'

प्यारेलाल—'जी हाँ सरकार ।'

हमीद ने प्यारेलाल की ओर मुस्कराते हुए कहा—'मैं तुम्हारे मालिक का दोस्त हूँ और कुछ रोज यहाँ रहना······।'

बीच में ही बात काट कर प्यारेलाल बोला—'मुझे मालूम है हजूर ! बड़े सरकार का एक खत मुझे इस विषय पर मिल चुका है । उन्होंने मुझे सूचना दी थी कि कैप्टन साहब आ रहे हैं, उनके आराम का ख्याल रखना ।'

'वेरी गुड, अच्छा यह लो चाभी, ताला खोलकर बँगले की सफा
करा दो।'

'जी इसकी डबल चाभी मेरे पास है, मैंने पहले से ही बँगले क
सफाई करा दी है।'

सारा सामान अन्दर पहुँचाया गया। वे तीनों बाहर की ओ
खुलने वाली बड़ी खिड़की के पास कुर्सियों पर बैठ गये। जुबेदा बोली—
'भई हमीद ! आज तो हम भी तुम्हें मान गये।'

हमीद हँसकर बोला—'क्या मान गईं आप ?'

'यही कि खूब अच्छा बँगला ढूँढ़ा है। और फिर यहाँ तो ऐस
लगता है कि जैसे अपने ही मकान में पहुँच गये हों। हर चीज ठिका
से रखी हुई है, हर सामान बिल्कुल साफ-सुथरा और कीमती है।'

बीच में ही शकीला बोल उठी—'आपा, अपना घर तो तब मालू
हो जब खाने-पीने को भी कुछ मिले।'

जुबेदा और हमीद कहकहा लगाकर हँसे, जुबेदा बोली—'देख ल
अभी तक शकीला चुपचाप बैठी थी, अब बोली है तो कितनी मजे क
बात कही है।'

हमीद ने बड़े प्रेम भरी नजर से शकीला की ओर देखते हुए पूछा—
'क्या सचमुच ही तुम्हें जोर की भूख लगी है ?'

शकीला ने सिर हिलाकर कहा—'हाँ लगी तो है।'

हमीद ने चुटकी बजाते हुए कहा—'अच्छा तो अभी बाजार से कु
न कुछ ले आता हूँ।'

जुबेदा ने कहा—'अरे ! शकीला की भूख की बात सुन कर इत
बेचैन हो उठे कि एकदम बाजार भागने की ठान ली। मैं कहती हूँ ि
क्या इस घर में खाने-पीने का कोई इन्तजाम नहीं होगा ? और अग

बाजार से खाना लाने की जरूरत होगी तो नौकर को भेजा जा सकता है। क्या नाम था उस नौकर का ?…हाँ ! प्यारेलाल। तो हमीद, जरा अपने ऊँचे स्वर में उसे आवाज तो दो।'

हमीद ने जोर से आवाज दी—'प्यारेलाल ! प्यारेलाल !'

हमीद के स्वर में एक मर्दाना शान थी, उधर दूर से प्यारेलाल की आवाज सुनाई दी—'हाजिर हुआ हजूर।'

पल भर में ही प्यारेलाल सामने आया और अपने दोनों हाथ पेट पर बाँध कर खड़ा हो गया। और जरा-सा सिर झुका कर बोला—'क्या हुक्म है हजूर ?'

हमीद—'क्यों भई खाने-पीने का भी कुछ इन्तजाम है, या बाजार से मँगवाना होगा ?'

प्यारेलाल—'हजूर खाना तैयार करना होगा। जब तक में खाना तैयार करूँ आप बाग में बड़ी छतरी के नीचे जाकर बैठें। मैंने वहाँ कुर्सी और मेज लगा दी है।'

हमीद ने खुश हो कर आपा और शकीला की ओर देखते हुए कहा—'यह तो बहुत अच्छा आइडिया है। क्यों आपा क्या आप लॉन में बैठना पसन्द करेंगी ?'

जुबेदा खुश होकर बोली—'क्यों नहीं-क्यों नहीं—ख्याल तो सचमुच बहुत अच्छा है। क्यों शकीला ?'

शकीला—'सचमुच ही लॉन पर बैठ कर तो खाना-खाने का बहुत ही मजा आयेगा।'

हमीद ने नौकर की ओर देखते हुए कहा—'हाँ प्यारेलाल जब खाना बन जाये तो हमें बता देना।'

'बहुत अच्छा हजूर।'

इतना कहकर प्यारेलाल दरवाजे की ओर बढ़ा तो हमीद ने जल्दी से अपनी बहन से कहा—'जाकर सब चीजें बता दें कि क्या-क्या बनाना है। नौकर आखिर नौकर ही है।'

जुबेदा हमीद के मन की बात समझ गई कि इसी बहाने हमीद शकीला से बात-चीत करना चाहता है। वह मुस्करा कर बोली—'यह ख्याल भी अच्छा है। अच्छा तो मैं चलती हूँ।'

यह कहकर वह नौकर के पीछे-पीछे चल दी।

अकेले रह जाने पर हमीद ने अपनी कुर्सी खसका कर शकीला के निकट कर दी और बोला—'देखो शकीला, अब हमको इतना सुनहरा मौका मिला है कि हम मियाँ-बीबी बड़े मजे से घुल-मिल कर बातें कर सकते हैं।'

शकीला ने यह बात सुनी तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया वैसे तो शायद वह कुछ न कुछ बोलती परन्तु हमीद के 'मियाँ-बीबी' के शब्द कह देने से वह हड़बड़ा गयी और मुँह से कुछ नहीं बोल सकी।'

उसका चेहरा लाल होते देख कर हमीद समझ गया कि उसकी किस बात से शकीला की यह दशा हुई है, वह फौरन ही बोला—'माफ करना शकीला! मेरे मुँह से यह लफ्ज अचानक निकल गये। लेकिन इतना शर्माने की भी क्या जरूरत है? यह ठीक है कि दुनियाँ वालों की नजर में हमारी शादी नहीं हुई, लेकिन वह तो हो ही जायगी। असल बात तो यह है कि जब दो मुहब्बत वाले दिल मिल जाते हैं तो अल्लाह की नजर में उनकी शादी हो जाती है। जरा सोचो तो, अब मैं तुम्हारे सिवा किसी और को अपनी बीबी के रूप में नहीं देख सकता इसी तरह मुझे पूरा यकीन है कि तुम भी मेरे सिवा किसी और को अपने मियाँ के रूप में नहीं देख सकतीं। क्यों, मैं ठीक कहता हूँ ना?'

शकीला ने मुँह से कुछ नहीं कहा, सिर्फ हाँ में सिर हिला दिया। हमीद बोला—'देखो शकीला, मैं तो तुम्हारी सुरीली आवाज सुनना चाहता हूँ, लेकिन तुम मुँह से कुछ बोलती ही नहीं। जरा सोचो तो कितनी मुश्किल से हमें यह सुनहरा मौका मिला है। हम दोनों को इसका पूरा-पूरा फायदा उठाना चाहिए। इधर तुम्हारा यह हाल है कि तुम मुँह से कुछ नहीं··· ।'

अब शकीला ने बड़ी बारीक आवाज में कहा—'आप बातें ही ऐसी करते हैं।'

'कैसी? अच्छा मैं समझा तुम्हारा मतलब है कि मैं मियाँ-बीबी जैसे लफ्ज क्यों इस्तेमाल कर रहा हूँ? हाँ-हाँ, मैं जानता हूँ कि दूसरी हिन्दुस्तानी लड़कियों की तरह तुम भी हद से ज्यादा झेंपू हो। खैर कोई बात नहीं अब मैं ऐसी बातें नहीं करूँगा। अब तो मैंने यह वायदा कर लिया। अब तो कुछ बोलो।'

'आप कुछ पूछिये तो मैं जवाब दूँ।'

'अरे, मैं तुम्हारा कोई इम्तहान थोड़े ले रहा हूँ कि मेरे सवाल करने पर ही तुम जवाब दोगी।'

'क्या करूँ? मुझे तो कुछ बात सूझती नहीं। आप ही बात चलाइये ना?'

'अच्छा, तो बात भी मुझको ही चलानी पड़ेगी?'

शकीला मुस्कराकर हल्की-सी शरारत से बोली—'जी।'

'अच्छा भई, जो आपका हुक्म। अच्छा इतना तो बताओ कि तुम्हें यह बँगला कैसा लगा?'

'बहुत अच्छा।'

'अगर मैं भी तुम्हारे लिए ऐसा ही बँगला बनवा दूँ तो क्या तुम खुश होगी ?'

'जी।'

'बहुत खुश ?'

'जी।'

'और अगर मैं इतना शानदार बँगला न बनवा सकूँ, और तुम्हें मेरे साथ मामूली मकान में रहना पड़े तो क्या तुम रह सकोगी ?'

'जी।'

'लेकिन तुम्हें उतनी खुशी तो नहीं होगी।'

'खुशी तो आपकी वजह से होगी। बँगले या मकान से क्या फर्क पड़ता है।'

शकीला कहने को तो यह बात कह गयी लेकिन उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। उधर हमीद उसकी बात सुन कर मुस्करा पड़ा, बोला—'शकीला, तुम्हारे ख्याल कितने अच्छे हैं। वैसे तो मैं मामू साहब की बड़ी इज्जत करता हूँ, लेकिन हिन्दुस्तान के बारे में जो उनके विचार हैं वह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं हैं। तुम तो जानती ही होगी कि मेरे क्या ख्याल हैं ?'

'जी।'

'मैं हिन्दुस्तान को अपना वतन समझता हूँ, क्योंकि यह मेरी और तुम्हारी जन्मभूमि है। हम दोनों भारत का ही अनाज खाकर इतने बड़े हुए हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अपने देश से प्यार करना सीखो। हमारा देश बहुत बड़ा है। यहाँ कई धर्मों के लोग बसते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी वगैरह सभी धर्मों के लोग अलग-अलग धर्मों को मानते हुए भी हिन्दुस्तानी हैं। हम सब को इस

बात की आजादी हासिल है कि हम जिस धर्म को चाहें मानें। लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं है कि अगर हम मुसलमान हैं तो भारत के बजाय पाकिस्तान को अपना देश समझने लगें। बोलो, तुम्हें मेरे इन ख्यालों पर कोई एतराज है ?'

'जी नहीं।'

'मैं चाहता हूँ कि हमारे बच्चे भी पक्के हिन्दुस्तानी बनें, और वह भारत को ही अपना देश समझें। क्या तुम मेरी इस बात को भी मानती हो ?'

'मैं आपके इन ख्यालों को बहुत ऊँचा समझती हूँ और सच्चे दिल से इन्हें मानती भी हूँ।'

शकीला की यह बात सुनकर हमीद का दिल मारे खुशी के नाचने लगा, वह शकीला का हाथ थाम कर बोला—'मैं अपने आपको बहुत खुश किस्मत समझता हूँ कि मुझे तुम्हारी जैसी लड़की को अपनाने का मौका मिल रहा है।'

इतने में बाहर से जुबेदा की आवाज सुनाई दी—'अरे भई अब बाहर तशरीफ ले आइये, नाश्ता तैयार है।'

दस

इस तरह उन्होंने खण्डाला में बहुत ही मजे के दिन गुजारे। वहाँ से वह पूना चले गये। पूना में हमीद पहले तो अपना काम निपटाने की कोशिश करता और फुरसत का समय वे सब इकट्ठे ही गुजारते थे।

होटलों में जाते, सिनेमा देखते, या किसी क्लब में हँसी-खुशी वक्त गुजारते। इतने थोड़े से समय में हमीद ने शकीला को बाल रूम डांसिंग करना भी सिखा दिया।

जुबेदा उन्हें यह सब हरकतें करते हुए देखती तो मुस्करा कर कहती—'मामू जान को ख्वाब में भी इस बात का ख्याल नहीं होगा कि उनकी बेटी बाल रूम डान्सिग सीख रही है।'

हमीद हँस कर जवाब देता—'आपा, यह भी तो सोचो कि शकीला को सारी उम्र हमारे मामू साहब की बेटी बन कर तो रहना नहीं है। आखिर उसे मेरी बीबी बनना है इसलिए जैसा मैं चाहूँ वैसा तो उसे करना ही पड़ेगा।'

जुबेदा हाथ झटक कर जवाब देती—'अरे, पहले शकीला के मियाँ तो बन जाओ, अभी से इतना रोब क्यों गाँठ रहे हो ?'

इस प्रकार की बातें उन दोनों में हो जाती, लेकिन शकीला के सामने वह ऐसी बातें नहीं करते थे ।

× × ×

हमीद से विदा होकर घर लौटने के एक दिन पूर्व जुबेदा ने हमीद को अलग ले जाकर कहा—'देखो हमीद, मैं तुमसे एक बात कहने जा रही हूँ लेकिन तुम उसका बुरा न मानना ।'

हमीद कहकहा लगा कर बोला—'क्यों आपा क्या मेरे साथ छुट्टियाँ गुजार कर तुम्हें कुछ भी मजा नहीं आया ? या हो सकता है कि मेरे शकीला की ओर ज्यादा ध्यान देने से तुम्हें बुरा लगा हो ।'

''अरे नहीं, मैं ऐसे कच्चे दिमाग की लड़की नहीं हूँ । आखिर शकीला को लाने का सबसे बड़ा मतलब तो यही था कि तुम दोनों को एक साथ रहने का मौका मिले । मैं यह भी बता दूँ कि तुम्हारे साथ यह दिन इतने अच्छे गुजरे हैं कि मैं सारी उम्र नहीं भुला सकूँगी । लेकिन जो बात मैं तुमसे कहने जा रही हूँ वह यह है कि तुम भूल में न रहना । मामू जान तुम्हारे रास्ते का एक बहुत बड़ा काँटा है, जब तक तुम उनसे निपट न लो तब तक यह मत समझो कि तुम शकीला को अपनी बना सकोगे । मैं यह बातें कह कर तुम्हें उदास नहीं करना चाहती, लेकिन मैं तुम्हें समझना जरूर चाहती हूँ क्योंकि इस बात का डर है कि इधर तुम दोनों एक दूसरे के इतने निकट आ जाओ कि अलग होना न मुमकिन हो जाय, और उधर मामू जान की जिद्द इतनी बढ़ जाय कि न तो शकीला कुछ कह पाये और न तुम कुछ कर पाओ ।'

बहन को इस तरह गम्भीर देख कर हमीद भी गम्भीर हो गया । उसने भारी स्वर में पूछा—'मगर आपा यह भी तो बताओ कि इसका उपाय क्या हो सकता है ?'

'यों तो हम सब अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं लेकिन मामू साहब के दिमाग में जो बात घुसी हुई है उसे दूर करना आसान नहीं है।'

'तो भी कोई तरीका तो निकालना ही पड़ेगा।'

'सबसे अच्छा तरीका तो यही है कि तुम अगर अलीगढ़ आओ तो खुद मामू जान से मिल कर बात-चीत करो। बात तुम्हारी बिल्कुल सीधी होनी चाहिए। अगर वह अपने मुँह से अपने दिल की बात न बतायें तो तुम्हें हिम्मत से काम लेकर उनके विचार उन्हीं के सामने रख देने चाहिए।'

'यह तो बड़ी जबरदस्त टक्कर होगी। पुराने विचारों और नये विचारों की टक्कर।'

'हाँ हमीद, यह टक्कर तुम्हें लेनी ही पड़ेगी। और तुम इस टक्कर से बचने की कोशिश करोगे, या यह टक्कर लेने से घबराओगे तो फिर शकीला को नहीं पा सकोगे।'

हमीद पल भर को चुप हो गया, फिर धीरे से बोला—'लेकिन आपा अगर मामू जान ने अपना ख्याल बदलने से इन्कार कर दिया तो?'

'इसीलिए तो कहती हूँ कि एक बार तो इस बात का फैसला हो ही जाना चाहिए अगर उन्हें तुम अपनी बात न भी मनवा सके तो कम से कम तुम धोखे में तो नहीं मारे जाओगे। वैसे तो तुम्हें खुदा पर भरोसा रखना चाहिए, और अपने आप पर भरोसा रखना चाहिए।

हमीद धीमें स्वर में बोला—'तुम तो जानती ही हो आपा कि मैं पहले से ही इस बात का इरादा किये हूँ।'

'हाँ मैं जानती हूँ, लेकिन अब तुम झिझक से काम मत लो, बल्कि जल्द से जल्द मामू साहब से मिल कर यह काम कर ही डालो।'

हमीद यों तो पहले भी इस बात को महसूस करता था, लेकिन बहन की बातों से उसने महसूस किया कि इस कार्य में अब और ज्यादा ढील नहीं होनी चाहिए। चुनाँचे उसने कहा—'अच्छा आपा, अब मैं इस काम में बिल्कुल ढील नहीं करूँगा, और ज्यों ही मुझे मौका मिला त्यों ही मैं मामू जान से यह बात चलाऊँगा।'

इतनी बात-चीत हो चुकी तो फिर जुबेदा ने भी मन में सोचा कि जैसे भी हो यह शादी हो ही जानी चाहिए। अब तो उसे ज़्यादा फ़िकर शकीला की थी। जुबेदा महसूस कर रही थी कि हमीद के साथ शादी न होने से शकीला बहुत निराश हो जायगी, बल्कि कहना चाहिये कि उस बेचारी का तो जीवन ही बर्बाद हो जायगा।

× × ×

छुट्टियाँ बीत चुकी थीं और अब जुदाई का मौका आ पहुँचा था। शकीला के लिए ये दिन ऐसे सुहावने थे जिनकी उसने कभी कल्पना नहीं की थी। अब तो वह हमीद को अपने मन की गहराइयों से प्यार करने लगी थी। विदा होते समय कोशिश करने पर भी वह अपने आँसू रोक नहीं सकी। यहाँ तक कि हमीद का दिल भी भर आया। वह ऊपर से हँसता रहा लेकिन यह तो वही जानता था कि उसके मन पर क्या बीत रही थी। फिर उसने सोचा कि उसे देख कर तो बेचारी शकीला और ज्यादा दुःखी होगी, इसलिए उसका कर्त्तव्य भी यह है कि वह शकीला को तसल्ली देने की कोशिश करे।

चुनाँचे उसने धीमे से कहा—'शकीला, यह कुछ दिन तुम्हारे साथ गुजार कर मुझे जितनी खुशी हुई है उसका तुम अन्दाजा नहीं लगा सकती

हो। जी तो चाहता है कि सारी उम्र तुमसे अलग न होऊँ, लेकि
जिन्दगी की मजबूरियों के सामने इन्सान का कुछ बस नहीं चलता।'

शकीला भर्राये हुए स्वर में बोली—'मैं तो समझती थी कि सि
लड़कियाँ ही मजबूर होती हैं। मुझे यह मालूम नहीं था कि आप लो
भी मजबूर हो जाते हैं।'

हमीद मुस्कराया और दृढ़ स्वर में बोला—'हाँ शकीला, मैं य
कभी नहीं भूल सकता कि मैं अपने देश का सिपाही हूँ और अपना कर्त
पूरा करना मेरे लिए बहुत जरूरी है। सिपाही होने के नाते मैं य
भी कहता हूँ कि मैं जिन्दगी भर तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा। मैंने
अपना हाथ तुम्हारी तरफ बढ़ाया है वह कभी पीछे नहीं हटेगा। मा
साहब के कुछ ख्याल ऐसे है कि जो हमारे रास्ते की बहुत बड़ी अड़च
बन सकते हैं, लेकिन एक सिपाही किसी भी अड़चन के सामने हथिया
डालने को तैयार नहीं हो सकता। अब मेरी पूरी कोशिश होगी
मौका पाते ही मैं मामू साहब से अपने और तुम्हारे बारे में बात-ची
कर लूँ। मेरी बात-चीत ऐसी होगी कि मामू साहब को दो टूक फैसल
करना पड़ेगा।'

यह सुन कर शकीला घबरा सी गई। उसके मन की दशा को भाँप
हुए हमीद ने पूछा—'अरे! तुम कहाँ खो गई?'

शकीला ने लड़खड़ाती जुबान में कहा—'मुझे डर लग रहा है।'

'डर किस बात का?'

'सोचती हूँ कि कहीं अब्बा जान ने आपकी बात न मानी तो क्य
होगा?'

'तब की तब देखा जायेगा?'

'जब बात-चीत होगी तो इसके दो ही नतीजे निकल सकते हैं या तो अब्बा आपकी बात मान जायेंगे, या नहीं मानेंगे। मुझे तो डर इसी बात का लग रहा है कि खुदा न करे अगर वह अपनी ज़िद पर अड़े रहे तो ?'

'तुम्हारा यह सोचने का ढंग बिल्कुल गलत है। मैं कहता हूँ कि जब हमारी मुहब्बत सच्ची है तो यह कैसे हो सकता है कि हम अपनी मंजिल पर न पहुँचे ?'

शकीला ने डबडबाई आँखों से एक डपटती हुई नजर हमीद पर डाली और बोली—'यह कोई जरूरी तो नहीं कि जिनका प्यार सच्चा हो, उनका मिलाप हो जाय क्या हमेशा ऐसे ही होता आया है ?'

हमीद शकीला का इशारा समझते हुए बोला—'ओफ ! मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। तुम यही कहना चाहती हो कि लैला मजनूं, शीरी-फरहाद आदि जैसे सच्चे प्रेमी भी तो आपस में नहीं मिल पाये। तो फिर शकीला, अब वह जमाने लद गये। अगर तुम मेरा साथ देने का वायदा करो तो चाहे मुझे जमीन-आसमान एक क्यों न करना पड़े, मैं हर मुसीबत का सामना करके तुम्हें अपनाऊँगा।'

'मैं वायदा करती हूँ।'

'तो बस ठीक है, खुदा ने चाहा तो हम कामयाब रहेंगे।'

दूसरे ही दिन शकीला और जुबेदा गाड़ी में अलीगढ़ आने के लिए सवार हो गईं। हमीद उन दोनों को स्टेशन छोड़ने आया था।

●

ग्यारह

जल्दी ही हमीद को अलीगढ़ आने का मौका मिल गया। उस
जुबेदा को पत्र लिखा—

'डियर आपा,

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि मैं अलीगढ़ आ रहा हूँ। तु
हैरान तो होगी कि मुझे इतनी जल्दी वहाँ आने का मौका कैसे मि
गया, लेकिन इससे हैरान होने की कोई बात नहीं। असल में मे
तबादला आसाम की तरफ हो गया है। एक छोटी सी जगह पर मे
ड्यूटी लगी है। तुम तो जानती ही हो कि जिस जगह हमारी पोस्टि
हो, उसका नाम बताने की हमें इजाजत नहीं होती और न हम कि
को बताते ही हैं।

खैर छोड़ो इस बात को। खुशी की बात तो यह है कि मुझे अल
गढ़ आने का मौका मिल रहा है जब हमारा तबादला होता है तो ह
आठ-दस दिनों की छुट्टी भी मिलती है। बस यही छुट्टियाँ मैं अलीगढ़
काटूँगा। मेरा सबसे बड़ा काम तो यही है कि मामू जान से शकी
के बारे में बात-चीत करूँ। आखिर जो काम एक रोज करना है,
अभी क्यों न कर दिया जाय।

मेरा इरादा यह है कि तीन-चार दिनों तक तो यों ही मामू जान के पास जाता रहूँ इधर-उधर की बातें करके उनका मन का टटोलता रहूँ, और फिर एक रोज उनसे सारी बात-चीत खुलकर कर लूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम मेरी तजवीज पसन्द करोगी।

अगर तुम चाहो तो मेरी इस चिट्ठी का जवाब दे सकती हो, क्योंकि मैं अलीगढ़ दस दिन बाद पहुँचूँगा।'

अच्छा अब रुखसत होता हूँ। शकीला से मेरा सलाम कहना और अब्बा हजूर वा अम्मी हजूर की खिदमत में आदाबअर्ज करता हूँ।

तुम्हारा भाई,
हमीद।'

यह चिट्ठी पाकर जुबेदा मारे खुशी के आपे से बाहर हो गई। वह सीधी शकीला के पास पहुँची और उसे अलग ले जाकर बोली—'शकीला, तुम्हें एक खुश-खबरी सुनाने जा रही हूँ, जानती हो वह क्या खुश-खबरी है?'

'उनकी चिट्ठी आई होगी।'

'चिट्ठी तो आई है लेकिन खुशखबरी कुछ और ही है।'

'तो बताइये ना वह खुशखबरी क्या है?'

'हमीद बहुत जल्द यहाँ आ रहा है।'

शकीला को बड़ा आश्चर्य हुआ, बोली—'वह कैसे? फौज में इतनी जल्दी तो छुट्टी नहीं मिलती।'

'वह तो ठीक है, लेकिन हमीद का तबादला हो रहा है। इसीलिए उसे सात-आठ दिन की छुट्टी मिलेगी।'

शकीला ने कुछ झिझकते हुए कहा—'तो क्या वह यहाँ भी आयेंगे?'

'अरी, यहाँ नहीं आयेंगे तो जायेंगे कहाँ ?'

यह सुन कर शकीला को अपने आप पर गर्व सा महसूस हुआ क्योंकि जुबेदा की बात का अर्थ तो यही था कि हमीद उसी के कार यहाँ आने पर मजबूर था। जुबेदा फिर बोली—'जानती हो वह य क्यों आ रहा है ?'

शकीला जानती तो थी परन्तु वह मुँह से कुछ नहीं बोली। जुबे ने फिर कहा—'अरी वह तेरे साथ अपने रिश्ते की बात पक्की कर आ रहा है।'

शकीला ने झेंप कर सिर झुका लिया।

वे दोनों फूली नहीं समा रही थीं और हमीद के आने का ब उत्सुकता से इन्तजार करने लगीं।

आखिर हमीद का तार मिला जिसमें उसके आने का दिन औ गाड़ी के पहुँचने का समय लिखा था।

जुबेदा ने तार शकीला को दिखाते हुए कहा—'तुम्हारा जी चाहता होगा कि तुम भी स्टेशन पर उससे मिलने जाओ, लेकि अफसोस! तुम जा नहीं पाओगी। अच्छा बेफिक्र रहो, मैं जल्दी से जल तुम दोनों को मिलाने की कोशिश करूँगी।'

शकीला एक-एक पल गिनती रही। आखिर वह दिन भी पहुँचा और गाड़ी का समय भी। शकीला मन ही मन में सोच रही कि अब हमीद साहब की गाड़ी स्टेशन पर पहुँची होगी, अब वह गा से उतरे होंगे और अब वह अपने घर पहुँच गये होंगे। जब उसी श जुबेदा हमीद को लेकर उनके घर आ पहुँची तो उसका हृदय जोर-जं से धड़कने लगा। उस समय इसके अब्बा घर पर नहीं थे, इसलिए उस सोचा कि उन दोनों की खुलकर मुलाकात हो सकेगी, क्योंकि घर

अब्बा होते तो वह ज्यादा से ज्यादा यही कर सकती थी कि पल भर को सामने जाकर सलाम कर लेती।

अम्मी ने हमीद को देखा तो खुश होकर ऊँचे स्वर में बोली—'अरे ! कब आये हमीद ?'

हमीद—'सलाम अर्ज करता हूँ, मुमानी जान !'

'जीते रहो बेटा। अचानक चले आये, अरे कभी हमें भी एक-आध खत डाल दिया करो ना।'

'क्या कहूँ मुमानी जान, काम इतना ज्यादा होता है कि सिर खुजाने की फुरसत ही नहीं मिलती। अब मेरा तबादला हो गया है, इसीलिए सोचा कि अब मौका मिला है तो क्यों न घर का चक्कर लगा आऊँ।'

'बहुत अच्छा किया बेटा, आओ बैठो। अरी ओ शकीला। इधर आओ, देखो तो हमारे घर कौन आया है ?'

शकीला माँ की आवाज सुनते ही उछल पड़ी। माँ समझती थी कि उसकी भोली लड़की को बड़ा आश्चर्य होगा जब वह अचानक ही हमीद को वहाँ देखेगी, लेकिन बेटी को पहले से ही मालूम था कि शीघ्र ही कौन आने वाला था। चुनांचे अपने मुँह-हाथ धोकर बाल-वाल सँवार लिये थे और कपड़े भी जरा ढंग से पहन लिये थे। वह धीरे-धीरे लजाती हुई माँ के पास पहुँची। हमीद को देखकर उसने सिर को जरा सा झुका कर एक हाथ से सलाम किया। अपने प्रेमी को देख कर उसे आश्चर्य तो बिल्कुल नहीं हुआ, लेकिन खुशी बहुत ज्यादा हुई।

थोड़ी देर तक वे सब इकट्ठे बैठे इधर-उधर की बात-चीत करते रहे; फिर शकीला की अम्मी ने बेटी की ओर देखकर कहा—'सिर्फ बातें करके ही हमीद की खातिर तो नहीं हो सकती, जाओ कुछ नाश्ते

ग्रौर चाय का प्रबन्ध करो । तुम्हारे अब्बा भी तो आने ही वाले होंगे।'

शकीला उठकर चली तो उसकी सहायता करने के बहाने से ज़ुबेदा भी उसके पीछे-पीछे चली गई। जब हमीद और उसकी मुमानी जान दोनों ही वहाँ रह गये तो मुमानी जान ने कहा—'बेटा अब तो तुम शादी कर डालो।

'मुमानी जी, आप तो यह बात यों कह रही हैं जैसे मुझे शादी से इन्कार हो।'

'अरे भई, जब तुम्हें शादी से इन्कार नहीं है तो देरी किस बात की है ?'

'देरी सिर्फ लड़की की है, क्योंकि लड़की के बिना तो शादी हो नहीं सकती।'

'ऐ हैं ! भला तुझे लड़कियों की क्या कमी ?'

'लड़कियों की तो कोई कमी नहीं है लेकिन ऐसी लड़कियों की सच-मुच बहुत कमी है जिनसे शादी करने को मेरा मन चाहे।'

'बेटा, यह तो कोई अड़चन की बात नहीं। भला ऐसी कौन सी लड़की होगी जिससे तू शादी करना चाहे और वह शादी करने से इन्कार कर दे।'

इतना कहते-कहते शकीला की माँ हमीद को अपने दमाद के रूप में देखने लगी। हालांकि वह जानती थी कि यह सब बेकार है क्योंकि शकीला के अब्बा के विचार तो कुछ और ही थे।

हमीद ने मुमानी की बात का उत्तर देते हुए कहा—'आपका यह कहना शायद ठीक ही हो कि जिस लड़की को मैं पसन्द करूँ वह मुझसे शादी करने से इन्कार नहीं करेगी। लेकिन लड़की के मान जाने से तो

शादी नहीं हो सकती शादी के लिए उसके माँ-बाप की मन्जूरी भी तो जरूरी है।

इस बात का मुमानी कोई उत्तर दे भी न पाई थी कि इतने में शकीला के पिता के आने की आवाज सुनाई दी। जब वह कमरे में घुसे तो हमीद ने फौरन खड़े होकर जरा सा सिर झुकाया और दाहिना हाथ अपने माथे तक ले जाते हुए बोला—'आदाब-अर्ज करता हूँ मामू जान।'

'आह हा। जीते रहो, बेटा! कहो कब आये?

'आज ही अलीगढ़ पहुँचा हूँ।'

'अच्छा-बैठो-बैठो यों लगता है जैसे अबकि तुम्हें बहुत जल्दी छुट्टियाँ मिल गई।'

यह कहते-कहते वह पास पड़ी आराम-कुर्सी पर बैठ गये।

हमीद बोला—'जी छुट्टियाँ तो नहीं मिलीं असल में मेरा तबादला असम की तरफ हो गया है। जब तबादला होता है तो कुछ दिनों की छुट्टियाँ मिल ही जाती हैं। इसीलिए मैंने सोचा कि यह जो कुछ दिनों का मौका मिला है वह क्यों न आप बुजुर्गों के पास गुजार दूँ।'

'बहुत अच्छा किया बेटा। बहुत अच्छा। हमें तो बहुत खुशी है।'

इतना कहते-कहते मामूजान ने अपने भांजे को बड़े गौर से देखा, क्योंकि फौजी वर्दी में वह बड़ा ही सजीला जवान दिखाई दे रहा था। इसमें सन्देह नहीं कि हमीद बीस-पचीस जवानों में खड़ा हुआ सबसे अलग ही दिखाई देता था। मामू जान मुस्कुरा कर अपनी बेगम की ओर देखते हुए बोले—'हाँ बेगम, बताओ तो सही कि तुम दोनों में घुल-मिल कर क्या बातें हो रही थीं?'

बेगम के सामने पानदान रखा था और वह कटाकट छालियाँ काटती जा रही थीं। अपने मियाँ की बात सुन कर उनका हाथ पल भर को रुका और उन्होंने दुपट्टे का आँचल सम्हालते हुए कहा—'अजी घुल-मिलकर बातें क्या होतीं मैं यही कह रही थी कि अब तुम जल्दी से शादी कर डालो।'

मियाँ ने जोर का कहकहा लगाया और बोले—'बात तो ठीक कहती हो। लेकिन मैं कहता हूँ कि कोरी बातों पर ही न टरका देना भांजे को। अरे भई कुछ नाश्ता-पानी और चाय वगैरह तो होनी चाहिए।'

बेगम—'जी हाँ, शकीला और जुबेदा चाय तैयार कर रही हैं। बल्कि आपके लिए नाश्ता भी तैयार हो रहा है।'

मियाँ—'अरे, यह बात है तो मैं जाकर जल्दी से नहा लूँ।'

बेगम—'नहाना है तो जल्दी कीजिये, ऐसा न हो कि नाश्ते में आप पीछे रह जायें।'

मियाँ चुटकी बजाते हुए बोले—'अजी फिक्र न करो, मैं नाश्ते के मामले में किसी से भी पीछे रहने वाला नहीं हूँ।'

यह कह कर वह कन्धे पर तौलिया डाले गुसलखाने की ओर चले गये। तब मुमानी जान ने हमीद से फिर कहा—'हाँ तो बेटा हम क्या बातें कर रहे थे?'

'बातें तो मेरी शादी के बारे में हो रही थीं, यही मेरे पसन्द की लड़की के बारे में।'

'अरे यह तो बता कि तुझे कोई लड़की पसन्द भी आई या नहीं?'

'बता दूँ? लेकिन आपको वायदा करना होगा कि आप उसमें मेरी मदद करेंगी।'

'क्यों नहीं, क्यों नहीं, आखिर अपने बेटे की शादी से मुझे दिलचस्पी नहीं होगी तो और किसकी शादी से होगी ?'

हमीद एक साफ-दिल का आदमी था इसलिए उसने अपने मन की बात बिना किसी संकोच के कह देना चाहा। उसने यह भी देखा कि इस समय मुमानी का मूड भी बहुत अच्छा था। चुनांचे वह खिसक कर उनके निकट चला गया और गम्भीर स्वर में बोला—'मुमानी जान ! आप बुरा न माने तो मैं कहूँ ?'

'वाह बेटा बुरा मानने की क्या बात है ? तुम बेशक अपने दिल की बात खोल कर मुझसे कह सकते हो।'

पल भर रुककर हमीद बोला—'सच्ची बात तो यह है कि मुझे आपकी शकीला ही पसन्द है।'

यह बात सुनकर अचानक ही मुमानी का हाथ रुक गया। उनके मन की गहराई में भी तो यही बात छिपी हुई थी कि काश वह हमीद को अपना दामाद बना सकतीं। उनको इतना विश्वास था कि उनकी शकीला हमीद को पसन्द आ जायगी लेकिन उनके मन में यह ख्याल कभी नहीं आया था कि हमीद पहले से ही इस बात का फैसला कर चुका है।

उन्हें खामोश देखकर हमीद फिर बोला—'मुमानी जान ! आप तो चुप रह गई। क्या मैं आपको पसन्द नहीं हूँ ?

मुमानी जान ने एकाएक ही उसका चेहरा अपने दोनों हाथों में लेते हुए उसका माथा चूम लिया और बोलीं—'पसन्द क्यों नहीं ? एक बार नहीं हजार बार पसन्द हो। लेकिन बेटा, अब तुम्हें क्या बताऊँ तुम्हारे मामूजान के ख्यालात बड़े ही उल्टे-सीधे हैं। अब मैं तुम्हें क्या बताऊँ ?'

'नहीं-नहीं, मुमानीजान मुझे बताने की कुछ जरूरत नहीं है। मैं उनके ख्यालों को बड़ी अच्छी तरह जानता हूँ।'

मुमानी जान दुःख भरे स्वर में बोलीं—'बस बेटा, मुसीबत तो यही है। वैसे हमीद, इतना तो मैं कह सकती हूँ कि तुम्हें मामूजान बहुत पसन्द करते हैं। वही एक धुन जो उनके दिमाग में सवार है उसका भला क्या इलाज है?'

'मुमानी जान जब आपको यह रिश्ता मंजूर है तो समझ लीजिये कि मेरे दिल से बहुत बड़ा बोझ उतर गया। अगर आप इजाजत दें तो मैं खुद ही मामूजान से बात करूँ।'

'बेटा मैं तो बड़ी खुशी से इजाजत देती हूँ लेकिन वह बड़े जिद्दी और अपने हठ के पक्के हैं।'

'लेकिन मुमानी जान यह भी तो हो सकता है कि मेरी बात-चीत से उनके ख्यालात पलट जायें।'

'अगर ऐसा हो सके तो मैं अपने आपको बहुत खुशकिस्मत समझूँगी। लेकिन उनसे बात-चीत तुम जल्दी से कर डालो।'

'कहिये तो अभी उनसे जिक्र छेड़ दूँ?'

'नहीं अभी नहीं। कल वह सारा दिन घर पर ही रहेंगे। तुम सुबह के वक्त आ जाना। आज रात में मैं उनसे कुछ बात-चीत भी करूँगी।'

'लेकिन मुमानी जान, अगर उन्होंने आप से इन्कार कर दिया तो मेरे लिए और भी बड़ी मुश्किल खड़ी होगी।'

'नहीं बेटा, मैंने धूप में बाल सफेद नहीं किये हैं। अरे मैं तेरे रिश्ते की बात उनसे नहीं छेड़ूँगी। मैं तो वैसे ही तुम्हारी खूब तारीफ करूँगी, तुम्हारे गुण बताऊँगी, हमारे खानदानों में जो प्यार चला आ रहा है

उसका जिक्र करूँगी । इन सब बातों का नतीजा यह होगा कि उनका दिल तुम्हारे लिए काफी नर्म हो जायेगा । फिर जब तुम सुबह यहाँ आकर बात-चीत करोगे तो उनके मन पर और गहरा असर होगा ।'

हमीद ने मन में सोचा कि उसकी मुमामी जान काफी होशियार हैं । उन दोनों की यहीं पर बात-चीत खत्म हो गई, क्योंकि जुबेदा और शकीला चाय लेकर आ पहुँची थीं । इतने में मामूजान भी नहा-धोकर आ गये और फिर सबने मिल-जुलकर नाश्ता किया ।

उस रात बिस्तर पर लेटे-लेटे हमीद इसी विषय पर सोचता रहा । बिल्कुल ऐसे ही जैसे दूसरे दिन उसकी बड़ी भारी परीक्षा होने वाली हो । एक तरह से यह बात ठीक भी थी क्योंकि परीक्षा की तो यह बात थी ही । वह अच्छी तरह जानता था कि मामूजान के विचारों को बदलना आसान बात नहीं थी । लेकिन इसके साथ ही वह यह भी जानता था कि यदि वह इस काम में असफल रहा तो उसे अपने जीवन की सबसे बड़ी हार स्वीकार करनी पड़ेगी । इसी तरह सोचते-सोचते न जाने किस समय उसे नींद आ गई ।

× × ×

रात में कम सोने पर भी उसकी दूसरे रोज आँख जल्दी ही खुल गई । नहा-धोकर और नाश्ते से फुरसत पाकर वह मामू जान के घर जा पहुँचा ।

शकीला के कानों में भी यह बात पड़ चुकी थी कि आज हमीद उसी के बारे में बात करने आ रहा है । वह अपनी जगह बेचैन हो रही थी । जब दरवाजे पर हमीद की आवाज सुनाई दी तब शकीला का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा । यह ठीक है कि उसके अब्बा जान बड़े अच्छे मूड में थे ।

जब हमीद कमरे में पहुँचा तो घर के सभी लोग वहीं बैठे थे। मामू जान हमीद को देख कर बहुत खुश हुये, उसका स्वागत करते हुए बोले—'बेटा तुम जरा देर से पहुँचे, हमने अभी-अभी नाश्ता किया है।'

'कोई हर्ज नहीं मामू जान, मैं नाश्ता करके ही चला आ रहा हूँ।'

अब मुमामी जान बीच में बोल उठीं—'बेटा, तुम्हें नाश्ता तो यहीं करना चाहिए था। हम तो तुमसे कहना भूल गये, लेकिन अगर तुम्हारा हमारे यहाँ आने का प्रोग्राम था तो फिर तुम्हें नाश्ता भी इसी जगह करना चाहिए था।'

मामू जान बोले—'हाँ, बेटा, जब भी तुम्हारा सुबह यहाँ आने का प्रोग्राम हो तो जरा और जल्दी आ जाया करो ताकि नाश्ता तो इकट्ठे कर सकें।'

शकीला तो एक बार फिर हमीद को सलाम करके वहाँ से भाग गई और रसोई-घर में जाकर बैठ गई। बाकी लोग इधर-उधर की बातें करते रहे। मुमानी इस बात को जानती थी कि हमीद वहाँ किस लिए आया था, इसीलिए थोड़ी ही देर के बाद वह भी काम के बहाने से उठ कर वहाँ से चल दीं, और अपने साथ दूसरे बच्चों को भी लेती गईं।

अब हमीद और उसके मामू जान ही उसके कमरे में रह गये। दो चार इधर-उधर की बातें हुईं, फिर हमीद बोला—'माफ कीजिये मामू जान, मैं बिना आपको इत्तला किये यहाँ चला आया।'

'अरे बेटा, यह क्या कहते हो? भला अपने घर में आने के लिए भी खबर करने की जरूरत होती है?'

'जी नहीं; मेरा यह मतलब नहीं हैं; मैं सोच रहा था कि कहीं आपको कोई और काम न हो।'

'नहीं-नहीं, तुम बेफिक्र रहो, मुझे और कोई काम नहीं है। मेरा आज का दिन बिल्कुल फुरसत का दिन है वैसे तुम किसी खास काम से तो नहीं आये ?'

'जी बात तो कुछ ऐसे ही है।'

मामू जान के दिमाग में यह बात तो आई ही नहीं थी कि हमीद सीधे उन्हीं से शादी की बात करेगा। उन्होंने उसकी हिम्मत बढ़ाते हुए कहा—'हाँ-हाँ बेटा, कोई मेरे लायक काम हो तो बताओ।'

'जी हाँ, काम तो आप ही से है।'

'बस तो बोलो।'

'मामू जान आप मुझे बेटे की तरह मानते हैं, वैसे भी आप पढ़े-लिखे और समझदार हैं, इसलिए मुझे उम्मीद है कि मैं जो कुछ आपसे कहूँगा आप उसका बुरा नहीं मानेंगे।'

'बुरा मानने का तो सवाल ही नहीं उठता; तुम खामख्वाह तकुल्लुफ से काम ले रहे हो।'

हमीद ने जरा रुक कर कहा—'जी, मैं शकीला के बारे में आपसे बात करने आया हूँ।'

मामू जान अब भी बात की तह में नहीं पहुँचे, वैसे उन्हें जरा सा आश्चर्य हुआ, फिर बोले—'शकीला के बारे में ? कहो, शकीला के बारे में क्या कहना चाहते हो ?'

'जी······मैं······उससे······शादी······।'

अब मामू जान चौंके। उन्हें यह बात बुरी नहीं लगी, क्योंकि वह हमीद को पसन्द भी करते थे और जानते थे कि उसमें कोई बुरी आदत

नहीं है। शक्ल-सूरत में भी वह किसी से कम नहीं था, लेकिन फिर भी शकीला और उसकी शादी के बारे में कभी सोचा भी नहीं था। वह अपने विचारों पर बड़ी दृढ़ता से टिके हुए थे। इसीलिए कुछ बोल नहीं पाये। तब हमीद ने फिर बात शुरू की—'मामू जान ! मैं इस सिलसिले में आपके ख्यालों को जानता हूँ। मुझे मालूम है कि आप शकीला की शादी हिन्दुस्तान में नहीं करना चाहते। बल्कि आप पाकिस्तान में कोई लड़का ढूँढ़ रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि मैंने जो यह बात सुनी है वह गलत नहीं।'

हमीद के मुँह से यह बात सुन कर मामू जान का बोझ हल्का हो गया, क्योंकि अगर हमीद यह बातें न कहता तो स्वयं उन्हीं को कहनी पड़ती। वह धीरे से भारी आवाज में बोले—'हाँ बेटा, तुमने जो कुछ सुना है वह ठीक है।'

'यही तो मैं जानना चाहता था कि क्या अब भी आपका वही ख्याल है या आपने अपना ख्याल बदल लिया है।'

'बदलने का इरादा तो नहीं है। देखो बेटा, मुझे हिन्दुस्तान में मुसलमानों का आगम अच्छा नहीं दिखाई देता। जरा सोचो कि शकीला की शादी हिन्दुस्तान में हो जाय तो बाद में उसके बच्चों का क्या होगा ? मुसलमानों को हिन्दुस्तान में कौन पूछता है? '

'मामू जान अगर हिन्दुस्तान में मुसलमानों को कोई पूछने वाला नहीं है तो फिर मरहूम मौलाना अबुल कलाम आजाद, मरहूम रफी अहमद किदवई, श्री हुमायूँ कबीर, श्री चागला, श्री हाफिज मुहमम्द इब्राहीम, डा० जाकिर हुसेन और सैकड़ों मुसलमान इतने ऊँचे-ऊँचे दरजों तक कैसे पहुँचे ?'

'यह तो ठीक है, लेकिन सभी जानते हैं कि यह महज दिखावे की बातें हैं। वैसे आम मुसलमानों के लिए यहाँ क्या रखा है?'

'मुझी को देखिये कि मैं मुसलमान होते हुए भी हिन्दुस्तानी फौज में अफसर बना दिया गया हूँ। करोड़ों मुसलमान इस मुल्क में बसे हैं, कारोबार करते हैं, खाते-पीते हैं उनको वह सब हक मिले हुए हैं जो इस मुल्क में दूसरे लोगों को हासिल हैं।'

'फिर भी हमीद, आम तौर पर मुसलमान इस तरह महसूस नहीं करते कि जैसे वह अपने ही मुल्क में रह रहे हों।'

'यह तो अपने-अपने सोचने का ढंग है। अगर मुसलमान सब कुछ होते हुए भी अपने आपको गैर समझें तो इसमें किसी का क्या कसूर?'

'लेकिन हमारा मजहब और है, हमारी तहजीब और है, हमारे सोचने और रहने-सहने का ढंग और है इसलिए हिन्दुस्तान को हम अपना मुल्क तसलीम (स्वीकार) नहीं कर सकते।'

'मामू जान गुस्ताखी माफ कीजियेगा, अगर मैं यह पूछूँ कि आप सैकड़ों वर्षों से इस देश में कैसे रह रहे हैं? जब अंग्रेज दो सौ साल तक यहाँ हुकूमत करते रहे तो फिर भी आप हिन्दुस्तान को अपना मुल्क मान कर रहते रहे।'

'लेकिन बंटवारे के बाद से तो हम इस मुल्क को अपना मुल्क महसूस नहीं कर रहे हैं।'

'इसका कारण यह है कि हमारे दिल में चोर है। हमने मजहब, तहजीब, जुबान और रहन-सहन का नाम लेकर ही इस मुल्क का बँटवारा करवाया। उस वक्त हमारा दावा यह था कि बँटवारे से हमारी सब मुसीबतें दूर हो जायेंगी, लेकिन बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि जिन मुसलमानों ने बँटवारा कराया था उन्हीं के सिर पर मुसीबतें भी आई हैं।'

'लेकिन हमीद यह बात तो तुम भी मानोगे कि मुसलमानों की तरफ से हिन्दुओं का मन साफ नहीं है।'

'मामू जान, मैं यह मान लेता हूँ लेकिन हिन्दुओं में भी ऊँचे ख्यालों वाले लोग हैं और छोटे ख्यालों के भी लोग हैं। बेशक उनमें कुछ लोग हैं जो मुसलमानों को पसन्द नहीं करते लेकिन मामू जान यह भी तो बताइये कि मुसलमानों ने ऐसा कौन सा काम किया है कि जिसकी वजह से हिन्दू उन्हें अपने सिर-आँखों पर बिठाये ? पहले तो मुसलमानों ने लड़-भिड़ कर मुल्क का बँटवारा कराया, फिर भी करोड़ों मुसलमान इस बात पर मजबूर हो गये कि हिन्दुस्तान में रह कर अपनी रोटी कमायें। इन्साफ की बात तो यह है कि जब हमने यह कह कर मुल्क का बँटवारा करा दिया कि हमारी कोई बात हिन्दुओं से मेल नहीं खाती तो फिर अब हमें क्या हक है कि हम हिन्दुस्तान में ही डटे हुए हैं। हमको चाहिए था कि पाकिस्तान बनते ही हम सब अपने नये मुल्क में चले जाते। हमें पाकिस्तान जाने से किसी ने रोका तो नहीं था। बुरे हिन्दुओं की बात छोड़िये। लेकिन अच्छे हिन्दुओं ने ही तो मुसलमानों को हिन्दुस्तान में सब के बराबर का दरजा दिया है।

अब मुसलमान क्या चाहते हैं, इस बात को मुसलमान होते हुए भी मैं समझ नहीं पाया। जो कुछ होना था सो हुआ, लेकिन अब मुसलमानों को चाहिए था कि अगर पाकिस्तान में उनके रहने का कोई इन्तजाम नहीं हो सका तो वह सच्चे दिल से हिन्दुस्तान को ही अपना मुल्क समझ कर यहाँ रहते। लेकिन मुसलमान भी न जाने किस जिद पर अड़े हुए हैं। उनकी इन्हीं हरकतों का नतीजा है कि बुरे तो क्या अच्छे हिन्दुओं को भी मुसलमानों से शिकायत होने लगी है।'

हमीद का इतना लम्बा-चौड़ा भाषण सुन कर मामू जान बोले—

'सभी मुसलमान तो इस किस्म की बातें नहीं सोचते हैं । ज्यादातर तो मुसलमान ऐसे ही हैं जो अच्छी तरह जानते हैं कि उनका जीना-मरना इसी मुल्क में होगा ।'

'मगर मामू जान जब हम जैसे लोग ऐसी बातें सोचते हैं तो हिन्दुओं को सभी मुसलमानों पर शक होने लगता है । उनका यह समझना गलत नहीं है कि हर मुसलमान यहाँ पर मजबूरी के कारण रह रहा है, लेकिन दिल में वह हिन्दुस्तान को अपना मुल्क नहीं मानता, बल्कि पाकिस्तान को अपना मुल्क मानता है इसीलिए जब किसी मुसलमान को मौका मिलेगा तो वह जरूर ही हिन्दुस्तान को धोखा देगा ।'

अब मामू जान को कोई जवाब नहीं सूझ रहा था । वह उजड्ड आदमी नहीं थे बल्कि पढ़े-लिखे और समझदार इन्सान थे । इसलिए जब उनके सामने इतने कायदे से यह समस्या रखी गई तो वह कुछ सोचने पर मजबूर हो गये । हमीद ने समझ लिया अभी मौका है कि वह अपनी बात को मनवा ले । क्योंकि इस समय मामू जान डाँवाडोल हो रहे थे । लेकिन फिर भी वह इस बात का इन्तजार करता रहा कि मामू जान कुछ कहें क्योंकि उनकी बात सुनकर वह अन्दाजा लगा सकता था कि उसे क्या कहना चाहिए था । मामू जान धीरे से बोले—'हमीद बेटे, मैंने इस मसले पर किसी से इतनी लम्बी-चौड़ी बातचीत नहीं की । मेरे दिल में एक बात बैठी हुई है कि कहीं ऐसा न हो कि हिन्दुस्तान में ही शादी कर देने से मेरी बेटी की जिन्दगी खराब न हो जाय और उसके बच्चे परेशान हों । अपने बच्चों का बुरा भला तो सभी माँ-बाप सोचते हैं ।'

'जी हाँ, वही तो मैं बताना चाहता हूँ कि सिर्फ यह एक डर की वजह से आपके दिल में ऐसी बात बैठ गई है । मैं यह भी मानता हूँ कि

हिन्दुस्तान में मुसलमानों का मामला काफी टेढ़ा है, और उनके कई ड
बिल्कुल बे-बुनियाद भी नहीं हैं। लेकिन मामू जान जो बात मैं आपके
आगे रखना चाहता हूँ वह यह है कि मुसलमानों की इस हालत क
जिम्मेदारी सिर्फ हिन्दुओं पर नहीं डाली जा सकती। फिर मुझे
अपनी बात दोहरानी पड़ती है कि मुसलमानों ने ही इस बात की जि
की कि हम हिन्दुओं के साथ नहीं रह सकते। आखिर पाकिस्तान बना
लेकिन बँटवारा कराने वाले मुसलमान पाकिस्तान जाने के बजाय फि
हिन्दुस्तान में टिके रह गये। इन्साफ की बात तो यह है कि जो मुसल
मान यह कहते थे कि हम हिन्दुओं के साथ नहीं रह सकते और हमें
अलग देश की जरूरत है, तो वह इस बात का जवाब दें कि अब व
किस मुँह से हिन्दुस्तान में टिके हुए हैं। सबसे बुरी बात तो यह है कि
हिन्दुस्तान में रहते हुए भी वह इसे अपना देश नहीं मानते। हम इसे
कोई अक्ल की बात तो नहीं कह सकते। मैं हिन्दुओं की बेजा वकालत
नहीं करना चाहता, लेकिन इतना तो फिर मैं कहूँगा कि उन्होंने हमें
फिर भी बराबर का हक दिया है। मैंने यह भी मान लिया कि बहुत से
हिन्दू ऐसे हैं जो मुसलमानों से नफरत करते हैं, लेकिन अफसोस की बात
यह है कि मुसलमान भी अपनी गलत हरकतों से बाज नहीं आते। जो
अपने फायदे के लिए खुद तो इस मुल्क में टिके हुए हैं और अपने बाल-
बच्चों को पाकिस्तान में भेज रखा है। ऐसी हालत में हिन्दू हम पर शक
न करें तो क्या करें। अब आप अपनी मिशाल लीजिये। आप शकील
की शादी पाकिस्तान में करेंगे तो चाहे आपके मुँह पर कोई कुछ न कहे
लेकिन आपके अच्छे से अच्छे हिन्दू दोस्त भी आपको गद्दार समझेंगे
आपकी इस हरकत से दूसरे सैंकड़ों मुसलमानों की पोजीशन खराब हो
जायगी। इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि या तो मुसलमान अपने बनाये हुए

मुल्क पाकिस्तान में चले जायँ, या सच्चे दिल से अपने आपको हिन्दु-स्तानी समझते हुए भारत में ही रहें। यह तो पुरानी कहावत है कि दो नाव में पैर रखने वाला हमेशा डूबता है। मामू जान, मैं आपका बच्चा हूँ, मेरा कुछ कहना छोटा मुँह और बड़ी बात होगी। फिर भी मैं आपको यही राय दूँगा कि अगर आप एक सच्चे और बहादुर मुसलमान बन कर हिन्दुस्तान में नहीं रह सकते तो फिर डर और बुजदिली की जिन्दगी की बजाय आप पाकिस्तान ही चले जायँ। मेरा यह पक्का विश्वास है कि अगर हम सच्चे मुसलमान बनें और सच्चे हिन्दुस्तानी बनें तो हम उन हिन्दुओं का भी मुकाबला कर सकते हैं जो हमारा बुरा चाहते हैं।'

हमीद की बातों में ऐसा जादू था जो मामू जान के मन पर असर कर गया। वह जल्दी से कुर्सी से उठे और हमीद को गले से लगाते हुए बोले—'बेटा, तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं। मेरे ख्याल में जो कुछ तुमने कहा है उसमें बहुत बड़ी सचाई है। हम मुसलमानों को यह साबित कर देना चाहिए कि हम अपने मुल्क को किसी दूसरे से कम प्यार नहीं करते। चाहे हमें बहुत से हिन्दू झूठा कहें, धोखेबाज कहें, चार-सौ-बीस कहें। लेकिन हम अपने इरादे से पीछे नहीं हटेंगे। हम अपने रसूल के बनाये हुए मजहब को मानेंगे लेकिन इसके साथ ही एक सच्चे मुसलमान की तरह बिल्कुल निडर जिन्दगी बसर करेंगे। आज से तुम मेरे बेटे हुए, मैं अभी तुम्हारी मुमानी जान को बुला कर इस बात का एलान किये देता हूँ—'अजी बेगम साहिबा! अजी ओ शकीला की अम्मी! भई आप हमको छोड़कर कहाँ चली गईं?'

बेगम साहबा भागी-भागी आईं और कुछ घबराये हुए स्वर में बोलीं—'अजी इतना जोर से क्यों बोल रहे हैं? आखिर हुआ क्या है?'

बारह

रात का समय था। पूर्वी पाकिस्तान की सीमा के निकट एक छोटे से तम्बू में हमीद अपने दो साथियों के साथ बैठा था। रात आधी से ज्यादा बीत गई तो उसके साथी बातें करते-करते सो गये लेकिन हमीद धरती पर बिछे बिस्तर पर लेटा एक किताब पढ़ रहा था। सिरहाने की तरफ एक लैम्प जल रहा था। पुस्तक पढ़ने का तो बहाना ही था लेकिन वास्तव में हमीद इस इन्तजार में था कि उसके साथी सो जायँ तो शकीला की तस्वीर निकाल कर देखे। मौका पाकर उसने अपनी नोट-बुक में से एक फोटो निकाली और शकीला के मुस्कराते हुए चेहरे को देखने लगा।

फोटो देखते-देखते उसके विचार न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गये। पिछले कुछ महीनों से शकीला के लिए वह कितना परेशान रहा था। यद्यपि उसने मन में यह बात ठान रखी थी कि वह मामू जान से शकीला के हाथ के लिए पूरे जोर-शोर से बात-चीत करेगा लेकिन उसके दिल की गहराई में यह डर भी बैठा हुआ था कि अगर कहीं मामू जान अपनी जिद्द पर ही अड़े रहे तो क्या होगा। किस्मत उसके साथ थी इसलिए उसे सफलता प्राप्त हुई। अब फोटो सामने रख कर वह भविष्य में अपने

वैवाहिक जीवन की कल्पना करने लगा। न जाने उसके मन में क्या-क्या बातें आ रही थीं, क्या-क्या उमंगे उठ रही थीं। उसे इस बात की खुशी थी कि अब यह केवल काल्पनिक बातें नहीं रह गई थी अब तो सचमुच ही शकीला उसकी हो चुकी थी। अब संसार की कोई शक्ति उसे एक दूसरे से अलग नहीं कर सकती थी।

हमीद यही बातें सोच रहा था कि एकाएक ही कुछ शोर सुनाई दिया और साथ ही गोलियाँ चलने की आवाज भी आई।

हमीद एकाएक उठकर बैठ गया। यद्यपि उसके साथी दिन भर के थके-हारे सोये थे लेकिन वह भी एकदम चौंक कर उठ बैठे। उनमें से एक ने पूछा—'तुम सोये नहीं हमीद ? यह कैसी आवाजें थीं ?

हमीद—'तुम तो जानते ही हो कि सोने से पहले मुझे थोड़ा पढ़ने की आदत है, लेकिन अभी-अभी अजीब सा शोर सुनाई दिया और गोलियाँ चलने की आवाज भी आई। समझ में नहीं आता है कि यह कैसा शोर है और गोलियाँ क्यों चल रही हैं ?'

'पाकिस्तान की सीमा पास ही है, वही लोग गोलियाँ चला रहे होंगे। उनकी तो यह आदत ही है।'

'मैं जानता हूँ। लेकिन सीमा इतनी नजदीक नहीं है। गोलियाँ तो काफी निकट से ही चली हैं।'

अभी उसके साथी हमीद की बात का उत्तर भी नहीं दे पाये थे कि इतने में तम्बू से कुछ गज के फासले पर ही फिर गोलियाँ चलने की आवाजें सुनाई दीं। हमीद उछलकर बोला—'अब बातें करने का वक्त नहीं है, हमें फौरन तैयार हो जाना चाहिए।'

सबने बिजली की-सी तेजी के साथ वर्दियाँ पहनीं और अभी उनके हाथ अपनी राइफलों तक भी नहीं पहुँचे थे कि इतने में पन्द्रह-सोलह संगीनें

तम्बू के कपड़े को फाड़ कर अन्दर घुस आईं और कैम्प की मद्धिम रोशनी में भयंकर अन्दाज में चमकने लगीं।

हमीद और उसके साथी कुछ समझ नहीं पाये कि आखिर यह क्या तमाशा है; इतने में बाहर से किसी ने बड़े रोब भरे स्वर में कहा—'हैण्डश् अप ! खबरदार तुम्हारी तरफ से कोई गोली नहीं चलनी चाहिए। तुम सब घेरे में आ चुके हो। अगर तुम्हारी तरफ से ज़रा भी भागने की कोशिश हुई, या किसी ने जरा-सी भी कोई शरारत की तो सब लोगों को भूनकर रख दिया जायगा।'

हमीद और उसके साथी समझ गये कि इस समय वे वाकई मजबूर हैं। पद्रह-सोलह राइफलें अब भी उन पर निशाना ताने हुए थीं। वे तीनों दाँत पीसकर रह गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि जो हिन्दुस्तानी सिपाही गश्त कर रहे थे वे कहाँ चले गये। अगर यह पाकिस्तानी सिपाही हमारी सीमा में घुस आये थे तो हमारे सिपाहियों ने इन्हें रोकने की कोशिश क्यों नहीं की या कम से कम हमें इत्तला क्यों नहीं दे दी ?

वे तीनों इसी चक्कर में थे कि बाहर से फिर वही आवाज सुनाई दी—'तुममें से हर एक बारी-बारी तम्बू के बाहर आये। एक बार फिर खबरदार किया जाता है कि तुममें से किसी के पास पिस्तौल वगैरह हो तो वह उसे तम्बू में ही गिरा दे। वरना जरा सा शक होने पर गोली से उड़ा दिया जायगा। हाँ, यह भी याद रहे कि पहले सिर्फ एक आदमी बाहर आये, फिर जब बुलाया जाय तो दूसरा आदमी बाहर निकले।'

हमीद ने पहले बाहर जाना चाहा लेकिन उसके साथियों ने जबरदस्ती रोकते हुए कहा—'नहीं पहले हमको बाहर जाने दो।'

जब एक आदमी बाहर निकला तो बाकी दो आदमी कान लगा कर सुनते रहे। न तो गोली चली, न आपस में पकड़-धकड़ की आवाज सुनाई दी जिससे उन्होंने अन्दाजा लगाया कि उनके साथी को जान से नहीं मारा गया।

अन्त में हमीद बाहर निकला तो उसे अन्धेरे में बहुत से पाकिस्तानी फौजी खड़े दिखाई दिये। कुल मिलाकर वे पचास से कम न होंगे। हमीद तम्बू से निकल कर चार कदम ही आगे बढ़ा होगा कि पीछे से किसी ने एकदम उसके सिर पर बड़ा सा कपड़ा डाल दिया और फिर उस कपड़े के कोने खींचकर उसकी गर्दन के पीछे गिरह लगा दी गई तब किसी ने उसे बड़े जोर का धक्का देकर कठोर स्वर में कहा—'चलो आगे बढ़ो।'

हमीद लड़खड़ा गया, धक्का लगने से वह गिरते-गिरते बचा। जब वह सम्हल कर तेज कदम उठाने लगा तो पाकिस्तानियों ने उसे दौड़ने पर मजबूर किया। हमीद दौड़ने लगा। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, वह अन्धों की तरह सीधा दौड़ता चला जा रहा था कभी-कभी उसे ठोकर लग जाती तो वह गिर पड़ता, लेकिन फिर उसे दौड़ने पर मजबूर किया जाता। आखिर उन्हें रोका गया। उनके हाथ पीठ के पीछे ले जाकर एक रस्सी से बाँध दिये गये और फिर उसे नीचे गिरा कर उसी रस्सी से उसके टखने बाँध दिये गये। सारी रात वह उसी तरह गठरी बँधा पड़ा रहा। अब भी उसके सिर और चेहरे पर वह कपड़ा बँधा हुआ था। जब दिन चढ़ा तो कपड़े में से कुछ-कुछ रोशनी छन कर अन्दर आने लगी। लेकिन उसमें से कुछ देखना असम्भव था। हमीद को यह भी नहीं मालूम था कि उसके दूसरे साथी कहाँ हैं।

बहुत दिन चढ़ आने पर भी किसी ने उसकी खोज-खबर नहीं ली। आखिर ढाई-तीन बजे के करीब किसी ने आकर बड़े जोर से उसकी रानों पर फौजी बूट की ठोकर मारी और पूछा—'तुम्हारा नाम ?'

'हमीद ! कैप्टन हमीद।'

'हमीद ? क्या तुम मुसलमान हो ?'

'हाँ।'

'हम तो समझे थे कि तुम काफिर हो।'

हमीद चुप रहा।

फिर आवाज आई—'तुम मुसलमान होकर हिन्दुस्तान की फौज में नौकर हो ?'

'हाँ।'

'बड़ी अजीब बात है। हम तो समझते थे कि यह काफिर लोग मुसलमानों को फौज में नहीं रखते होंगे।'

'नहीं ! ऐसा नहीं है।'

'तुम्हारे दोनों साथी तो काफिर हैं।'

'वह हिन्दू हैं।'

थोड़ी देर मौन धारण रहा फिर आवाज आई—'इसकी सब रस्सियाँ खोल दो।'

जल्दी-जल्दी उसकी सब रस्सियाँ खोल दी गईं, चेहरे पर बँधा हुआ कपड़ा हटा दिया गया तो दिन के तेज प्रकाश में आँखें चुँधिया गईं। उसके पैर और बाजू इतना दर्द कर रहे थे कि वह उठ नहीं पाया और वहीं लेट गया।

जब वह पाँच-सात मिनट सुस्ता चुका तो एक पाकिस्तानी अफसर ने पास खड़े सिपाहियों को हुक्म दिया—'इसे तम्बू में ले चलो।'

सिपाही उसके बाजू थामकर एक बड़े से तम्बू में ले गये जिसमें एक फोल्डिंग कुर्सी रखी हुई थी ।

उसे उसी कुर्सी पर बैठा दिया गया । पहले उसे गर्म-गर्म कॉफी का प्याला दिया गया जिसे उसने धीरे-धीरे पी लिया फिर वह थकान के कारण अपने आगे रखी फोल्डिंग मेज पर दोनों बाजू रखकर सुस्ताने लगा । फिर हल्की सी ऊँघ लगी तो उसने बाजुओं पर अपना सिर टिका लिया और आँखें मूंद लीं ।

पन्द्रह-बीस मिनट के बाद एकाएक उसकी आँख खुली तो देखा कि उसके सामने चाय का ट्रे और कुछ खाने की चीजें रखी हैं । मुसलमान अफसर पास ही बैठा था, वह बोला—'लो कुछ खा लो और गर्म-गर्म चाय पी लो ।'

इतना कहकर अफसर ने चायदानी में से चाय उँड़ेल कर दो प्याले तैयार किये । हमीद ने उन सब चीजों पर एक नजर डाली और पूछा—'मेरे दोनों साथियों को आपने कुछ खिलाया-पिलाया ?'

'नहीं ।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि वह काफिर हैं ।'

'वह हैं कहाँ इस वक्त ?'

'जहन्नुम में ।'

हमीद को यह सुनकर बड़ा ताव आया, वह सब चीजों को पीछे हटाते हुए बोला—'मैं कुछ नहीं खाऊँ-पीऊँगा । मुझे मेरे साथियों के पास भेज दो ।'

यह सुनकर पाकिस्तानी अफसर की आँखें लाल हो गईं और उसने हमीद वाला चाय का गर्म प्याला उठाया और खींचकर उसके मुँह

पर दे मारा, और गाली देते हुए बोला—'हम तो तुझे मुसलमान भाई समझ कर तेरा इतना लिहाज कर रहे थे, और तू उन दो काफिरों के लिए मरा जा रहा है ?'

हमीद का चेहरा गर्म-गर्म चाय से जल उठा उसने बड़ी घृणा से पाकिस्तानी अफसर की ओर देखते हुए कहा—'हमारे मुल्क में चाहें कोई मुसलमान हो, चाहे हिन्दू, चाहे सिक्ख, चाहे ईसाई—वे सब हिन्दुस्तानी हैं।'

इस पर पाकिस्तानी अफसर जोर से गरजा—'अरे अब्दुल्ला, मुस्तफा ! चलो अन्दर आओ। हम तो इसे मुसलमान समझ कर इससे इतना अच्छा सलूक कर रहे थे, लेकिन यह तो काफिरों का साथी है। मारो इसको।'

जितने सिपाही अन्दर आये थे उन्होंने हमीद को मारना शुरू किया। बाज ने घूसे मारे, बाज ने बूटों की ठोकरें मारीं, बाज ने उसके मुँह पर थप्पड़ मारे, किसी ने पेटों में लात रसीद की, किसी ने सिर पर जूते मारे, किसी ने उसके मुँह पर थूका। तब उस अफसर ने हुक्म दिया कि इसे मोटे रस्से से उसी कुर्सी के साथ जकड़ दिया जाय।

इसी हालत में दिन ढल गया, रात हो गई। खाना तो क्या किसी ने पानी का एक घूंट तक नहीं दिया। जब सोने का समय आया तो उसे कुर्सी सहित तम्बू के बाहर फेंक दिया गया जहाँ दो पाकिस्तानी सिपाही राइफलें लिये पहरा दे रहे थे।

हमीद बेहोश सा पड़ा रहा। कभी-कभी कोई आने-जाने वाला सिपाही उसे जोर की ठोकर मार देता या अपनी राइफल की बट

खींच कर मारता तो वह हड़बड़ा कर देखने लगता। इस मार-पीट के कारण उसके शरीर का जोड़-जोड़ दर्द करने लगा था।

× × × ×

वह रात बड़ी ही मुसीबत की रात थी। साढ़े तीन बजे के लगभग हमीद के कानों में घर-घर की आवाज आई। उसने देखा कि उस बड़े तम्बू के आगे आकर एक जीप रुकी और उसमें से एक पाकिस्तानी कर्नल कुछ और अफसरों के साथ उतरा। तम्बू में एकदम ही हलचल मच गयी। अन्दर सोने वाले बाहर निकल आये और कर्नल दूसरे अफसरों के साथ तम्बू में घुस गया।

आधे घण्टे बाद कुछ सिपाही हमीद को उठाकर तम्बू के अन्दर ले गये जहाँ वही कर्नल एक मेज के पास कुर्सी पर बैठा था और उसके पीछे दूसरे अफसर खड़े थे। कर्नल ने इशारा किया तो हमीद की रस्सियाँ खोल दी गईं और उसे कर्नल के सामने खड़ा कर दिया गया। कर्नल साहब ने पल भर को उसे ऊपर से नीचे तक देखा और फिर मीठे स्वर में बोले—आपका नाम कैप्टन हमीद है ?'

'जी हाँ।'

'आप हिन्दुस्तान की फौज में अफसर हैं ?'

'जी हाँ।'

'आप पाकिस्तान की हद (सीमा) में क्यों घुसे ?'

'यह गलत है। हमको हमारी हद के अन्दर छापा मार कर पकड़ लिया गया है। आपके सिपाही गिनती में छै: सात गुना ज्यादा थे। यह आपकी ज्यादती है कि आपके सिपाहियों ने चोरों की तरह रात के अन्धेरे......।'

कर्नल साहब ने बीच में ही बात काट कर मुस्कराते हुए कहा—'छोड़िये इन बातों को। यह तो होता ही रहता है। आप गुस्सा थूक दीजिये क्योंकि हमें आपसे कुछ दोस्ताना बात-चीत करनी है।'

'दोस्ताना बात-चीत तभी हो सकती है जब आप मुझे और मेरे सब साथियों को हमारे मुल्क की हद के अन्दर पहुँचा दें।'

'हमें यह शर्त मन्जूर है, लेकिन कैप्टन हमीद हमारी भी एक शर्त है।'

'वह क्या?'

'आपको छोड़ दिया जायगा और इस ढंग से छोड़ा जायगा कि आपके साथी यही समझें कि आप अपनी होशियारी से भाग निकले हैं। लेकिन कैप्टन हमीद हिन्दुस्तानी फौज में पहुँच कर आपको हमारी जासूसी करनी होगी। हिन्दुस्तानी फौज के सब भेद आपको हमें बताने होंगे।'

यह सुन कर हमीद की आँखों से चिंगारियाँ निकलने लगीं। वह गुस्से में होंठ काट कर बोला—'मैं हिन्दुस्तानी फौज़ का अफसर हूँ और एक सच्चा मुसलमान हूँ इसलिए मैं यह गन्दी हरकतें कभी नहीं कर सकता।'

कर्नल ने अपनी जेब में से एक लड़की की फोटो निकाल कर हमीद को दिखाते हुए पूछा—'यह तस्वीर आपके जेब में से निकली थी। यह किसकी तस्वीर है?'

'यह मेरी महबूबा की तस्वीर है।'

'बहुत खूब तो कैप्टन साहब, अब अच्छी तरह सोच लीजिये कि एक तरफ मौत है और दूसरी तरफ आपकी इस लड़की से शादी और खुशी-भरी जिन्दगी, शर्त केवल यही है आप हमारे लिए जासूसी करें।'

हमीद ने बड़ी घृणा से कर्नल की तरफ देखा और बड़े गर्व से अपना

सिर पीछे की ओर फेरते हुए बोला—'मैं एक सच्चा मुसलमान हूँ जिस मुल्क में पैदा हुआ, जिसका अनाज खाया, उससे गद्दारी नहीं कर सकता। आपको मालूम होना चाहिए कि एक हिन्दुस्तानी सिपाही ऐसी खुशी पर लानत भेजता है और अपने मुल्क के लिए मौत का भी स्वागत करता है।"

इसके बाद काफी देर तक वे हमीद को फुसलाने की कोशिश करते रहे लेकिन हमीद ने झुकने से इन्कार कर दिया।

× × ×

रात का अंतिम पहर समाप्त होने को था। सारे पाकिस्तानी सिपाही जा चुके थे। सूर्योदय के पूर्व उषा की लाली में हमीद एक सूनसान चट्टान के पास सीना ताने पड़ा था, उसका सीना गोलियों से छलनी हो चुका था। खून से लथपथ एवं अपार वेदना से पीड़ित होने पर भी उसके चेहरे से सन्तोष एवं मातृभूमि के प्रति अटूट सेवा का भाव साफ-साफ झलक रहा था। सूरज की पहली किरन के फूटते ही दीपक के अन्तिम लौ की भाँति उसका चेहरा चमक उठा। वह कसमसाया, अचानक मुँह से अन्तिम बोल फूट पड़े—'भारत माता जिन्दाबाद'।

मुद्रक— कैलाशगिरि गोस्वामी गायत्री प्रेस, ७१६, दारागंज, इलाहाबाद।